हकीम लुक़मान
के
चमत्कारी
नुस्ख़े
पोशीदा बीमारियों से
निजात दिलाने में
'आबे-हयात' का
काम करने वाले
बेशक़ीमती नुस्ख़े
ऐसे नुस्ख़े
जिनका कोई
जोड़ नहीं

विषय-सूची

1

नब्ज़ की महत्ता

हकीम लुक़मान को नब्ज़ (नाड़ी) देखने में सर्वोपरि माना जाता था, क्योंकि नब्ज़ हिन्दुस्तानी औरतों के मर्ज़ को जानने का सबसे अच्छा तरीक़ा है। शर्म की चादर में लिपटी औरतों के शरीर के अंग-प्रत्यंग नहीं देखे जा सकते। सवालों के जवाब देने में भी वे मूक बन जाती हैं तथा संकोच करती हैं। यदि संकोच दूर भी हो जाए तो कई कारणों से सही जवाब मिलना मुश्किल ही है। नब्ज़ इन मुश्किलों को आसानी से दूर कर देती है। तजुर्बेकार हकीम नब्ज़ के ज़रिए ही मर्ज़ जान लेता है। औरतों की बीमारी में नब्ज़ अहम रोल अदा करती है। छोटे बच्चे जो बोल ही नहीं सकते, भला अपनी तकलीफ़ कैसे बयान कर सकते हैं। इसी तरह नासमझ-चंचल बालक अपने हाथ को स्थिर नहीं रख सकता। उसकी नब्ज़ उसके सो जाने पर देखनी चाहिए। लेकिन सोने के समय नब्ज़ के लक्षणों को रोग (मर्ज़) के लक्षण से अलग करके नतीजा निकालना पड़ेगा, जो कुछ मुश्किल काम है। जागता बालक मां का दूध पीते समय अक्सर अपने हाथ को स्थिर रखता है, उस वक़्त उसकी नब्ज़ देखना अच्छा रहता है।

नब्ज़ देखने का सही वक़्त

नाड़ी देखने का सर्वश्रेष्ठ समय प्रात:काल सूर्योदय से लेकर एक प्रहर तक है। यह इसलिए कि रात भर भरपूर नींद लेने (विश्राम करने) के कारण शरीर अपेक्षाकृत अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ जाता है। मल-मूत्र विसर्जन के कारण पेट खाली रहता है। साथ ही भूख-प्यास भी नहीं लगी होती। मानसिक भावनाएं भी शांत रहती हैं। चित्त एक प्रकार से धीर बना रहता है। यही नब्ज़ देखने का सही वक़्त है। मनुष्य के शरीर में किन-किन स्थानों द्वारा नाड़ी (नब्ज़) देखी जा सकती है, इसे अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है—

हाथ

शरीर के सभी अंगों के मुक़ाबले हाथ में मणिबंध के नीचे की जगह नब्ज़

देखने के लिए उत्तम है। औरत, मर्द, बच्चे तथा जवान—सभी बिना किसी संकोच के अपनी नब्ज़ दिखाने को तैयार हो जाते हैं। यहां से शरीर के सभी रोगों का पता
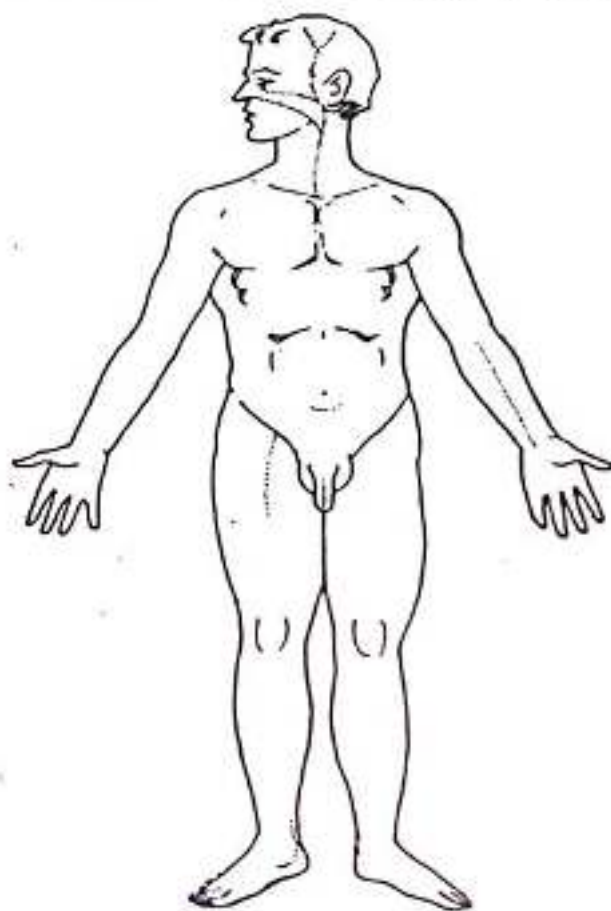
लगाया जा सकता है, जबकि अन्य जगहों से सिर्फ़ इने-गिने रोगों का ही ज्ञान प्राप्त होता है। इस जगह की नब्ज़ का संबंध सारे शरीर से होता है।

पैर

नब्ज़ देखने की दूसरी जगह एड़ी से थोड़ी ऊपर की ओर है। यहां से शरीर के सभी रोगों का ज्ञान नहीं हो सकता। यदि किसी के हाथ ही न हों अथवा विभिन्न कारणों से अन्य जगहों की नब्ज़ न मिले तो यहां की नब्ज़ देखने का विधान है। सभी जगहों की भांति इस जगह की नब्ज़ से भी मनुष्य के प्राण-संचरण का पता लगाया जा सकता है।

कंठ

नब्ज़ देखने की तीसरी जगह कंठमूल है। यहां की नब्ज़ सिर्फ़ दो उंगलियों से देखी जाती है। यहां से नब्ज़ के ज़रिए बुख़ार, प्यास, थकावट, मैथुन, सुस्ती, भय, शोक और क्रोध आदि का पता भली-भांति लगता है।

नाक

नब्ज़ देखने की चौथी जगह नासामूल या नासोपांत है। यहां भी दो उंगलियों का ही प्रयोग किया जाता है। जीवन-मरण, कामना, कंठ रोग, शिर की पीड़ाएं और कान में होने वाले वात रोगों का पता यहां की नब्ज़ देखकर लगाया जा सकता है।

आंख

नब्ज़ देखने की पांचवीं जगह आंख के निचले हिस्से के बाहरी कोण में कपोल-अस्थि के ऊपर है। बहुत ही माहिर हकीम, वैद्य या डॉक्टर यहां की नब्ज़ पकड़ सकता है। यहां से केवल प्राण-संचरण जानने के अलावा किसी अन्य बात की जानकारी पाने का उल्लेख हमें नहीं मिल सका है।

कान

नब्ज़ देखने की छठवीं जगह कान के मूल में है। यह जगह कान के नीचे की ओर पीछे की दिशा में स्थित गड्ढे में है। एक उंगली के स्पर्श से ही यहां की नब्ज़ देखी जाती है।

जुबान

नब्ज़ देखने की सातवीं जगह जुबान है। यहां नब्ज़ देखने का क्या अभिप्राय है, हमें ज्ञात नहीं हो सका है।

लिंग

नब्ज़ देखने की आठवीं जगह मर्द के लिंग और औरत के भग के पास स्थित होती है।

जांघ

नब्ज़ देखने की नौवीं जगह जांघ में है, जिसे चित्र में स्पष्ट किया गया है।

विशेष—नब्ज़ देखते समय यह ज़रूरी है कि नब्ज़ दिखाने वाले मरीज़ की शारीरिक और मानसिक स्थिति ठीक हो। उसके शरीर और मन में होने वाली गतियों में कोई बाधा या परिवर्तन न हो। शरीर का कोई अंग-प्रत्यंग किसी भी बाहरी कारण से दबावमुक्त हो। विशेषकर उसका हाथ जिसकी नब्ज़ देखी जा रही हो, कहीं से दबा या निराधार न लटक रहा हो। वह चंचल न हो। उसके अंग-प्रत्यंग या हाथ न हिलें। उसके मन में तत्काल किसी वजह से क्रोधादि उत्पन्न न हो। यदि वह सचेत हो तो ख़ुद नब्ज़ की जांच का अनुभव करे।

नाड़ी द्वारा रोगों का ज्ञान

नाड़ी गति की सही जानकारी रखने वाले से रोग बच नहीं सकते। नाड़ी गति का यूनानी चिकित्सा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां उसी की जानकारी दी जा रही है।

ज्वर

ज्वर (बुख़ार) की पूर्णावस्था में नब्ज़ (नाड़ी) मंथर गति से मेढक के समान उछलती हुई चलती है। सामान्य ज्वर में नब्ज़ उष्णता के साथ वेगवती होती है। वात ज्वर में नब्ज़ वक्र और चंचल होती है। यह सामान्य ज्वर की अपेक्षा स्पर्श में कुछ शीत होती है। सन्निपात ज्वर में नब्ज़ बहुत चंचल रहती है। यहां तक कि नब्ज़ की चाल गिनने में भी दिक़्क़त आती है। पित्त ज्वर में नब्ज़ सीधी, लंबी और तेज़ चलती है। श्लेष्म ज्वर में नब्ज़ मंद, सुस्थिर, शीत-स्पर्श युक्त और पिच्छिल चलती है।

साधारणतया मनुष्यों का ताप 98.5 डिग्री फारेनहाइट होता है। साधारण ताप से अधिक ताप होने पर नब्ज़ की चाल-संख्या से उनका अनुपात सामान्यत: 1 : 8-10 की दर से बढ़ता जाता है। यदि किसी रोगी का ताप 99.5 डिग्री फारेनहाइट हो तो उसकी नब्ज़ की चाल-संख्या 80 से 82 (साधारणावस्था में यह 72 थी) तक हो जाएगी। किन्तु मोतीझरा (टायफाइड), इन्फ्ल्यूएंजा, न्यूमोनिया और राजयक्ष्मा (तपेदिक या टी.बी.) आदि रोग में इस अनुपात से नब्ज़ की चाल नहीं बढ़ती। वहां इनका अनुपात 1 : 5 या इससे भी कम होता है, जबकि ताप बढ़ा रहता है।

भूत ज्वर में नब्ज़ वर्षा ऋतु में समुद्रगामिनी नदी के समान वेगवती होती है। इस ज्वर में नब्ज़ की रफ़्तार तीनों उंगलियों पर अधिक स्पष्ट प्रतीत होती है। काम ज्वर में नब्ज़ रुकावट लिए हुए चलती है। यह स्थिति किसी कारणवश कामेच्छा की पूर्ति न होने से होती है। क्रोध ज्वर में भी नब्ज़ रुकावट के साथ चलती है। यह स्थिति क्रोध का कोई परिणाम न होने से होती है। ज्वरावस्था में मैथुन करने से नब्ज़ कुछ क्षीण, धीमी और विकल हो जाती है। यह नब्ज़ मौत के समान भयानक होती है।

पाचन-संरथान की व्याधियां

आमाशय में पुष्टिकारक पदार्थ अधिक होने से नब्ज़ न्यून वक्रता और न्यून चंचलता से युक्त चलती है। उपवास या आहार की न्यूनता से नब्ज़ सर्प के अग्रभाग के समान कुटिल किंतु मंद गति से चलती है। मंदाग्नि में नब्ज़ बहुत सुस्त रफ़्तार से चलती है। अतिसार की अवस्था में नब्ज़ की गति हिमकाल की जलौका के समान मंद होती है। अतिसार में बहुत दस्त आने की दशा में नब्ज़ इतनी धीमी चलती है कि उसकी चाल का पता ही नहीं चल पाता। ग्रहणी रोग में नब्ज़ मरे हुए सर्प के समान मंद वेग की होती है। इसकी चाल में रह-रहकर तनिक उभार प्रतीत होते हैं।

कोष्ठबद्धता के कारण बवासीर में नब्ज़ कभी स्थिर (जड़), कभी वक्र, कभी मंद और कभी सीधी चलती है। अजीर्ण में नब्ज़ कठिन और सभी ओर (तीनों उंगलियों के स्पर्श-स्थल पर) जड़वत् प्रतीत होती है। आमदोष में नब्ज़ बहुत भारी चलती है। अजीर्ण दूर होने पर नब्ज़ तेज़ दौड़ती हुई चलती है। गुल्म में नब्ज़ कांपती हुई चलती है। शूल में नब्ज़ वक्र चलती है। यदि पैत्तिक शूल हो तो उसमें अत्यंत उष्णता प्रतीत होती है। आम द्वारा शूल हो तो वह पुष्ट अर्थात् स्थूल चलती है, किंतु प्रत्येक अवस्था में नब्ज़ में वक्रता अवश्य रहेगी। अम्लपित्त से नब्ज़ कुटिल, कंपनयुक्त और धीमी चलती है। प्लीहा रोग में नब्ज़ सूक्ष्म और सूखी-सी चलती है। जलोदर में नब्ज़ की गति बलहीन होती है।

श्वासवाही-संस्थान की व्याधियां

कास में नब्ज़ सूक्ष्म, स्थिर और धीमी चलती है। श्वास रोग में नब्ज़ तीव्र गति वाली होती है। श्वास की बढ़ी हुई अवस्था में, जब कफ हृदय को जकड़ लेता है तो नब्ज़ इतनी धीमी चलती है कि एकाएक मृत्यु कह देने की इच्छा होती है। ज्यों ही कफ हृदय से हटा या उसका शमन हुआ, त्यों ही नब्ज़ अच्छी तरह चलने लगती है। क्षय रोग में नब्ज़ हाथी की चाल से चलती है। एक पैर रखने के बाद दूसरा पैर रखने में मस्ती भरी गति कुछ देर में होती है। क्षय में कफ प्रधान दोष रहता है, परिणामतः नब्ज़ धीमी ही चलती है। ज्वर बढ़ जाने पर भी ताप के अनुपात में नब्ज़ की गति नहीं बढ़ती। धीमी गति का एक कारण इस रोग में धातुक्षीणता भी होती है।

मूत्रवाही एवं प्रजनन-संस्थान की व्याधियां

मूत्रकृच्छ्र में नब्ज़ गरिष्ठ चलती है तथा जड़वत् प्रतीत होती है। प्रमेह रोग में नब्ज़ जड़, सूक्ष्म, मृदु और तृप्त-सी चलती है। उपदंश में नब्ज़ कुटिल, विशीर्ण (फटी-सी), पिच्छिल (लसीली), विलुप्त और गंभीर चलती है। शूक दोष में नब्ज़ बहुत चंचल, निर्मल और वात-कफ की नब्ज़ के समान चलती है। शूक दोष में लिंगेन्द्रिय के ऊपर फुंसियां हो जाती हैं जो बहुत कष्ट देती हैं। यह बीमारी लिंग वृद्धिकर लेपादि के कारण हो जाती है।

प्रदर रोग दो प्रकार का होता है—एक श्वेत प्रदर और दूसरा रक्त प्रदर। दोनों में धातुक्षीणता होती है, इसलिए रोगिणी की नब्ज़ क्षीण-सी रहती है। रक्त प्रदर का दौरा भी होता है। दौरे से पहले नब्ज़ पित्त जैसी उछलती हुई एवं कुछ भारी होकर चलती है। रक्त निकल जाने पर यह क्षीण हो जाती है। साधारण अवस्था में नब्ज़ अपनी स्वाभाविक गति से चलती है, फिर भी नगण्य क्षीणता रहती है। श्वेत प्रदर की क्षीणता सर्वदा नब्ज़ (नाड़ी) में प्रतिभासित होती है।

सोम रोग में नाड़ी श्वेत प्रदर के समान चलती है। इसमें क्षीणता अत्यधिक रहती है। इस रोग में स्त्री के मूत्र मार्ग से गंदा-चिकना पानी बहुत ज्यादा आता है, किन्तु गर्भाशय में ग्रंथि नहीं होती।

वात-संस्थान की व्याधि

मूर्च्छा में नब्ज़ फैली और फटी हुई-सी चलती है। मिरगी के रोग में नब्ज़ क्षीण एवं तीव्र होती है। उन्माद में नब्ज़ दाहवत्, उष्ण और वक्र होती है।

वायु विकार

वायु विकार में नब्ज़ वक्र, उष्ण, बलवती, निर्मल और विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार चाल वाली होती है। धनुस्तंभ (इस रोग में शरीर धनुष की भांति हो जाता है) में नब्ज़ बलपूर्वक ऊपर एवं नीचे आती है। उसकी गति गंभीर रहती है। पक्षाघात में नब्ज़ उछलती हुई चलती है। जिह्वास्तंभ में नब्ज़ रस्सी के समान घूमती एवं भारी-सी चलती है। गृध्रसी में नब्ज़ स्थूल, मंद और वक्र होती है। पंगु की नब्ज़ बार-बार रुकती-सी महसूस होती है। पाददाह में रोगी लंगड़ा हो जाता है। इसमें रोगी की नब्ज़ की चाल बहुत तेज़ होती है। आमवात में नब्ज़ स्फुटित, गंभीर तथा कंपयुक्त होती है।

कुछ विशिष्ट रोग

शीत, पीत तथा दर्द में नब्ज़ समान चाल से चलती हैं। फीलपांव में नब्ज़ रुक-रुककर चलती है। कुष्ठ रोग में नब्ज़ कठिन, स्थिर एवं प्रवृत्तिहीन होती है। गलगण्ड (घेंघा) में नब्ज़ विभिन्न गति वाली, विचलित, कठिन और स्फुट चलती है। कंठमाला में नब्ज़ स्थूल चलती है।

नब्ज़ की विशेष जानकारी

यदि नब्ज़ घूमती हुई, तेज़, मोर के समान चाल वाली हो तथा उससे सूक्ष्मता की अनुभूति बराबर होती रहे तो रोग असाध्य (लाइलाज) जानना चाहिए। नब्ज़ कभी मंद (नाममात्र को उछाल वाली), कभी तेज़, कभी टूटी (पकड़ से छूटने वाली), कभी सूक्ष्म (मामूली चाल वाली) और कभी स्थूल-सी प्रतीत हो तो भी रोग को असाध्य समझना चाहिए।

यदि त्वचा के ऊपर ही नब्ज़ बहुत चंचल (अत्यधिक स्पंदन वाली जो विशेषतः तर्जनी उंगली पर प्रतीत होती है) एवं बहती हुई प्रतीत हो तो रोग असाध्य होता है। यदि नब्ज़ (त्वचा के बाहर दिखाई पड़ने वाली) अस्थिर, गंभीर (धीमी-धीमी चंचलता रहित), अति सूक्ष्म और वक्र (टेढ़ी) चाल वाली हो तो रोग असाध्य होता है। नब्ज़ कांपती हो, स्पंदन में तंतु के समान बहुत पतली प्रतीत हो और बार-बार उंगली से स्पर्श करती हो तो भी रोग असाध्य होता है।

रोगी महाताप (अंतर्दाह) से बेचैन हो किन्तु बाहर से ठंडा हो, इस पर नब्ज़

तप्त (उष्ण) प्रतीत हो और गति नाना प्रकार की हो तो उसकी मृत्यु हो जाती है। इसमें रोगी का हाथादि स्पर्श करने पर वह ठंडा प्रतीत होता है, किन्तु रोगी अंतर्दाह से परेशान होने की वजह से बार-बार पंखा झलने के लिए कहता है। इस हालत में पड़ा रोगी नहीं बचता।

यदि नासिका बहुत ठंडी हो, आंखें गीली-सी चिपचिपी हों तथा नब्ज़ अपनी जगह को छोड़ती जा रही हो तो ऐसा रोगी तुरंत मर जाने वाला होता है। नब्ज़ अपनी जगह से हटी हो, गायब हो या उसमें कोई गति न हो, हृदय में तीव्र ज्वाला हो; इस हालत में जब तक हृदय में ज्वाला होगी, रोगी जीवित रहेगा और जैसे ही यह ज्वाला ख़त्म होगी, रोगी मर जाएगा।

यदि नब्ज़ पकड़ में न आती हो तथा वेग समाप्त हो जाने के समान उसमें स्पंदन हो तो रोगी की मृत्यु एक दिन के भीतर ही हो जाती है। यदि नब्ज़ अंगुष्ठमूल (तर्जनी उंगली के स्पर्श-स्थल पर) में रुक-रुककर बिजली की गति के समान कड़कती हो तो भी रोगी का जीवन केवल एक दिन शेष समझना चाहिए। यदि पैर की नब्ज़ चंचल होकर थम जाए, तो रोगी की तीन दिन में मृत्यु हो जाएगी। पैर की नब्ज़ मंद-मंद चले तो रोगी चार-पांच दिन में ही मर जाता है।

यदि नब्ज़ बहुत तेज़ चले और थम जाए, फिर तेज़ चले और थम जाए, तो रोगी की मृत्यु सात दिन में हो जाती है, किन्तु शोथ रोग में यह बात लागू नहीं होती। शरीर ठंडा हो, निःश्वास नाक से न आकर मुख से आता हो और नब्ज़ में तीव्र दाह प्रतीत हो तो रोगी की ज़िन्दगी पन्द्रह दिन से ज़्यादा नहीं जाननी चाहिए।

इस तरह नब्ज़ के ज़रिए रोगी का रोग ही नहीं, उसकी ज़िन्दगी और मौत भी निश्चित की जाती थी। रोगी की नब्ज़ के आधार पर ही यह जान लिया जाता था कि वह जिस रोग से पीड़ित है, दवा से ठीक हो जाएगा या उसे जान से हाथ धोना पड़ेगा। हकीम लुक़मान को नब्ज़ देखने में महारथ हासिल थी। नब्ज़ के ज़रिए ही वह रोग का पता लगाकर दवा निश्चित करते थे। आज भी ऐसे अनेक हकीम और वैद्य हैं जो नब्ज़ देखने में माहिर हैं, किन्तु आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने उन्हें दर-किनार कर दिया है।

इस दौर में पूंजीपतियों का ऐसे हकीम और वैद्यों पर विश्वास नहीं रह गया है। हर कोई एलोपैथिक दवाओं के फेर में पड़ गया है, जबकि इन दवाओं से रोगों का समूल नाश नहीं होता, अपितु यह रोगी को हानि ही पहुंचाती हैं। चूंकि ये दवाएं फ़ौरन असर करती हैं, इसलिए इन पर लोगों का यक़ीन बहुत ज़्यादा रहता है।

विशेष—नब्ज़ यानी नाड़ी की गति हृदय पर निर्भर है। हृदय जितना अधिक बलवान होगा, नब्ज़ उतनी ही तेज़ रफ़्तार (गति) से चलती है। हृदय की विशालता पर भी नब्ज़ की चाल या रफ़्तार निर्भर करती है। उसके बड़ा होने पर नब्ज़ की चाल

कम होती है। यही वजह है कि सद्यः प्रसूत बालक की नब्ज़ की चाल प्रति मिनट सबसे ज़्यादा होती है। आदमियों के मुक़ाबले में औरतों की नब्ज़ की चाल (स्पंदन) 10 से ज़्यादा होती है। अगर गर्भ की धड़कन प्रति मिनट 120 हो तो लड़का और यदि 140 हो तो लड़की समझनी चाहिए। गर्भस्थ लड़कों का हृदय बड़ा होने पर गर्भ की धड़कन 120 भी हो सकती है, परंतु ऐसा बहुत कम होता है। स्वस्थावस्था में चलने, फिरने और व्यायाम आदि से नब्ज़ की चाल प्रति मिनट 8 कम हो जाती है। रक्तभार के न्यून रहने तथा मेहनत करने पर भी नब्ज़ की चाल कम बढ़ती है।

कई परिस्थितियों एवं रोगों में एक ही शब्द या एक ही तरह की नब्ज़ अथवा उनके लिए मिलते-जुलते शब्द प्राप्त होते हैं। उनके रहस्यों को समझना या समझाना बड़ा कठिन है। यह कठिनाई नब्ज़ की जांच में एक ही रोग (मर्ज़) का निर्णायक नाम लेने में बहुत बड़ी बाधा है। उन रहस्यों का भेदन कोई माहिर हकीम या वैद्य ही कर सकता है।

❑❑

2

उदर रोग

उदर से सम्बंधित इतने रोग हैं कि कभी-कभी तो उनकी गिनती करना ही मुश्किल हो जाता है। उदरशूल, अग्निमांद्य, अरुचि, क़ब्ज़, संग्रहणी, विशूचिका आदि इसके कुफल हैं। उदर रोग की उत्पत्ति अनेक कारणों से होती है। जब अनियमित, गरिष्ठ अथवा ठंडा या बासी भोजन करने से उचित मात्रा में पाचन नहीं होता तो उदर रोग की उत्पत्ति हो जाती है।

दर्दे कुलंज (उदरशूल)

उदरशूल पाचन-क्रिया की विकृति का सबसे पहला प्रतीक है। हकीम लुक़मान ने उदरशूल को एक रोग माना है, किन्तु आजकल कुछ चिकित्सक उदरशूल को एक सामान्य विकार समझकर अधिक ध्यान नहीं देते, जबकि उदरशूल के बाद ही पेट के अन्य रोगों की उत्पत्ति होती है। शरीर के दूसरे रोगों के कारण भी उदरशूल हो सकता है। अत्यधिक भोजन और परिश्रम बिल्कुल न करने से पाचन-क्रिया पूरी तरह संपन्न नहीं होती। ऐसे में उदर में भारीपन और शूल की उत्पत्ति होती है।

नुस्ख़े

❑ गावज़बान-पत्र, पुदीना सूखा, देशी पान, गुलाब के फूल—प्रत्येक 40 तोला, अजवायन, सतफ़ारसी, दारचीनी, लौंग, कुलंजन, सोंठ, छोटी इलायची—प्रत्येक 20 तोला, गुलाब अर्क़ 6 सेर, अर्क़ बेदमुश्क 3 सेर तथा बारिश का पानी 3 सेर लें। सभी द्रव्यों को यवकुट करके अर्क़ों में भिगोकर सुबह 7 सेर अर्क़ परिस्त्रु करें। इस अर्क़ में पुनः पूर्वोक्त द्रव्य उतने ही प्रमाण में रात भर भिगोकर दोबारा 7 सेर अर्क़ खींचें। पौने 2 तोला शर्बत नीबू की शिकंजी में मिलाकर सेवन करें। यह आमाशयशूल, उदरशूल तथा वातिक वेदनाओं में लाभकारी है।

❑ लौंग, किरफा, दारचीनी, कलमी तज, बालछड़, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, रूमी मस्तग़ी, बड़ी इलायची, हब्ब बलसां, केसर—प्रत्येक 15.75 माशा, सकमूनिया 10.50 माशा, छिली हुई और बीच से अस्थि दूर की हुई सफ़ेद निशोथ

इन सबको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं। जितना यह चूर्ण हो, उतनी ही चीनी और शहद एक भाग लेकर चाशनी तैयार करें। फिर उसमें चूर्ण मिलाकर जवारिश बनाएं। इसे 1.50 से 2.50 तोला उष्ण जल के साथ सेवन करें। यह दर्दे कुलंज के लिए बहुत लाभकारी है।

❑ असारून, सोंठ, किरमानी जीरा और पीपल—प्रत्येक 7 माशा, सनायमक्की 1 तोला 5.50 माशा, सुरंजान 2 तोला 11 माशा लें। सबको कूट-छानकर तिगुने श्वेत मधु (सफ़ेद शहद) में मिलाकर माजून बनाएं। 9 माशा माजून उष्ण जल से प्रयोग करें। यह उदरशूल के साथ-साथ आमवात में भी गुणकारी है।

❑ सकमूनिया 2 तोला आधा माशा, काली मिर्च, पीपल, सोंठ, किरमानी जीरा, सुदाब, तज (किरफा), कुलंजन—प्रत्येक 2 तोला 11 माशा, शुद्ध शहद 40 तोला 10 माशा लें। सभी द्रव्यों को पीसकर शहद में मिलाकर यथाविधि माजून बनाएं। 4.50 माशा माजून सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। यह मिनट भर में ही शूल का शमन करता है।

❑ बेल (मुरमक्की), सनायमक्की, एलुआ, पीली हरड़ का छिलका, सोंठ, रूमी शिंगरफ, लौंग, छोटी इलायची, केसर—प्रत्येक 10.50 माशा लें। सबको बारीक पीसकर गुलाब के अर्क़ में घोटकर चने के बराबर गोलियां बनाएं। 6 गोली से 10 गोली तक सौंफ़ के अर्क़ से खिलाएं। यह शरीर के अंदरूनी भागों से दोषों का उत्सर्ग करने के लिए प्रबल प्रभावकारी है। विशेषत: दर्दे कुलंज को नष्ट करने और वेदना शमन करने में परम लाभदायक है।

❑ पीली हरड़ का बकला, काबुली हरड़ का बकला, काली हरड़, भुल भुलाया हुआ, सकमूनिया, बनफ़शा के फूल—प्रत्येक 3 तोला 7 माशा, शुष्क धनिया, सफ़ेद निशोथ—प्रत्येक 7.50 माशा, बहेड़े का बकला, गुठली निकाला हुआ आंवला, बंसलोचन, गुलाब के फूल, नीलोफ़र के फूल—प्रत्येक 22.50 माशा, श्वेत चंदन, कतीरा—प्रत्येक 12.50 माशा लें। सबको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं और 11 तोला 3 माशा बादाम के तेल में जज़्ब करें। अब उन्नाब, लिसोढ़ा—प्रत्येक 100 नग तथा बनफ़शा के फूल 2 तोला 9 माशा को जल में क्वाथ करें। फिर छानकर औषध-द्रव्यों से डेढ़ गुना हरड़ के मुरब्बे के शीरे में मिलाकर अतरीफल तैयार करें। रात्रि में सोते समय 7 माशा यह अतरीफल 12 तोला गावज़बान के अर्क़ के साथ उपयोग करें। यह उदरशूल में विशेष लाभकारी है।

❑ इंद्रायन का गूदा और सौंफ़ 1-1 तोला लेकर पीस लें। इसे सुहाता गरम करके नाभि के नीचे अर्थात् पेड़ू पर लेप करें। यह दर्दे कुलंज का शमन करता है।

❑ लाहौरी नमक 8 तोला तथा ऊंटनी का दूध डेढ़ सेर लें। हांडी में दूध

रखकर उसमें नमक डालें और बहुत मंदी आग पर धीरे-धीरे पकाएं, जिससे उसमें उबाल न आए। जब यह मिश्रण गाढ़ा होने को हो, तो उसमें 6 माशा केसर पीसकर मिला दें और आग बुझा दें। हलवा के समान होने पर छाया में रखकर शुष्क करें तथा उसका चूर्ण बनाकर रख लें। 2 माशा चूर्ण ताज़े पानी के साथ उपयोग करें। यह उदरशूल के लिए लाभकारी है।

❑ अधकुटी लौंग 1.25 तोला और 10 छटांक गरम उबलता हुआ पानी लें। लौंग को पानी में डालकर 15 मिनट के लिए ढंककर रख दें। बाद में छानकर 1.50 से 2.50 तोला की मात्रा में प्रयोग करें। यह उत्तेजक, वातानुलोमक तथा उदरशूल में विशेष लाभकारी है।

❑ दारचीनी, लौंग सलीखा (तज), किरफा, सोंठ, नारमुश्क, बालछड़, छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज, रूमी मस्तग़ी, तेज़पत्ता, अजवायन, अजमोदा, अनीसून—प्रत्येक 6 माशा, चीता 4 माशा, केसर असली 4 माशा, मुशव्वी (सकमूनिया), साफ़ निशोथ का चूर्ण, विलायती अफ़्तीमून, हब्बुन्नील—प्रत्येक 8 माशा, बसफाइज फुस्तकी 5 माशा और सेंधा नमक 3 माशा लें। सबको बारीक कूट-छानकर दुगुनी मात्रा में चीनी तथा 1 भाग शहद की चाशनी बनाएं। फिर कुटे-छने चूर्ण को चाशनी में डालकर माजून तैयार करें। 6 माशा से 1 तोला तक माजून के सेवन से उदरशूल में लाभ होता है।

इसहाल (अतिसार)

इस रोग से प्राय: सभी परिचित हैं। बार-बार बहुत ज़्यादा परिमाण में पतले दस्त आने को ही 'अतिसार' कहते हैं। इस बीमारी से निजात पाने के लिए हकीम लुक़मान के ज़माने के कुछ पुराने नुस्ख़ों का उल्लेख किया जा रहा है।

नुस्ख़े

❑ आंवला (गुठली निकाला हुआ) 5 तोला को कूटकर चौबीस घंटों के लिए गाय के दूध में भिगोकर रखें। फिर दूध से निकालकर, धोकर पानी में उबालें, जिससे वो अच्छी तरह गल जाए। इसके बाद पिस्ते का बाहरी छिलका 5 माशा, बंसलोचन, बिजोरे का छिलका, सफ़ेद चंदन—प्रत्येक 1 तोला, मस्तग़ी, क्षुद्रैला के बीज—प्रत्येक 6 माशा लें। इनको बारीक कूटकर कपड़छन करें। अब 2 सेर चीनी की चाशनी करके सबको उसमें मिला दें। इसे 7 माशा की मात्रा में 12 तोले गावज़बान अर्क़ के साथ सेवन करें। यह आमाशय को बल प्रदान कर, अतिसार में लाभ करता है।

❑ बालछड़, क्षुद्रैला, तज कलमी, दारचीनी, कुलंजन, लौंग, नागरमोथा,

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, कड़ुआकुट, ऊदबलसां, असारून, बिलायती मेहंदी के बीज (हब्बुलआस), मीठा चिरायता और केसर—प्रत्येक 7 माशा, रूमी मस्तगी 1 तोला 5.50 माशा, चीनी समस्त द्रव्यों के सम प्रमाण और शहद सभी द्रव्यों के प्रमाण से दोगुना लें। पहले चीनी और शहद की चाशनी तैयार करें। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण बनाकर चाशनी में अच्छी तरह मिला दें। इसे 7 माशा की मात्रा में 12 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ भोजनोत्तर सेवन करें। यह अतिसार नाशक है। साथ ही यह आमाशय और अन्त्र को बलवान बनाता है। यह रुचिवर्द्धक है तथा क़ब्ज़ दूर कर वायु को नष्ट करता है। इससे आहार का पाचन भी उचित रूप में हो जाता है।

❑ पोस्त सुमाक, हब्बुलआस, भृष्ट बारतंग, पिस्ते के बाहरी छिलके, खट्टे और मीठे दोनों अनारों का छिलका, जलाया हुआ प्रवालमूल, जलाई हुई छुहारे की गुठली, कहरुवा शमई—प्रत्येक 14 माशा, खरगोश का पनीरमाया, हरा माजू, छोटी माई—प्रत्येक 9 माशा, जलाया हुआ पोस्त संगदानामुर्ग़, जलाई हुई आम की गुठली की गिरी—प्रत्येक 3 तोला, जामुन की गुठली की गिरी 2 तोला तथा सिरके में तर करके भुने हुए अंगूर के बीज 4.50 तोला लें। सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं और मीठे बिही के रस में घोटकर चने के बराबर गोलियां बना लें। 6 से 8 गोली ताजा पानी के साथ खाएं। यह पुराने अतिसार के लिए गुणकारी है।

❑ फालसा का रस 30 तोला और चीनी 1.25 सेर मिलाकर चाशनी तैयार करें। इसे 4 तोले की मात्रा में ताजा पानी से इस्तेमाल करें। यह अतिसार नाशक है।

❑ अंजबार जड़ की छाल, बंसलोचन, मुक्ता एवं तीवराज—प्रत्येक 3.50 माशा लेकर बारीक खरल करें। फिर गिलमख़तूम, दम्मुलअख्वैन, कतीरा—प्रत्येक 2.25 माशा को कूटकर चूर्ण कर लें। बिलायती सेब का रस, बिलायती बिही का रस (शर्बत), अंजबार और हब्बुल आस का शर्बत द्वारा उपरोक्त चूर्ण की तौल का आधा लेकर, चाशनी बनाएं। फिर शेष द्रव्यों को छानकर चाशनी में अच्छी तरह मिला दें। इसे खशखश और कुलफा के बीज का तैयार किया शर्बत 5 माशा के साथ उपयोग में लाएं। यह अतिसार और रक्तातिसार के लिए बहुत गुणकारी है।

❑ कजमाजज (झाऊ), इस्पिस्त के बीज, अकाकिया, गुलाब के फूल, करस्ना, हब्बुलआस, अहिफेन, कतीरा—प्रत्येक 4 माशा लें। इनको बारीक पीस-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। फिर आवश्यकतानुसार बबूल के गोंद के लुआब में मूंग के बराबर गोलियां बना लें। 2 गोली ताजा पानी से दिन में 2-3 बार लें। इसके सेवन से अतिसार का शमन हो जाता है।

❑ मीठे अनार का छिलका, हब्बुलआस (बिलायती मेहंदी के बीज)—प्रत्येक 1 तोला, सफ़ेद चंदन का बुरादा 9 माशा, अंजबार की जड़ 2 तोला लें।

सबको जल में उबाल-छानकर रखें और कीकर के पत्तों का 4 तोला रस उसमें मिलाएं। फिर आंच पर रखकर उसमें 250 ग्राम मिश्री डाल दें। उबल जाने पर उतारकर रख लें। 1 तोला शर्बत को 5 तोला गावज़बान के अर्क़ के साथ उपयोग करें। यह अतिसार में परम लाभकारी है। रक्तस्राव को बंद करता है और रक्तातिसार में लाभ पहुंचाता है।

संग्रहणी

संग्रहणी के बारे में कुछ ज्यादा न लिखकर केवल यह बताना काफ़ी होगा कि अतिसार की पुरानी अवस्था 'संग्रहणी' कहलाती है।

नुस्ख़े

❑ काली मिर्च, पीपल, हरड़ का बकला, बहेड़े का छिलका, सूखा आंवला, आमलासार, तज, पत्रज, क्षुद्रैला, सतुवा सोंठ, गंधक, शुद्ध पारद, अजमोदा, सौंफ़, बादरंग, दारुहल्दी, बेलगिरी, पोस्त, सतावर, सफ़ेद जीरा, लौंग, सूखा धनिया, गज पीपल, छिली हुई मुलैठी, कंजा की गिरी, इंद्राणी लवण (नमक), लाहौरी नमक, काला नमक, मनिहारी नमक, जवाखार, गुलाबी सज्जी—प्रत्येक 3 माशा और भांग की पत्ती 2 तोला लें। इन सबको कूट-पीसकर 80 पुड़िया बनाएं। सुबह-शाम एक-एक पुड़िया ताज़े पानी से लें। संग्रहणी में अवश्य लाभ होगा।

❑ शुद्ध आमलासार, गंधक, काली मिर्च और शुद्ध पारद—प्रत्येक 1 तोला, शंख एवं कपर्दिका भस्म 2-2 तोला लें। इन सबको काग़ज़ी नीबू के रस में घोटकर एक-एक रत्ती की गोलियां बनाएं। 1 गोली छाछ के साथ सुबह नाश्ते के बाद खाएं। यह भी संग्रहणी में लाभ पहुंचाती है।

पेचिश (प्रवाहिका)

पेचिश की वजह से रोगी के पेट में मरोड़ से उठते रहते हैं, उसे बहुत तकलीफ़ होती है तथा बार-बार मल-त्याग के लिए जाना पड़ता है। इस वजह से रोगी बहुत कमज़ोरी महसूस करने लगता है। उसे भूख-प्यास भी अधिक लगती है। यदि इसका इलाज फ़ौरन न किया जाए, तो मल के साथ आंव-रक्त भी आने लगता है। इस दशा में रोगी की हालत शोचनीय हो जाती है। उसमें चलने-फिरने की ताक़त भी नहीं रहती।

नुस्ख़े

❑ 1 तोला काली हरड़ पीसकर गाय के घी में भून लें और समभाग में चीनी

मिलाकर, पीस-छानकर चूर्ण बनाकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर 7 माशा चूर्ण का उपयोग 6 तोला साठी चावल के धोवन के साथ करें। यह हर तरह की पेचिश में लाभ पहुंचाता है।

❑ खील किया हुआ सुहागा, रूमी मस्तग़ी, शिंगरफ, अहिफेन—प्रत्येक 2 माशा लें। इन्हें अच्छी तरह खरल करके, पानी का छींटा देकर, चने के बराबर गोलियां बना लें। एक-एक गोली सुबह-शाम जल के साथ सेवन कराएं। यह पेचिश और अर्शजन्य अतिसार में लाभकारी है।

❑ असली मस्तग़ी, जदवार, कच्ची अफ़ीम, मस्तग़ी, शिंगरफ—प्रत्येक 1 तोला तथा खील किया सुहागा 3 माशा लें। सबको बारीक पीसकर साबुत उड़द की भांति गोलियां बना लें। गोलियां बनाने के लिए एरण्ड के तेल का इस्तेमाल करें। एक-एक गोली सुबह-शाम ताज़े पानी से लें। पेचिश में यह बहुत लाभ पहुंचाती है।

❑ काली हरड़, अलसी, गंदना के बीज—प्रत्येक 9 माशा, मस्तग़ी 4.50 माशा, तुख़्म जिरजीर 5 तोला 10 माशा और किरमानी जीरा (कुरूया) 1 तोला 10 माशा लें। तुख़्म जिरजीर के अलावा सभी को कूट-छानकर, तारामीरा बीज मिलाकर चूर्ण कर लें। 3 माशा इस चूर्ण को गाय के घी में मिलाकर खतमी जड़ का लुआब 7 माशा के साथ सुबह-शाम उपयोग करें। यह पेचिश, मरोड़, अजीर्ण व मंदाग्नि के लिए बहुत फ़ायदेमंद है।

❑ गुठली निकाला हुआ आंवला, कपूर, हरा माजू, पीली हरड़ का छिलका—प्रत्येक 1 तोला और केसर 6 माशा लेकर गुलाब के अर्क़ में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना लें। रोज़ाना एक नियत समय पर 1 गोली ताज़ा पानी से खाएं। यह हर तरह की पेचिश के लिए फ़ायदेमंद है।

अफारा (अनाह)

पेट में वायु भरी रहना या पेट फूलना अफारा की निशानी है अर्थात् पेट (आमाशय) में इकट्ठी वायु जब बाहर न निकले तो इस रोग की उत्पत्ति होती है। ऐसे में शौच नहीं होता तथा पेट में वायु भरने लगती है। दूषित आहारों से अग्निमांद्य हो जाने पर जब पाचन-क्रिया संतुलित रूप से नहीं होती तो पेट में वायु इकट्ठी होकर अफारा का रूप धारण कर लेती है।

नुस्ख़े

❑ गुलाब के ताज़ा फूल, दारचीनी, छोटी इलायची के बीज, तुख़्म कासनी, रूमी मस्तग़ी, जराबंद तवील, रूमी बादियान—प्रत्येक 1 तोला, रेवंद खताई 6 माशा

और खाने का सोडा 3 तोला लें। सबको अलग-अलग कूट-छानकर आपस में मिला लें। सुबह-शाम 6-6 माशा की मात्रा में यह चूर्ण 12 तोला शर्बत अफसंतीन व सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। इससे आहार का पाचन सुरुचिपूर्ण ढंग से हो जाता है तथा अफारा नष्ट होता है।

❑ नौसादर, सोंठ, काली मिर्च और सूखा पुदीना—प्रत्येक 5.25 तोला, अजवायन, तुख़्म जिरजीर, बालछड़—प्रत्येक 2 तोला 7.50 माशा, सांभर नमक आधा सेर, सफ़ेद मिर्च 7 तोला एवं अजमोदा 3 तोला 11.25 माशा लें। इनको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। 2 माशा तक यह चूर्ण सुबह ताज़े पानी के साथ लें। यह प्रबल वायुनाशक है।

❑ किरफा, लौंग, रूमी मस्तग़ी, बालछड़, दारचीनी, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, जावित्री, केसर, जायफल—प्रत्येक 7 माशा, नागकेसर, अगर, पोस्त उतरुज—प्रत्येक 5.50 माशा, काली मिर्च, सोंठ, पीपल—प्रत्येक 3.50 माशा, नागरमोथा 1.50 माशा, कस्तूरी 1 माशा, चीनी आधा सेर और शहद आधा सेर लें। चीनी और शहद को छोड़कर सबको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं। फिर चीनी-शहद की चाशनी बनाकर, चूर्ण को इसमें अच्छी तरह मिला दें। 7 माशा नित्य जल के साथ सेवन करने से पाचन सुधरता है तथा वायु खारिज होकर अफारा मिट जाता है।

❑ काली मिर्च, नौसादर, हुरमुची—प्रत्येक 1 तोला, धतूर बीज 6 माशा और मंडूर भस्म 3 माशा लें। इनको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। 4 चावल चूर्ण ताज़ा जल, सौंफ़ का अर्क़ 6 तोला या गुलाब का अर्क़ 6 तोला तथा शिकंजी 1 तोला के साथ सुबह-शाम सेवन करें। यह अफारे को तो मिटाता ही है, भूख न लगने के दोष भी दूर करता है।

❑ सूखा पुदीना, काला-सफ़ेद जीरा, पिस्ते का बाहरी छिलका, सौंफ़, काली मिर्च, अजवायन, कलमी दारचीनी, सेंधा नमक, मनिहारी नमक, काला नमक, तंत्रीक, गेरू—प्रत्येक 2 माशा, पीपल तथा सोंचर नमक—प्रत्येक 4 तोला लें। इन सबको बारीक पीसकर, नीबू का रस और जहरमोहरा खताई—प्रत्येक 1 रत्ती मिलाकर कांच की शीशी में रखें। इसे अफारा में एक-एक माशा सुबह-शाम सेवन कराएं। उदरशूल या हैजा आदि में 2-2 घंटे के अंतर से दें।

❑ नौसादर को केले की जड़ में खरल करके जौहर (सत्त्व) उड़ा लें। इस तरह उड़ाया हुआ यह जौहर 3 तोला, पुदीने का रस 6 माशा, जवाखार असली, मूलीखार, अपामार्ग का क्षार (एसिड), क्षुद्रा-खटाई का क्षार—प्रत्येक 1 तोला, कलमी शोरा, बड़ी इलायची के बीज, लाहौरी नमक—प्रत्येक 3 तोला और शुद्ध हुरमुची 5 तोला लें। इन सबको अलग-अलग कूटकर चूर्ण बनाएं और आपस में

मिला लें। आधा माशा यह चूर्ण सौंफ़ के अर्क़ या सादा पानी से भोजन के बाद लें। यह अफारा में बहुत लाभकारी है।

क़ब्ज़ (मलावष्टंभ)

अनियमित, असंतुलित एवं प्रकृति विरुद्ध आहार लेने से शरीर को पर्याप्त मात्रा में चिकनाई (वसा) नहीं मिल पाती, जिसकी वजह से मल शुष्क हो जाता है। यह शुष्क मल सख़्त होकर आसानी से नहीं निकल पाता तथा उदर में रहकर सड़न पैदा करता है। शुष्क मल के रुकने का रोग ही 'क़ब्ज़' कहलाता है।

नुस्ख़े

❑ काली हरड़, गुठली निकाला हुआ आंवला, श्वेत त्रिवृता, बहेड़ा तथा काबुली हरड़ का बकला—प्रत्येक 1.50 तोला, रेवंद चीनी, सौंफ़, रूमी मस्तग़ी, उस्तूखुदूस—प्रत्येक 3.50 तोला एवं सकमूनिया विलायती 11.25 तोला लें। सबको कूट-कपड़छन कर, छने चूर्ण को बादाम के तेल में मर्दन करके तीन गुना शहद के साथ अतरीफल बनाएं। 1 माशा नित्य सेवन करें। इससे क़ब्ज़ दूर हो जाता है। क़ब्ज़ करने वाले खानपान से बचें।

❑ गावज़बान 6 तोला, बनफ़शा के फूल 8.25 तोला, बिहीदाना 4 तोला, गुलाब के फूल 8.25 तोला, इसबगोल 10 तोला, लिसोढ़ा 5 तोला तथा तरंजबीन आधा सेर लें। तरंजबीन के अलावा सभी को पानी में उबालें और छानकर तरंजबीन मिलाकर शर्बत तैयार करें। रोज़ाना 1.50 तोला यह शर्बत 5 तोला गावज़बान अर्क़ के साथ सेवन करें और क़ब्ज़ को अपने से दूर भगाएं।

❑ जमालगोटे के बीज की गिरी 3 माशा, एरण्ड के बीज की गिरी (रेंडी की गुद्दी) 6 माशा, मीठे बादाम की गिरी 6 माशा और मिश्री 1 तोला लें। सबको बारीक पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लें। 1-2 गोली दूध के साथ रात को सोते समय सेवन करें। इससे सवेरे दस्त खुलकर आता है तथा क़ब्ज़ की शिकायत जाती रहती है।

❑ 1 भाग सौंफ़ और 10 भाग सनायमक्की—दोनों को कूटकर 60 भाग पानी में 24 घंटों के लिए भिगो दें। इसके बाद उसे छानकर आग पर रखें। जब यह आधा रह जाए तो इसका 10 भाग शीरखिस्त इसमें घोल दें। ठंडा हो जाने पर 5 भाग सुरासार 90 शक्ति का मिलाकर रख दें। 24 घंटे के बाद उसे निथारकर, उतने ही वज़न की उसमें चीनी मिलाकर आग पर अच्छी तरह उबाल लें। ठंडा होने पर कांच के किसी पात्र में रख लें। रोगी की अवस्था के अनुसार इसे 1 से 3 तोले तक पानी से सेवन कराएं। यह बालक तथा कोमल प्रकृति के लोगों का क़ब्ज़ दूर करने में अद्वितीय है।

❑ सिब्रजर्द, उसारारेबंद—प्रत्येक 6 माशा और रूमी मस्तग़ी 1 तोला लें। सबको बारीक पीसकर, गुलाब के अर्क़ में घोटकर, साबुत मूंग के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। 2 से 8 गोली तक (आयु के अनुसार) गरम दूध या सौंफ़ के अर्क़ के साथ खाएं। इसके सेवन से शीघ्र ही क़ब्ज़ का शमन हो जाता है।

❑ शुद्ध जमालगोटे की गिरी 20 अदद, सफ़ेद निशोथ, रेवंद खताई, काला दाना—प्रत्येक 1 तोला लें। इनको कूट-छानकर बिहीदाने का लुआब 6 माशा में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना लें। रोज़ 2 गोली ताज़ा पानी से खिलाएं। इससे क़ब्ज़ आसानी से चला जाता है।

❑ भुना हुआ सुहागा 9 माशा, खुरासानी अजवायन 8.75 माशा, काली मिर्च 3.50 तोला और सकोतरी एलुआ 4 तोला 8 माशा लें। इन सबको कूट-पीसकर, कपड़छन कर घीकुंआर के रस में घोटकर चने के बराकर गोलियां बनाएं। 2 गोली रात को सोते समय पानी से खाएं। यह दीपन, पाचन और क्षुधाजनक है तथा क़ब्ज़ को दूर करता है।

❑ सफ़ेद निशोथ और सकमूनिया—प्रत्येक 2 तोला, पीपल, काली मिर्च, सोंठ—प्रत्येक 9 माशा, जावित्री 6 माशा तथा बारीक खांड 7 तोला लें। सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं और तिगुने झाग उतरे शहद में मिलाकर माजून बना लें। 1 से 3 माशा तक यह माजून गरम दूध के साथ सेवन करें। यह क़ब्ज़ निवारण के लिए अनुपम है।

❑ सूखा पुदीना, पिस्ते का बाहरी छिलका, पोस्त तुरंज और पीली हरड़ का बकला—प्रत्येक 4.50 माशा, गुलाब के फूल 10.50 माशा, पोस्त संगदाने मुर्ग़, बंसलोचन—प्रत्येक 9 माशा, श्वेत बहमन, लाल बहमन, सफ़ेद चंदन, लाल चंदन, भुना हुआ धनिया, सातर और हब्बुलआस—प्रत्येक 7 माशा लें। सबको कूट-छानकर तीन गुना शहद में मिलाकर माजून तैयार करें। 7 माशा माजून सौंफ़ का अर्क़ 9 तोला और मकोय का अर्क़ 6 तोला के साथ सेवन करें। यह क़ब्ज़ को शीघ्र दूर करता है और आहार पचाता है। इससे रुकी हुई वायु जल्दी ख़ारिज हो जाती है।

❑ सौंफ़ 3.50 माशा, छिली हुई मुलेठी 9.50 माशा, शुद्ध गंधक 7 माशा, क्रीम 5 माशा, चीनी 2.50 तोला, सनायमक्की 7 माशा और अनीसून 3.50 माशा लें। सबको अलग-अलग पीसकर मिला लें। रात को सोने से पहले 2 चम्मच यह चूर्ण दूध के साथ सेवन करें। यह क़ब्ज़ नाशक है।

❑ मुलेठी का चूर्ण 5 तोला, कुटी-छनी सनायमक्की 5 तोला, पिसी हुई सौंफ़ 2.50 तोला और शर्करा 15 तोला लें। सबको अच्छी तरह मिलाकर रख लें। 3.50 माशा इस चूर्ण को जल के साथ नित्य सेवन करें। इसका उपयोग बवासीर में क़ब्ज़ निवारण के लिए किया जाता है।

❑ सिब्रजर्द, सकमूनिया, दारचीनी, उसारारेबंद, नौसादर—प्रत्येक 1 तोला, रूमी मस्तग़ी 6 माशा और बबूल का गोंद 2 माशा लें। सबको बारीक करके बूंद-बूंद गुलाब का अर्क़ डालकर खरल करें। जब गोली बनने योग्य हो जाए तो चने के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। 1 या 2 गोली रात में सोने से पहले पानी से खा लें। क़ब्ज़ में शर्तिया फ़ायदा होगा।

अग्निमांद्य एवं अजीर्ण

भोजन पचने की क्रिया में गड़बड़ी 'अग्निमांद्य' कहलाती है। पेट फूलना, क़ब्ज़, पतले दस्त आना, डकार आना, मिचली या कै, छाती या गले में जलन, पेट में भार, मुंह से पानी निकलना, भोजन के बाद पेट में दर्द आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। अजीर्ण रहने से रक्त का निर्माण नहीं होता, जिसकी वजह से रोगी बहुत कमज़ोर हो जाता है। अधिक समय तक क़ब्ज़ रहने से अजीर्ण की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसमें रोगी को भूख नहीं लगती, खट्टी डकारें आती रहती हैं तथा वमन की इच्छा बनी रहती है। पेट में दर्द होता है, घबराहट और बेचैनी होने लगती है। इसमें अफारा भी हो जाता है। प्यास, अरुचि, कमर में जकड़न और सिर में दर्द इस रोग के विशेष लक्षण हैं।

नुस्ख़े

❑ किरमानी जीरा, जंगली गाजर के बीज, ऊदबलसां, तज, कालीजीरी, इजखिर का गोफा, अजमोदा—प्रत्येक 3.50 माशा, बच, केसर—प्रत्येक 7 माशा, मुरमक्की 10.50 माशा, हब्बुलगार 10 अदद, कड़वाकुट; सफ़ेद मिर्च एवं पीपल—प्रत्येक 1.75 माशा लें। इन सबको महीन कूटकर, कपड़छन करें। इस चूर्ण में तीन गुना शहद मिलाएं। इसे 12.50 माशा की मात्रा में 12 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। यह अग्निमांद्य एवं अजीर्ण के साथ-साथ जलोदर में भी लाभकारी है।

❑ गंधक, आमलासार, जौहर नौसादर—प्रत्येक 1 तोला लेकर 5 तोला मूली के रस तथा 5 तोला सिरका में डालकर खरल करें। जब शुष्क हो जाए, तो सावधानी के साथ शीशी में रखें। इसे 1 रत्ती की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करें। यह अग्निमांद्य एवं अजीर्ण निवारण करने के साथ उदर सम्बंधी प्रत्येक रोग में लाभप्रद है।

❑ छोटी इलायची, पोस्त उतरुज (बिरोजे का छिलका), लौंग, रूमी मस्तग़ी, दारचीनी, बिल्लीलोटन, सफ़ेद बंसलोचन, बालछड़—प्रत्येक 3.50 माशा, अगर 1 तोला 5.50 माशा, खट्टे सेब का सत 18.50 तोला, गुलाब अर्क़ 2.50 तोला, मिश्री 26 तोला, शहद 26 तोला और नीबू का रस 33.75 तोला लें। पहले शहद और मिश्री की चाशनी तैयार करें। फिर नीबू के रस के अलावा सभी औषधियों को कूट-

पीस और छानकर चाशनी में मिलाएं। ऊपर से नीबू का रस डालकर मंदी आंच पर रखें। जब सब मिश्रण एकाकार हो जाए, तो उतारकर ठंडा करें। 7 माशा की मात्रा में यह जुवारिश 2 तोला सादा चीनी के शर्बत और 12 तोला गावज़बान अर्क़ के साथ खाएं। यह अग्निमांद्य एवं अजीर्ण के लिए परम गुणकारी और शीघ्र प्रभावकारी है।

❑ सिरका में शुद्ध किया हुआ विलायती काला जीरा (किरमानी जीरा) 14 तोला 7 माशा, सुदाब के पत्ते और सोंठ—प्रत्येक 5 तोला 10 माशा, बूअरमनी 1 तोला 5.50 माशा, काली मिर्च 4 तोला 4.50 माशा लें। इन सभी द्रव्यों के भार जितनी मिश्री तथा मिश्री से दुगुना शहद लें। सबको कूट-छानकर, मिश्री और शहद की चाशनी में मिलाएं। जुवारिश तैयार है। 7 माशा यह जुवारिश 12 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। यह अजीर्ण को दूर करता है। उदर-संबंधी अनेक विकारों का शमन भी इससे सहज ही हो जाता है।

❑ देशी अजवायन, शुद्ध किरमानी जीरा, रूमी मस्तग़ी, कबाबचीनी, काली मिर्च, जीरा सब्ज़, गुलाब के फूल, बिजोरे का छिलका, कासनी के बीज, सौंफ़, कुंदुर, शुष्क धनिया, बिल्लीलोटन, गावज़बान के फूल—प्रत्येक 3.75 तोला, शहद और चीनी—प्रत्येक 11.25 तोला लें। पहले चीनी एवं शहद की चाशनी तैयार करें। फिर शेष सभी चीजों को कूट-छानकर चाशनी में मिलाएं। अच्छी तरह मिलाने के बाद इसे किसी चीनी की तश्तरी में जमा दें। बाद में कतरे काट लें। इसे 7 माशा की मात्रा में नित्य सेवन करें। यह अजीर्ण, अग्निमांद्य और श्लेष्मातिसार के लिए गुणकारी है।

❑ अकरकरा 5.25 माशा, अजवायन, गाजर के बीज, सोंठ—प्रत्येक 2 तोला 11 माशा, अजमोदा की जड़ 5.50 माशा, रूमी मस्तग़ी 8.75 माशा, अगर 7 माशा और केसर 3.50 माशा लें। सबको कूट-छानकर तीन गुना शहद में मिलाएं। इसे 3 माशा की मात्रा में थोड़े से सौंफ़ के अर्क़ के साथ रोज़ाना दोपहर या शाम को सेवन करें। यह आमाशय और यकृत को शक्ति प्रदान करता है, अग्निमांद्य एवं अजीर्ण का शमन करता है, पेट के कीड़ों को नष्ट करता है तथा शीघ्रपतन आदि में लाभ पहुंचाता है।

❑ काली मिर्च, बायबिडंग, अजमोदा, जवाखार, दूध में शुद्ध किया हुआ आमलासार—प्रत्येक 2 तोला 4 माशा, काला नमक, पीपल, समुद्रझाग—प्रत्येक 14 माशा, सेंधा नमक 3 तोला और पीली हरड़ का बकला 4 तोला 8 माशा लें। समस्त द्रव्यों को अदरक के रस में खरल करके सुखाएं। फिर नीबू के रस में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना लें। अदरक और नीबू का रस आवश्यकतानुसार लें। रोज़ाना 1 गोली सुबह के समय पानी से लें। यह अजीर्ण, अरुचि एवं अग्निमांद्य में लाभकारी है।

❑ लाहौरी नमक 9 तोला, नौसादर 9 तोला, सेंधा नमक 9 तोला, सांभर नमक 1 सेर; इजखिर मक्की, काली मिर्च—प्रत्येक 2 तोला 1.50 माशा, अजमोदा 3 तोला, सफ़ेद मिर्च, बालछड़, घी में भुनी हुई हीरा हींग—प्रत्येक 1.50 माशा, शुद्ध काला जीरक, दारचीनी, सूखा पुदीना, सोंठ, अनीसून—प्रत्येक 7 माशा और केसर 6 माशा लें। इन सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। 2 से 3 माशा भोजन के बाद जल के साथ खाएं। यह मंदाग्नि और अजीर्ण को नष्ट करता है।

❑ दारचीनी, अहिफेन, असारून (तगर), फुव्वा (मजीठ), दूकू, जुदबेदस्तर—प्रत्येक 3.50 माशा, केसर 1.75 माशा, काली मिर्च, पीपल, बिहरोजा—प्रत्येक 21 माशा लें। पहले बिहरोजा को तीन गुना शहद में मिलाएं। फिर उसमें शेष द्रव्यों का बारीक कपड़छन चूर्ण मिलाकर गूंधें। इसे तैयार करके सुरक्षित रखें। तैयार होने के 6 सप्ताह बाद आवश्यकतानुसार 4 रत्ती से 7 माशा तक सेवन करें। यह हर प्रकार के उदर रोगों में लाभ पहुंचाता है। विशेष रूप से अजीर्ण में लाभदायक है।

❑ पोस्त सुमाक, मीठा अनारदाना, सोंठ, पीपल, छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज, सफ़ेद व काला जीरा, केसर, सेंधा नमक, सूखा धनिया, छिली हुई इमली—प्रत्येक 3.50 माशा और मिश्री 8 तोला लें। मिश्री को बारीक पीसकर अलग रखें। फिर शेष सामग्री को बारीक करके कपड़छन कर चूर्ण बना लें। अब इसमें पिसी मिश्री मिलाएं। रोज़ाना 3 माशा की मात्रा में सुबह-शाम पानी से खाएं। यह दीपक, पाचक और अजीर्ण नाशक है।

❑ सफ़ेद और काला जीरक, अगर, तगर, तेज़पात, कमलगट्टे की गिरी, बंसलोचन, दारचीनी, सोंठ, लौंग, काली मिर्च, कंकोल, तज, पीपल, नागकेसर—प्रत्येक 10 ग्राम और कपूर मात्र 2 माशा लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर तौलें। जितना यह चूर्ण हो, उतनी उसमें बारीक पिसी चीनी मिला लें। इसे 5 माशा की मात्रा में भोजन से पहले जल के साथ लें। यह अग्निमांद्य एवं अजीर्ण दोनों के लिए लाभकारी है।

हैजा (विशूचिका)

हैजा एक संक्रामक रोग है जो ग्रीष्म ऋतु में अधिक फैलता है। यदि शीघ्र ही इस पर क़ाबू न पाया जाए, तो रोगी के जान के लाले पड़ जाते हैं। यह रोग एक प्रकार के जीवाणुओं के संक्रमण से होता है। ये जीवाणु पेट में पहुंचते ही अपना काम शुरू कर देते हैं, जिससे रोगी को वमन और दस्त होने लगते हैं। यही इस रोग की सबसे बड़ी पहचान है। पेट में ऐंठन होती है तथा रोगी बहुत घबरा जाता है। इसमें बहुत बेचैनी होती है और मूत्र रुक जाता है।

नुस्ख़े

❑ शिंगरफ, अकरकरा, पीपल, सुहागा, लौंग (फूल वाली), काली मिर्च, अहिफेन और मीठा तेलिया—प्रत्येक 6 माशा लेकर सबको पीस डालें। फिर छानने के बाद ज़रूरत के मुताबिक़ अदरक का रस मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। 1 से 3 गोली हरे पुदीने के अर्क़ के साथ रोगी को दें। यह हैजे के लिए विशेष लाभकारी है।

❑ खट्टा अनारदाना, जर्रिशक—प्रत्येक आधा-आधा पाव; आलूबुख़ारा, सौंफ़, लाल चंदन का बुरादा—प्रत्येक 1 पाव; हरा पुदीना, दारचीनी—प्रत्येक आधा सेर; बंसलोचन 3.50 तोला, कपूर 2 माशा, बड़ी इलायची 1 छटांक एवं पानी 5 सेर लें। सभी द्रव्यों को पानी में भिगोकर आंच पर रखें और भाप रूपी अर्क़ एकत्र करें। 2 तोला यह अर्क़ 2-2 घंटे के अंतर से पिलाते रहें। यह हैजे में बहुत लाभ करता है।

❑ आक की कली 1 भाग, बिना बुझा हुआ चूना आधा भाग और लौंग 2 भाग—सबको मिलाकर मसूर के बराबर गोलियां बनाएं। तीन-तीन घंटे के अंतर से 1-1 गोली रोगी को देते रहें। यदि वमन ज़्यादा हो तो गोली को पीसकर खिला दें।

❑ गुलाब के फूल की कली, बिजोरे का छिलका, पपीता, दरियाई नारियल, काग़ज़ी नीबू के बीज, पियारांगा, नीम वृक्ष की छाल और सौंफ़—प्रत्येक 6 तोला लें। सबको यवकुट करके गुलाब के अर्क़ में भिगोएं। फिर शुद्ध सिरका 1 छटांक; बिजोरे का रस, हरे ककरौंधे का रस एवं फाड़ा हुआ हरे पुदीने का रस—प्रत्येक 1 पाव इसमें मिलाएं। इसे छानकर 2-2 तोला सुबह-शाम रोगी को पिलाएं।

साधारण नुस्ख़े

❑ हैजा में रोगी के शरीर का नमक कम हो जाता है। इसलिए इस रोग की प्रथमावस्था में रोगी को नीबू या नमक की ठंडी शिकंजी पिलानी चाहिए।

❑ वमन और प्यास की अधिकता होने पर रोगी को सादा बर्फ़ चूसने को दें। अथवा पानी में लौंग उबालकर, नमक मिलाकर चम्मच से थोड़ा-थोड़ा पिलाते रहें।

❑ मूत्र बंद हो जाने पर खाने का सोडा पानी में घोलकर पेट पर लेप करने से मूत्र निकलने लगता है।

❑ यदि शरीर में ऐंठन और बेचैनी हो तो जायफल घिसकर शरीर पर मलें। इससे ऐंठन व बेचैनी कम हो जाएगी।

कामला और पाण्डु रोग

जब पित्त नलिका बंद होने की वजह से रक्त में पित्त का अधिक मिश्रण हो

जाता है और रक्त कणों की कमी हो जाती है तो 'पाण्डु रोग', इससे अधिक पित्त के मिश्रण से 'कामला' तथा इससे भी अधिक मिश्रण से 'हलीमक' हो जाता है। क्योंकि पित्त, पीत भी है और नील भी, अत: तीनों के रंग क्रमश: पाण्डु (ईप पीत), हरिद्र (अधिक पीत) एवं हरित (पीत नील मिश्रित हरा) होते हैं। यह रोग अय्याशी, श्रम न करने तथा मानसिक उद्वेग आदि के कारण होता है। इस रोग में शरीर की त्वचा, आंखों के कौये, नखों की जड़ और पेशाब पीला हो जाता है। यहां तक कि रोगी जिधर भी देखता है, जिस चीज को देखता है, वो उसे पीली दिखाई पड़ती है।

नुस्ख़े

❑ मीठा तेल और पारा—प्रत्येक 3 तोला लेकर दोनों को आग पर रखें। फिर शुद्ध बंग 5 तोला पिघलाकर उसमें डाल दें। जब ये मिल जाएं तो उसको निकालकर खरल करें और कलमी शोरा 10 तोला मिलाकर दोबारा खरल करें। इसके बाद मिट्टी के सकोरे में रखकर, दूसरा सकोरा उसके ऊपर रखकर चारों तरफ़ मिट्टी लगाकर अच्छी तरह बंद करें और दस सेर कंडों की आंच दें। शीतल हो जाने पर उसे निकालें। इसे 1 रत्ती की मात्रा में मलाई में रखकर सुबह-शाम सेवन करें। यह कामला के लिए लाभकारी है।

❑ कासनी, काहू, कद्दू और कुलफा के बीज—प्रत्येक 7 माशा, कतीरा 3.50 माशा, कपूर 2 रत्ती, बंसलोचन, गुलाब के फूल, सफ़ेद चंदन—प्रत्येक 1.50 माशा लें। सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। फिर इसमें 4 माशा इसबगोल मिला दें। 7 माशा यह चूर्ण 10 तोला गुलाब अर्क़ और 2 तोला शहद के साथ सेवन करें। यह कामला एवं यकृत के संताप के लिए लाभप्रद है।

❑ कलमी शोरा 2 तोला, नौसादर 1 तोला, रेवंद खताई 1 तोला—सबको कूट-छानकर उसमें 6 माशा लौह भस्म मिलाकर चूर्ण बनाएं। 1-1 रत्ती की मात्रा में 10 तोला गावज़बान अर्क़ और 2 तोला शर्बत बजूरी के साथ सुबह-शाम सेवन करें।

❑ विलायती सकमूनिया 4 रत्ती, काला नमक 7 रत्ती, मजीठ और गारीकून—प्रत्येक 1.75 माशा तथा एलुआ 1.75 माशा लें। सबको कूट-छानकर गोलियां बनाएं। रात में एक बार माउल्बुजर के साथ चने के बराबर की 1 गोली निगल लें। यह गोली कामला नाशक है।

❑ शोर, सांभर, लाहौरी, मनिहारी नमक—प्रत्येक 1 तोला, सूखा आंवला, बहेड़ा, काबुली हरड़, पीली हरड़, सौंफ़, कासनी के बीज—प्रत्येक 2 तोला एवं गुडूची सत्त्व 2 माशा लें। समस्त द्रव्यों से आधा फौलाद भस्म लें। सबको कूट-छानकर रखें। इसे 7 माशा रोज़ाना ताज़े पानी से सेवन करें। यह हलीमक के लिए बहुत लाभकारी है।

❑ हीरा कसीस, एलुआ—प्रत्येक 2 तोला और छोटी इलायची के बीज 5 तोला। सबको बारीक पीसकर आवश्यकतानुसार शहद मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। सुबह-शाम दो-दो गोलियां पानी के साथ लें। ये गोलियां पाण्डु (रक्ताल्पता) निवारक हैं।

❑ काली हरड़, पीली हरड़ और काबुली हरड़ का बकला, आंवला, बहेड़ा—प्रत्येक 3 तोला, जावित्री, छोटी इलायची, ऊदकमारी—प्रत्येक 7 माशा, काली मिर्च, पीपल, काला जीरक, सोंठ, सोआ, अजमोदा, गंदना के बीज, तुख़्म जिरजीर, शलजम के बीज, खरबूज़ा के बीज, तज, दारचीनी, जायफल, लौंग—प्रत्येक 3.50 माशा, सफ़ेद इस्पंद 3.50 माशा 9 तोला और मंडूर भस्म समस्त द्रव्यों के सम प्रमाण लें। इनको कूट-पीस-छानकर चूर्ण बनाएं और उससे दोगुना शहद में पूर्वोक्त विधि द्वारा माजून तैयार करें। 7 माशा माजून 12 तौला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। यह जिगर के विकारों को दूर करने में गुणकारी है।

प्लीहा रोग

प्लीहा बढ़ने पर शरीर पीला पड़ जाता है। रक्त की अत्यधिक कमी हो जाती है। भूख नहीं लगती, कोष्ठबद्धता आदि हो जाती है। यह तिल्ली के बढ़ जाने की निशानी है। तिल्ली बढ़ते-बढ़ते बाईं ओर तक पहुंच जाती है और पेट में पत्थर के टुकड़े जैसी कड़ाहट मालूम होने लगती है। पीड़ा अधिक होती है, मसूड़े फूल जाते हैं और उनसे रक्त गिरने लगता है। यदि ऐसे में तिल्ली फट जाए, तो रोगी की जान पर बन आती है। इस रोग का उपचार शीघ्र और अत्यावश्यक है।

नुस्ख़े

❑ काली मिर्च और चौकिया सुहागा—प्रत्येक 3 तोला लेकर पीसें। फिर खाने का नमक, सेंधा नमक, काला नमक, नमक तल्ख़, सुलेमानी नमक, हरे अदरक का रस, घीकुंआर का रस, काग़ज़ी नीबू का रस और शुद्ध सिरका—प्रत्येक 6 तोला मिलाकर कांच के किसी बर्तन में डालकर दस दिन तक धूप में रखें। 1 तोला इस अर्क़ में 12 तोला सौंफ़ का अर्क़ तथा 1 तोला नीबू की शिकंजी मिलाकर सुबह के वक़्त पिएं।

❑ उशना (छड़ीला) 1.75 तोला, पीला अंजीर 10 दाने, गंधक 7 माशा, उशक, गुग्गल, बूअरमनी, सेंधा नमक—प्रत्येक 1 तोला 2 माशा, सुदाव के पत्ते 2 तोला 4 माशा तथा झाऊ 1.75 तोला लें। पहले आवश्यकतानुसार सिरका लेकर अंजीर को उसमें पकाएं। जब वह गल जाए तो उशक और गुग्गल को पिघलाकर

डाल दें। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर उसमें मिलाएं और लेई-सी बनाकर उतार लें। इसे तेज़ सिरके में मिलाकर सुहाता गरम शोथ वाले स्थान पर लेप करें। यह प्लीहागत शोथ का शमन करता है।

❑ पुरानी मद्य 1 पाव, एलुआ और लहसुन का रस—प्रत्येक 1 तोला और पुराना सिरका 2 तोला लें। तीनों द्रव्यों को मद्य में डालकर बोतल में काग लगाकर 40 दिन धूप में रखें। फिर इसे छानकर दूसरी बोतल में भर लें। बालकों को 10 बूंद एवं बड़ों को 20 बूंद तक दिन में तीन बार सुबह, दोपहर और शाम को पिलाएं। फिर कोई मीठी चीज़ खिला दें। इससे प्लीहा को जल्दी आराम हो जाता है।

❑ इकलीलुलमलिक, बाबूना के फूल, नागरमोथा, बिरंजासफ, बालछड़, बोल, पहाड़ी पुदीना, अफसंतीन, मकोय—प्रत्येक 6 माशा, रसवत 1 माशा और जदवार 1 माशा लें। सबको कूट-छानकर मकोय के रस में मिलाएं। इसका लेप करने से तिल्ली की सूजन और कड़ापन दूर हो जाता है।

❑ जवाखार 5 तोला, मनिहारी और लाहौरी नमक 5-5 तोला, नौसादर 20 तोला तथा काग़ज़ी नीबू का रस आधा सेर लें। सबको पीसकर नीबू के रस में मिलाकर, चीनी के बर्तन में करके धूप में रख दें। जब रस सूख जाए तो उसे कोरी मिट्टी की हांडी में डालकर, दूसरी हांडी को उसके मुंह पर औंधा रखकर, मिट्टी से बंद करके तेज़ आंच पर रखें। कुछ देर में ही जौहर (सत्त्व) उड़कर ऊपर की हांडी में लग जाएगा, उसे सुरक्षित रखें। 2 रत्ती यह सत्त्व भोजनोपरांत ताज़ा पानी से लें। इससे बढ़ी हुई तिल्ली छंट जाती है।

❑ अदरक 1.25 तोला, पीला अंजीर 1.25 तोला, सूखा पुदीना, कलौंजी, भुना हुआ सुहागा, नौसादर, राई, काली मिर्च, सज्जी, लाहौरी नमक—प्रत्येक 3.50 माशा, एरण्ड खरबूज़ा (पपीता), मूली—प्रत्येक 2.50 तोला तथा सिरका 1 पाव लें। सबको बारीक पीसकर सिरके में मिलाकर रख लें और भोजनोपरांत 3 माशा की मात्रा में चाटें। यह प्लीहा-शोथ और प्लीहा वृद्धि में लाभ करता है।

बवासीर

बवासीर होने पर मलद्वार के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं। त्वचा सख़्त एवं संकुचित होकर मस्से पैदा हो जाते हैं, जो कभी मलद्वार के अंदर तथा कभी बाहर होते हैं। इसमें खुजली, वेदना, तनाव और जलन होती है। मस्सों से ख़ून निकलने पर 'ख़ूनी बवासीर' और ख़ून न निकलने पर 'बादी बवासीर' कहा जाता है। घी-तेल की चिकनी चीज़ें, मसालेदार भोजन, शराब के सेवन, पेट में वायुसंचय, यकृत की ख़राबी, गर्भावस्था में कसकर या कसे वस्त्र पहनने आदि कारणों से इस रोग की उत्पत्ति हो जाती है।

नुस्ख़े

❑ 3 माशा सफ़ेद मोम को 1 तोला तिल के तेल में गलाकर 3 तोला गाय का ताज़ा मक्खन मिलाएं। फिर नीम की छाल 1 माशा, बकाइन की छाल 1 माशा, बकाइन के बीज की गिरी 1 माशा, नीम के बीज की गिरी 1 माशा, रसवत 1 माशा, गुग्गल 1.50 माशा, सफ़ेदा काशगरी 1 माशा और कपूर 1 माशा—सबको कूट-छानकर उसमें मिलाकर मरहम बनाएं। बवासीर के मस्सों में वेदना और दाह होने पर इस मरहम को लगाने से तत्काल आराम हो जाता है।

❑ सरसों का तेल एवं छागवसा—प्रत्येक 5 तोला, शुद्ध मोम 1 तोला, अहिफेन 6 रत्ती तथा माजू 2 नग लें। पहले शुष्क द्रव्यों को पीसकर रखें। फिर सरसों के तेल में मोम और बकरी की चर्बी 1 तोला मिलाकर अग्नि पर गरम करें। इसके बाद पिसे द्रव्यों को इसमें मिलाकर मरहम तैयार करें। इस मरहम को मस्सों पर लगाने से ठंडक पड़ जाती है तथा कुछ दिनों के प्रयोग से मस्से सूख जाते हैं।

❑ नीमकौली की गिरी, रक्त गुग्गुलु, बकाइन के बीज की गिरी, पीत रसवत, सूरजमुखी के फूल, कलमी तल, पीली हरड़ का छिलका, काली हरड़, काबुली हरड़, गुलाब के फूल, सोंठ, गंदना के बीज—प्रत्येक 2 तोला लें। इनको बारीक पीसकर हरी मूली के पत्तों के रस और हरे ककरौंदा की पत्ती के रस में तीन दिन आलोड़न करके रीठे के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। रोज़ रात में सोते समय 1 गोली ताज़ा पानी से खाएं। यह हर प्रकार की बवासीर का शमन करती है।

❑ नीम के बीज की गिरी, बकाइन के बीज की गिरी, गंदना के बीज, रसवत, मुकल अरजक (रक्त गुग्गुलु) और गेरू—प्रत्येक 2 तोला लेकर पहले गंदना के थोड़े से रस में पीसकर चने के बराबर गोलियां बनाएं। बादी बवासीर में दिन में दोनों वक़्त एक-एक गोली और ख़ूनी बवासीर में दो गोली रात में ताज़े पानी के साथ सेवन करें। इनके निरंतर उपयोग से यह रोग गायब हो जाता है।

❑ सूखा आंवला 4.50 माशा, सौंफ़ 2.50 माशा, रसवत 2.50 माशा, अनीसून 2.50 माशा, काबुली हरड़ का बकला, पीली हरड़ का बकला, बहेड़े का छिलका—प्रत्येक 4.50 माशा लें। इनको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं और मीठे बादाम का तेल आवश्यकतानुसार लेकर उसमें स्नेहाक्त करें। फिर मुकल अरजक 0.75 तोला और गंदना के बीज 0.50 तोला लेकर पानी में घोलें। इसके बाद बीज निकाला हुआ मुनक्का 1 तोला, पीला अंजीर 1 तोला, अमलतास का गूदा 1.25 तोला योजित कर सबको मिलाएं और चने के बराबर गोलियां बना लें। 4 गोली रात में सोते समय 5 तोला अर्क़ सौंफ़ और 5 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ खाएं। यह ख़ूनी और बादी दोनों तरह की बवासीर में लाभदायक है।

□ नौसादर 5 रत्ती; चीना, सुंदरूस और कुक्कुटांडत्वक्–प्रत्येक 5 माशा लें। सबको कूट–छानकर, पानी का छींटा देकर छोटी–छोटी गोलियां बना लें। 4-6 गोली रोज पानी के साथ सेवन करें। इससे बवासीर के रोग में आराम हो जाता है।

□ नागकेसर, नीम की निबौली, रसवत, बीज निकाले मुनक्के—प्रत्येक 12 माशा और भीमसेनी कपूर 6 माशा लें। मुनक्कों को छोड़कर शेष सभी द्रव्यों को बारीक पीसकर कपड़े से छानकर चूर्ण तैयार करें। फिर उसमें मुनक्के डालकर ख़ूब अच्छी तरह घोटें और जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर रखें। आवश्यकता पड़ने पर एक–एक गोली सुबह–शाम पानी के साथ निगलें। यह ख़ूनी बवासीर की महौषधि है। 20 दिन में ही इनसे पूर्ण लाभ हो जाता है। रोग पुराना होने पर ये गोलियां अधिक समय तक खाई जा सकती हैं।

□ गुलाब के अर्क़ में पीले रसवत को भिगोकर निथार लें। फिर निबौली की गिरी, बकाइन के बीज की गिरी, गंदना के बीज, मुकल अरजक, पीली हरड़ का छिलका, काली हरड़, काबुली हरड़, सूरजमुखी का फूल, सोंठ—प्रत्येक 4 तोला लेकर, बारीक कूट–पीसकर कपड़े में छानें। फिर इसे इसबगोल के लुआब में घोटकर चने के समान गोलियां बनाएं। यदि गोलियां अधिक गीली हों तो छाया में रखकर सुखा लें। नए रोग में 2 और पुराने रोग में 4 गोली रोज़ रात में ताज़े पानी के साथ सेवन करें। ये गोलियां बादी बवासीर में जितना अच्छा काम करती हैं, ख़ूनी बवासीर में नहीं करतीं। यदि कोई अन्य दवा न हो तो इससे ख़ूनी बवासीर में लाभ अवश्य होता है, मगर रोग पूर्णतया नहीं समाप्त होता।

□ सफ़ेद मोम, यशद भस्म, रसवत—प्रत्येक 1 तोला, ख़तमी के फूल, मुकल अरजक—प्रत्येक 2 तोला, जावशीर, सोंठ—प्रत्येक 5 तोला 10 माशा, गुलरोग़न 5 तोला और तिल का तेल 7 तोला लें। पहले तेलों को अग्नि पर रखकर ख़तमी के फूल और अरजक कूटकर डालें, फिर शेष द्रव्यों को वैसे ही डाल दें और मिलाकर उतार लें। बवासीर के मस्सों पर इसका लेप करके भांग के पत्तों की टिकिया बांधकर लंगोट कस लें। इससे मस्सों में होने वाली वेदना शांत हो जाती है।

पेट के कृमि

प्रत्येक मनुष्य के पेट में कुछ–न–कुछ कृमि (कीड़े) सदा मौजूद रहते हैं, किन्तु खान–पान की गड़बड़ी से इनकी संख्या अक्सर बढ़ जाती है जो शरीर को रोगी बना देते हैं। कृमि विशेषकर तीन प्रकार के होते हैं—छोटे–छोटे सूत की तरह, गोल–लंबे केंचुए या केंचुए की तरह तथा खूब लंबे फीते की तरह। पहले प्रकार के कृमि समूह बनाकर मलद्वार के पास रहते हैं। कभी–कभी ये मूत्रनली या योनिद्वार में चले जाते हैं, जिस कारण इन स्थानों में बेहद खुजली होती है और धातु निकल

जाती है। कृमि के मौजूद रहने से नाक के अगले भाग और गुह्यद्वार में खुजली होती है। पेट में कृमि के कारण ही बच्चा नींद में दांत कड़कड़ाता है।

दूसरे प्रकार के कृमि आंत में रहते हैं। ये कभी-कभी पाकस्थली की राह से मुंह में आकर कै के साथ निकल जाते हैं, तो कभी मल के साथ बाहर चले जाते हैं। इनके रहने से मुंह में बराबर पानी भर जाता है, दांत कटकते हैं, नाक के अगले भाग तथा गुदा में खुजली होती है। तीसरे प्रकार के कृमि सादे, चपटे और गांठ युक्त होते हैं। इनकी लंबाई दस फीट से बीस फीट तक होती है। ये शरीर में एक से ज़्यादा नहीं रहते।

नुस्ख़े

❑ पलास पापड़ा, कमीला, बायबिडंग, अफसंतीन रूमी—प्रत्येक 2 तोला लें। सबको कूट-छानकर आड़ू की पत्ती के रस में आलोड़न करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाएं। एक-एक गोली सुबह-शाम खिलाएं। ये गोलियां हर प्रकार के उदरस्थ कृमियों को मारकर निकाल देती हैं।

❑ 1 तोला शुद्ध बंग (कलई) का बारीक पत्तर बनाकर कैंची से कतर लें। फिर उसमें 6 माशा पीपल मिलाकर इतना कूटें कि वह चूर्ण हो जाए। रात में उसमें थोड़ा-सा पुराना गुड़ मिलाकर रख दें। सवेरे यह चूर्ण 9 माशा की मात्रा में 1 पाव दही के साथ उपयोग करें। इसे कंठ में डालने के उपरांत अपनी नासिका, दंत और नेत्र अवश्य बंद कर लें। गुड़ मिला यह चूर्ण हर प्रकार के अंत्रस्थ कृमि को मारकर अथवा जीवित रूप में निस्सारित कर देता है।

❑ बायबिडंग 4 तोला, शुद्ध कुचला 5 तोला, तुख़्ममेंदा 6 तोला, शुद्ध पारा 1 तोला, शुद्ध आंवलासार गंधक 2 तोला, राई, अजवायन—प्रत्येक 3 तोला लें। इन सबको बारीक करके रखें। आवश्यकता होने पर दिन में 1 बार 3 माशा की मात्रा में खिलाएं। यह पहले प्रकार के कृमियों को मारकर निकालने में सक्षम है।

❑ सफ़ेद निशोथ, काला दाना, कड़वाकूट—प्रत्येक 1 तोला 5 माशा, तुरमुस, अफसंतीन रूमी, दिरमना तुर्की, अफतीमून, सांभर नमक, इंद्रायन की जड़, रासना के बीज, नागरमोथा—प्रत्येक 10.50 माशा लें। इन सबको कूट-पीस-छानकर तिगुने शहद में मिलाकर रखें। सवेरे या शाम को 4 माशा यह औषधि 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ तीन दिन खाएं। इसके अनंतर एक हल्का-सा जुलाब ले लें। इससे आमाशय हर प्रकार के कृमियों से रिक्त हो जाता है।

जलोदर

पेट में जल संचय होने को 'जलोदर रोग' कहा जाता है। आम बोलचाल में

इसे पानी भरना भी कहते हैं। यह रोग अनेक कारणों से हो सकता है। शरीर के विभिन्न अंगों की विकृति से जलोदर की उत्पत्ति हो सकती है। उदर्याकला में किसी क्षत, क्षय या आघात से शोथ होने पर, आहार में प्रकृति-विरुद्ध अधिक शीतल खाद्य लेने पर या अम्ल रस के अधिक बढ़ने से भी उदर स्थित महाकला में शोथ हो जाता है, जिससे जलोदर होने लगता है। तीव्र वृक्क शोथ, ग्रहणी, अत्यधिक रक्ताल्पता, स्त्रियों में गर्भाशय विकृति एवं हृदय रोग होने पर भी प्राय: जलोदर हो जाता है।

जलोदर के प्रारंभ में पेट बढ़ने लगता है। हृदय तीव्रता से धड़कता है और श्वास लेने में कष्ट होने लगता है। स्त्रियों में डिंबकोशीय अर्बुद (कैंसर) की उत्पत्ति होती है। रोगी को पेट में भारीपन, खांसी, कभी-कभी बेहोशी और अग्निमांद्य भी हो जाता है। रोगी के पांवों में शोथ (सूजन) होना जलोदर का सबसे बड़ा लक्षण है। शोथ के साथ मूत्र कम आता है तथा क़ब्ज़ भी हो जाता है। कामला रोग की उत्पत्ति भी जलोदर रोग में हो सकती है।

नुस्ख़े

❑ सर्वप्रथम संखिया को एरंड के तेल में रखकर अग्नि पर रखें। जब वह गरम होकर मोम के समान हो जाए, तो उसे उतार लें। इस संखिया में से 1 तोला लेकर उसमें 7 तोला पिसी काली मिर्च मिलाकर मसूर के समान गोलियां बना लें। एक-एक गोली सुबह-शाम 5 तोला गाय के शुद्ध घी में 1 तोला मिश्री मिलाकर सेवन करें। यह जलोदर में बहुत लाभकारी है।

❑ शुद्ध पारा, आर्द्र तुर्बुदमुजव्वफ़ खराशीदा—प्रत्येक 5 माशा, शुद्ध जमालगोटा का मग़ज़ 4 माशा, गंधक आंवलासार, इंद्रायन की जड़ का आटा, पीली हरड़ का छिलका, कमीला, खाने का सादा नमक—प्रत्येक 1 माशा लें। इन सभी को पीसकर एक-एक रत्ती की गोलियां बना लें। 2 माशा गोलियां ऊंटनी के दूध के साथ सेवन करें और ऊंटनी के दूध के अलावा कुछ न खाएं-पिएं। इससे हर प्रकार के शोथ एवं जलोदर में लाभ होता है।

❑ निशोथ और कमीला का महीन चूर्ण 6-6 माशा लेकर, दोनों को बारीक पीसकर, थूहर के दूध में खरल करके उड़द के समान गोलियां बनाएं। अर्क़ सौंफ़, अर्क़ गुलाब और काकमाच्यार्क—प्रत्येक 3 तोला के साथ 1 गोली रोज़ लें। यह शोथ तथा जलोदर में अति गुणकारी है।

❑ अजमोदा, अजमोदा-जड़ की छाल, कासनी-जड़ की छाल, सौंफ़, करीर भेद (कबर-जड़ की छाल)—प्रत्येक 2.25 तोला, सौंफ़-जड़ की छाल 4.25 तोला, कासनी 1.50 तोला, ऊदबलसां 3.50 माशा, कुसुम बीज 1.50 तोला, खरबूज़े के बीज 1.50 तोला, गुलाब के फूल 1 तोला, गाफिस के फूल 7 माशा, बालछड़ 9 माशा, असारून 9 माशा, रेवंद चीनी 9 माशा और हब्ब बलसां 3.50

माशा लें। इन सबको रात्रि में आधा सेर मकोय के रस (अर्क़) और आधा सेर कासनी के अर्क़ में भिगोकर सुबह गरम करें। फिर छानकर 3 पाव चीनी मिलाकर शर्बत की चाशनी करें। ठंडा होने पर रूमी मस्तग़ी 3.50 माशा और लुक मगसूल 3.50 माशा बारीक पीसकर मिलाएं। 3 तोला शर्बत का सेवन नित्य करें। यह शोथ (सूजन) और जलोदर में लाभदायक है।

विशेष—रोज़ाना रोगी को प्याज़ खिलाने या उसका रस पिलाने से बहुत लाभ होता है। करेले के पत्तों का रस निकालकर पिलाने से भी जलोदर नष्ट होता है।

❑❑

3

ज्वर रोग

ज्वर को एक स्वतंत्र रोग न मानकर अन्य रोग के आगमन का प्रतीक माना गया है। इसका अनुभव शरीर के तापमान और नाड़ी की गति से होता है। वैसे ज्वर कई प्रकार का होता है, जिनका उल्लेख यहां किया जा रहा है।

तपे मुहरिका (सन्निपातिक ज्वर)

यह ज्वर (बुख़ार) जितना सुबह रहता है, उससे दो डिग्री शाम को या तीसरे पहर बढ़ जाता है। इसी तरह धीरे-धीरे बढ़कर 105, 106 और कभी-कभी 107 डिग्री तक हो जाता है। इसकी मियाद लगभग 4 हफ़्तों की होती है। इसलिए इसे मियादी बुख़ार, मौक्तिक ज्वर, आंत्रिक ज्वर, मोतीझरा अथवा टायफाइड कहते हैं।

नुस्ख़े

❑ खुरासानी तरंजबीन 10.50 माशा, गेहूं का सत (निशास्ता), मीठे कद्दू के बीज की गिरी, खीरा और ककड़ी के बीज की गिरी, बबूल का गोंद, पोस्तदाना—प्रत्येक 3.50 माशा और तबाशीर सफ़ेद 1 तोला 2 माशा लें। इनको कूट-छानकर इसबगोल के लुआब से गोलियां बना लें। 7 माशा गोलियां खाकर ऊपर से 9 माशा गावज़बान का अर्क़ पिएं। यह मियादी बुख़ार की लाभकारी औषधि है।

❑ पीपरामूल, पीली हरड़ का छिलका, बछनाग, तज, बायबिडंग, शुद्ध भिलावां, सोंठ, चीता, अतीस एवं खुरासानी अजवायन। सबको महीन पीसकर घीकुंआर के गूदे में मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनाएं। 4 गोली गावज़बान अर्क़ 9 तोला के साथ नित्य सेवन करें। यह मियादी बुख़ार, पेट दर्द, खांसी एवं श्वास रोग में आराम पहुंचाती है।

❑ तरबूज़, मीठा कद्दू, खीरा और ककड़ी के बीज की गिरी, कुलफा के बीज—प्रत्येक 3 तोला लें। सबको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं। 1 तोला चूर्ण रोज़ाना पाउश्शईर के साथ सेवन कराएं। यह सन्निपातिक ज्वर के लिए उपयोगी है।

❑ लिसोढ़ा, उन्नाब, जौकुट किया हुआ यव, गुल बनफ़शा, गेहूं की भूसी, खतमी का सूखा फूल, इकलीलुलमलिक (नाखूना)—प्रत्येक 1 मुट्ठी भर और

अंजीर 5 अदद लें। सबको एक लोटा पानी में उबालें। जब पानी जलकर आधा रह जाए, तो 17.50 माशा बूरा, रोग़न बनफ़शा, रोग़न बादाम और तिल का तेल—प्रत्येक 3 तोला तथा कांजी 17.50 माशा मिलाकर रखें। ज़रूरत पड़ने पर गुनगुना करके दो ख़ुराक सुबह-शाम पी लें। इससे हर तरह का बुख़ार जाता रहता है।

❑ हरे धनिये का अर्क़ (रस), हरे खीरे का रस, लंबे कद्दू का रस और अर्क़ केवड़ा—प्रत्येक 4 तोला, गिल अरमनी, सफ़ेद चंदन और नीलोफ़र के फूल—प्रत्येक 1 माशा लें। सबको पीसकर कांच की चौड़े मुंह की शीशी में रख लें। सन्निपात के रोगी को ढक्कन खोलकर सुंघाएं। रोज़ाना दिन में 3-4 बार यह क्रिया करें। इसी से फ़ायदा हो जाएगा।

❑ अनबिध मोती, सफ़ेद और लाल बहमन, सफ़ेद व लाल तोदरी, बादरंजबूया के बीज, केसर, अम्बर, अशहब, कस्तूरी—प्रत्येक 2 तोला, गावज़बान, बनफ़शा एवं कुलफा के फूल—प्रत्येक 20 तोला, अर्क़ बेदमुश्क व अर्क़ गुलाब—प्रत्येक 2 सेर; चीनी 1 सेर, बादरंजबूया (बिल्लीलोटन) तथा ज़हरमोहरा—प्रत्येक 4 तोला लें। पहले चीनी की पतली-सी चाशनी बनाएं। फिर अर्क़ के अलावा शेष सभी द्रव्यों को बारीक कूटकर चाशनी में डालकर चलाएं। गाढ़ा होने पर अर्क़ों को भी डाल दें। इसे 1.50 माशा प्रति ख़ुराक के हिसाब से सेवन करें। यह तपे मुहरिका में अतीव गुणकारी है।

साधारण ज्वर

वात, पित्त, कफ अथवा सर्दी आदि लग जाने के कारण ज्वर (बुख़ार) हो जाता है। कभी-कभी कान, आंख या दस्तों के बार-बार वेग के कारण भी बुख़ार बढ़ जाता है। ज्वर किसी भी वजह से हो, उसका निवारण आवश्यक है।

नुस्ख़े

❑ काफूर कैसूरी (कपूर का एक प्रकार) 2.25 माशा, गेहूं का सत, बंसलोचन, अनबिध मोती, कतीरा—प्रत्येक 9 माशा, सफ़ेद चंदन, लाल चंदन, गुलाब और नीलोफ़र के फूल, सूखा धनिया, खुरफे के छिले हुए बीज, तरबूज़ और मीठे कद्दू के बीज की गिरी—प्रत्येक 1 तोला 1.50 माशा लें। इनको कूट-छानकर इसबगोल के लुआब में घोटकर गोली या टिकिया बनाएं तथा 4 माशा की मात्रा में रोगी को सेवन कराएं। यह हर प्रकार के ज्वर में उपयोगी है।

❑ अफसंतीन और धतूर के बीज 1-1 छटांक कूटकर 1 सेर पानी में भिगो दें। फिर मल-छानकर इसमें 1 सेर गोदंती (हरताल) पीसकर डाल दें। जब अफसंतीन व धतूर बीज का स्वरस सूख जाए, तो गिलोय के रस से टिकिया बनाकर गरम राख (भूभल) में भून लें। इस तरह भस्म तैयार हो जाएगी। 1 रत्ती भस्म गावज़बान अर्क़ के साथ सेवन कराएं। यह साधारण, जीर्ण, तीव्र, कफ एवं विषम

ज्वर (मलेरिया) आदि के लिए अत्युत्तम औषधि है।

❑ गाय के दूध में शोधित बछनाग, काली मिर्च, पीपल, तवे पर खील किया हुआ सुहागा और शुद्ध शिंगरफ—सबका समभाग लेकर बारीक पीसकर, ज्वार के बराबर गोलियां बना लें। 1 से 3 गोली कुलफे के बीजों के रस के साथ सेवन कराएं। यह दोषज एवं जीर्ण ज्वरों का निवारण करने वाली प्रधान औषधि है। पित्तज, वातज और कफज—जीर्ण ज्वरों में उपयुक्त अनुपान के साथ इसका उपयोग कराएं।

❑ शुद्ध पारद, नरकचूर, आंच पर खील किया हुआ सुहागा, पीपल, सोंठ, मुक्ताशुक्ति-सुधा (मोती सीप का चूना), गाय के दूध में शुद्ध किया गया आमलासार और गंधक—प्रत्येक 1 तोला लें। गंधक और पारद को तीन दिन तक शुष्क खरल करें। इस प्रकार बनी हुई कज्जली में शेष द्रव्यों का चूर्ण डालकर इतना खरल करें कि गोलियां बंधने लगें। अब काली मिर्च के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। बालकों को 1 गोली और बड़ों को 2-4 गोली तक सादा पानी के साथ दें। यह पित्त ज्वरों को छोड़कर शेष सभी प्रकार के ज्वरों के लिए लाभकारी है।

न्यूमोनिया

न्यूमोनिया भी एक प्रकार का संक्रामक रोग है। फेफड़ों की सूजन एवं शीत ज्वर इसके मुख्य कुफल हैं। इस रोग में बगल का तापमान साधारणत: 104 डिग्री, नाड़ी का स्पंदन प्रति मिनट अनुमानत: 120 बार और श्वास प्रति मिनट 40 बार रहता है।

नुस्ख़े

❑ लिसोढ़ा 50 नग, उन्नाब 30 नग, ख़तमी बीज और खुब्बाजी बीज—प्रत्येक 1.50 तोला, अंजीर 20 दाना; जूफा और मुलेठी (छिली हुई)—प्रत्येक 3 तोला, परसियावशां 2.50 तोला और चीनी आधा सेर लें। चीनी के अलावा सभी चीज़ों को 1 सेर पानी में भिगोकर रखें। रात भर यों ही भीगा रहने दें और सुबह काढ़ा बना लें। जब पानी आधा रह जाए, तो उतारकर मल-छानकर चीनी मिलाकर शर्बत बनाएं। सुबह-शाम 3-3 तोला शर्बत 5 तोला गावज़बान अर्क़ के साथ दें। यह न्यूमोनिया में शीघ्र लाभ करता है। नज़ला, ज़ुकाम और श्वास में इसे सादे पानी के साथ देना चाहिए।

❑ 10 तोला गुल बनफ़शा रात को पानी में भिगोएं और सुबह काढ़ा बनाएं। फिर उसे छानकर 1 सेर चीनी मिलाकर चाशनी कर लें। 4 तोला यह औषधि 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ उपयोग करें। फेफड़ों, छाती का शूल तथा समस्त श्वास दोषों का शमन करके यह न्यूमोनिया में आशातीत लाभ पहुंचाता है। ❑❑

4

वात रोग

वात रोगों में सबसे पहले आमवात का नाम सामने आता है। वैसे लकवा, अधरंग, अंगघात, कंपवात, धनुर्वातादि अनेक दोष वात रोग से ही सम्बंधित हैं।

आमवात

'आमवात' का अर्थ है—जोड़ों में दर्द होना। यह रोग अधेड़ायु में ही अधिक होता है। इसमें बहुत पीड़ा होती है। अधिक पीड़ा के कारण आमवात रोग बहुत कष्टकारी हो जाता है। प्रारंभ में रोगी को हल्का-सा ज्वर होता है। फिर संधिस्थलों (जोड़ों) में दर्द और शोथ (सूजन) उत्पन्न होता है। घुटनों, कलाइयों तथा पांवों के टखनों में आमवात का प्रकोप प्राय: अधिक होता है।

नुस्खे

❑ मीठा सुरंजान, पीली हरड़ का छिलका—प्रत्येक 3 माशा, अयारज फैकरा 3.50 माशा, गुलाब के फूल और रूमी मस्तग़ी—प्रत्येक 1.50 माशा लें। सबको कूट-छानकर 2.50 रत्ती ऐस्पाइरीन मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। यह एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा प्रतिदिन रात को सोते समय या सुबह ताज़ा पानी से खिलाएं। यह आमवात की समस्त वेदनाओं में गुणकारी है।

❑ छिला हुआ लहसुन, हल्दी—प्रत्येक 5 तोला, कौड़िया लोबान, कुचला, धतूर के बीज, खाने का नमक—प्रत्येक 3 तोला, काला बछनाग, कड़वाकूट 2-2 तोला, सफ़ेद संखिया और हींग 1-1 तोला लें। इन सबको महीन पीस लें। फिर धतूर और मदार की पत्तियों का रस आधा-आधा पाव को 1 पाव तिल के तेल में डालकर आग पर इतना पकाएं कि सिर्फ़ तेल ही बाकी रह जाए। तदुपरांत शेष द्रव्यों को मिलाकर आग पर पकाएं और छानकर रख लें। इसे वेदना स्थल पर अच्छी तरह मलें। ऊपर से मदार की पत्तियां हल्की गरम करके बांध दें। इससे हर प्रकार की वात वेदना (गठिया) का शमन हो जाएगा।

❑ पीत एलुआ, अस्थि दूर की हुई निशोथ—प्रत्येक 28 माशा, पीली हरड़ का छिलका, अकरकरा, मीठा सुरंजान—प्रत्येक 7 माशा तथा गुग्गल 2.25 माशा लें। इन सबको पीसकर हरे गंदना के पत्तों के अर्क़ (आवश्यकतानुसार) में गूंधकर गोलियां बना लें। रोज़ाना 10.50 माशा वज़न की गोलियां उष्ण जल से खाएं। ये गोलियां आमवात में बड़ी लाभप्रद हैं।

❑ माहीजहरज, कवर की जड़, बूजीदाना, चीता, सफ़ेद जीरा—प्रत्येक 8 माशा, सफ़ेद-मीठा सुरंजान 1 तोला 9 माशा, पीली हरड़ 2 तोला 4 रत्ती, अजमोदा, सौंफ़, सफ़ेद मिर्च, एलुआ, सातर, सेंधा नमक, मेहंदी के पत्ते, समुद्रझाग—प्रत्येक 5.25 माशा, गुलाब के फूल, सोंठ, सकमूनिया, तिल—प्रत्येक 10.50 माशा, सफ़ेद निशोथ 4 तोला 4.50 माशा, शहद 43 तोला 9 माशा और बादाम का तेल 1.50 तोला लें। पहले निशोथ को कपड़छन कर चूर्ण करें और बादाम के तेल में स्नेहाक्त कर लें। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर शहद के साथ माजून बनाएं। इसे 7 माशा की मात्रा में जल से सेवन कराएं। यह सभी प्रकार के वात रोगों में उपयोगी है।

❑ मदार की हरी पत्ती, थूहर, धतूर और एरंड की हरी पत्ती—प्रत्येक 1 छटांक, कड़वा सुरंजान 2.50 तोला एवं मीठा तेलिया 2 तोला लें। इन सबको एक साथ पीसकर आधा सेर तिल के तेल में जलाकर छान लें। फिर इस तेल में अहिफेन और कच्ची हींग—प्रत्येक 9 माशा तथा एलुआ 1 तोला बारीक पीसकर घोलकर रख लें। शोथ और वेदना-स्थल पर इसकी मालिश करने के बाद रूई रखकर बांध दें। इससे आमवात की वेदना एवं शोथ का निवारण हो जाता है।

❑ ख़ुरासानी अजवायन, अजवायन और काला तिल—प्रत्येक 7 माशा, भिलावां (टोपी दूर किया हुआ) 8 नग, नारियल की गिरी 1 तोला, पारा 14 माशा, सफ़ेद बंसलोचन 6 माशा और पुराना गुड़ 4 तोला लें। भिलावां के अलावा सबको महीन पीस लें। फिर भिलावां मिलाकर पीसें। तदुपरांत पारा मिलाएं और गुड़ मिलाकर इतना कूटें कि सभी एकाकार हो जाएं। अब इसकी 28 गोलियां बना लें। प्रतिदिन 1 गोली मलाई में लपेटकर खिलाएं। यह गोली दो उंगलियों से पकड़कर गले में रखें। कंठ या जिह्वा से इसका स्पर्श नहीं होना चाहिए। यह आमवात का दोष जड़ से दूर करती है।

फ़ालिज

शरीर के जिस अंग पर भी फ़ालिज पड़ती है, वह निष्क्रिय हो जाता है। वैसे फ़ालिज शरीर के आधे भाग पर पड़ती है, दाईं ओर या फिर बाईं ओर। यदि इसका इलाज तुरंत हो जाए तो अच्छा है, वरना रोगी के ठीक होने में मुश्किल पेश आती है।

नुस्खे

❑ सोंठ और अकरकरा 1-1 तोला, काली मिर्च, पीपल, बिरोजा, बिना फूल वाली लौंग, तेलिया, शुद्ध शिंगरफ—प्रत्येक 2 तोला लें। सबको अलग-अलग कूट-छानकर, इतना पान का रस डालें कि उसमें यह चूर्ण खरल करने के बाद गोलियां बंध जाएं। गोली बन जाने पर नित्य 4 गोली शहद के साथ खिलाएं। यह फ़ालिज में शीघ्र प्रभाव डालती हैं।

❑ गुल गावज़बान गीलानी और बर्ग बादरंजबूया 9 तोला 4.50 माशा, बसफ़ाइज फुस्तकी, काली हरड़ का बकला और मकोय—प्रत्येक 4 तोला लें। इन सबको 6 सेर मीठे जल में पकाएं। जब मात्र 2 सेर जल शेष रह जाए, तो आधा सेर छिला और साफ़ किया हुआ लहसुन उसमें डालकर पुनः पकाएं। लहसुन के गल जाने पर उसमें एक पाव गाय का ताज़ा दूध मिलाकर इतना पकाएं कि दूध उसमें जज़्ब हो जाए। इसी प्रकार आधा पाव गाय का घी डालकर पकाएं और उसे भी उसमें जज़्ब कराएं। अब 1 सेर शुद्ध शहद गरम करें और सोंठ, काली मिर्च, सफ़ेद मिर्च, पीपल, लौंग, तज, कबाबचीनी, कुलंजन, सफ़ेद बहमन, शकाकुल मिश्री, बाबूना के फूल, मरजंजोश—प्रत्येक 22.50 माशा, अंबर अशहब, केसर—प्रत्येक 4.50 माशा को बारीक पीसकर शहद में मिलाएं। फिर पहले की औषधि भी इसमें मिलाकर माजून तैयार कर लें। 4.50 माशा माजून नित्य सेवन करें। 40 दिन के सेवन से रोग सदा के लिए दूर हो जाता है।

❑ अकरकरा, जुंदबेदस्तर, कुस्त नीमकोफ्ता—प्रत्येक 7 माशा, गोल मिर्च, फरिफयून—10.50 माशा, पुराना मद्य 29 तोला 2 माशा और जैतून का तेल 24 तोला 7 माशा लें। कुस्त नीमकोफ्ता (अधकुटा कुट) व गोल मिर्च को रात भर के लिए पुराने मद्य (शराब) में भिगोकर रखें और सुबह उसे पकाएं। फिर जैतून का तेल मिलाकर इतना पकाएं कि मद्य शुष्क हो जाए और केवल तेल शेष रह जाए। अब फरिफयून और जुंदबेदस्तर को बारीक पीसकर मिला दें तथा पात्र (बर्तन) को आग से नीचे उतार लें। ठंडा हो जाने पर तेल को निथारकर बोतल में भर लें। इसके द्वारा नित्यप्रति मालिश करने से अंगों की निष्क्रियता समाप्त हो जाती है।

❑ गुठली निकाला हुआ आमला, हरड़ का बकला, चीता, जराबंद गिर्द, सालम मिश्री, चिलगोज़े की गिरी, बाबूना की जड़, बाबूना के फूल, नारियल की गिरी, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, कलमी दारचीनी—प्रत्येक 9 माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का 3 तोला, शुद्ध शहद 2 तोला और मिश्री 44 तोला लें। सबको कूट-पीस-छान और घोटकर मिश्री-शहद की गाढ़ी चाशनी में मिला दें। इसे 6 माशा की मात्रा में 12 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन कराएं। फ़ालिज के रोग में यह बहुत लाभकारी है।

❑ गंधक, शिंगरफ, हरा कसीस, पारद (पारा), आमला (गुठली निकाला हुआ), जायफल, शाहतरा के पत्ते—प्रत्येक 1 तोला, सुहागा, सौंफ़, कचूर, सूखा गुरुच—प्रत्येक 6 माशा लें। पहले पारा और गंधक की कज्जली बना लें। फिर शिंगरफ मिलाकर दो पहर खरल करें। अब शेष द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण मिलाएं और काग़ज़ी नींबू का रस थोड़ा-थोड़ा डालकर चार पहर तक खरल करें। अंत में बाजरे के बराबर गोलियां बनाकर रखें। 2 माशा गोलियां थोड़े से अदरक के रस के साथ सेवन करें। ये गोलियां फ़ालिज के लिए अतीव गुणकारी हैं।

❑ सम्मुलफार 3 रत्ती, सफ़ेद कत्था, बंसलोचन—सभी 5 माशा लें। फिर सबको बारीक पीसकर 12 तोला सोंठ के पानी में खरल करें और साबुत उड़द की भांति गोलियां बना लें। प्रतिदिन भोजन के बाद दोनों समय 1-1 गोली एक सप्ताह तक रोगी को खिलाएं। किन्तु तीसरे दिन गोली के सेवन के बाद मिश्री का शर्बत पिला दें। इससे खुलकर दस्त आ जाते हैं, जिससे अवशिष्ट दोष निकल जाता है।

❑ रूमी मस्तग़ी, क़लमी तज, जराबंद मृदहरज, पीपल, ऊद और हब्ज बलसां, असारून, ईरसा—प्रत्येक 6 माशा, जुंदबेदस्तर एवं केसर 3-3 माशा, मीठा सुरंजान, बूजीदान, बाबूना मूल—प्रत्येक 1 तोला तथा सोंठ 2 माशा लें। इन सबको बारीक पीस लें। अब गुठली निकाला हुआ हरड़ का मुरब्बा तथा मुनक़्क़ा—प्रत्येक 6 तोला को सौंफ़ के अर्क़ में पीस-छानकर रखें। फिर 6 तोला शुद्ध शहद और 15 तोला चीनी की चाशनी तैयार करें। शीतल हो जाने पर उसमें पिसे हुए द्रव्य मिला दें और 1 तोला कस्तूरी महीन पीसकर डालें। 3 माशा यह माजून शहद के शर्बत के साथ सेवन करें। फ़ालिज के लिए यह बहुत ही उत्तम औषधि है।

❑ चीता, इंद्रायन का गूदा 4-4 माशा, बूजीदान, बच, अकरकरा, दारचीनी—प्रत्येक 1.50 माशा, जवाशीर, सकबीनज, लाल गुग्गल (मुकल अरजक), फरिफयून, जुंदबेदस्तर—प्रत्येक 1 माशा, निशोथ, अयारज फैकरा—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको कूट-छानकर पानी के छींटे देकर चने के बराबर गोलियां बना लें। 7 से 9 माशा तक ये गोलियां माउल् अस्ल के साथ सेवन कराएं। इसका उपयोग फ़ालिज रोग के शमन के लिए बेहतर होता है।

लक़वा

चोट आदि लगने, विषैले पदार्थ अथवा वात उत्पन्न करने वाले शीतल खाद्य एवं पेय पदार्थों का अधिक उपयोग, विभिन्न रोगों के कारण, अत्यधिक मैथुन में संलग्न रहने, धातुक्षीणता, अधिक परिश्रम करने, ज़ोर-ज़ोर से अधिक समय तक बोलने, ऊंची-नीची ज़मीन या बिस्तर पर सोने के कारण स्नायु की चालन-शक्ति के नष्ट हो जाने का नाम लकवा (पक्षाघात) है। लकवा बहुत तरह का होता है,

जैसे—मेरुदंड में चोट लगने के कारण लकवा, मुख-मण्डल का लकवा, कंपकंपी लिए लकवा, नीचे तथा ऊपर के अंग का लकवा आदि। वैसे अधिकतर मुख-मण्डल का लकवा ही अधिक देखने में आता है। इसमें मुंह टेढ़ा हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ पुराना गुड़, गाय का घी और गेहूं का आटा 4-4 तोला, कलमी शोरा, जायफल, दारचीनी और लौंग 4-4 माशा लें। इनका हलवा तैयार करें तथा चेहरे पर बांध दें। इस परीक्षित व अनुभवसिद्ध प्रयोग से लकवा ठीक हो जाता है।

❑ सुरंजान, कृष्णबीज, अयारज फैकरा 1-1 तोला, श्वेत त्रिवृत 2 तोला, इंद्रायन का गूदा 1.50 तोला, अकरकरा, चीता, बच, बूजीदान, गुग्गल, पीपल—प्रत्येक 10 माशा, जवाशीर, सकबीनज (एक प्रकार का गोंद)—प्रत्येक 6 माशा, जुंदबेदस्तर, लौंग—प्रत्येक 4 माशा लें। इन सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाकर हरे गंदना के रस में चने के समान गोलियां बना लें। 3 से 5 माशा तक यह गोलियां 6 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें।

❑ अकरकरा, अयारज फैकरा और काली मिर्च 6-6 माशा लें। इन्हें आधा सेर पानी में उबालने के बाद छान लें। आवश्यकतानुसार क्वाथ लेकर दिन में दो-तीन बार गरारे करें। यह लकवे के लिए बहुत लाभदायक है।

❑ असली मोम 1 सेर और खारा नमक 3 सेर—दोनों को देगची में डालकर आग पर रखें। जब मोम पिघलने लगे तो उसमें 1 बोतल गुलाब का अर्क़ डालें। जब सब घुल-मिल जाए और अर्क़ समाप्त हो जाए तो उतारकर रख लें। इस मोम को सुहाता गरम रोगग्रस्त स्थान पर मलें। यह लकवे का शमन करने में सक्षम है।

❑ बकायन, एरंड, निर्गुण्डी, शोभांजन, काला धतूर और स्नुही के पत्ते—प्रत्येक 1 तोला 2 माशा लें। इन सबको कूटकर 1 सेर तिल के तेल में जलाएं। फिर तेल को छानकर सुरक्षित रख लें। सुहाता गरम यह तेल विकारग्रस्त अंग पर धीरे-धीरे मलें। यह लकवे के साथ-साथ हर प्रकार के वात दोषों का शमन करता है।

कटिवात

यदि वात कमर की मांसपेशियों में जम जाए तो उसे 'कटिवात' कहते हैं। कमर की ये पेशियां पीठ की रीढ़ का भार वहन करती हैं। इसलिए साधारणतः वायु के ज़्यादा हो जाने पर रोगी न तो सीधा बैठ सकता है और न ही खड़ा हो सकता है। सर्दी का लगना, पानी में भीगना, भारी चीज़ उठाना आदि कारणों से यह रोग एकाएक पैदा हो जाता है। कमर में तेज़ दर्द, दबाने या हिलने-डुलने से दर्द का बढ़ जाना आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। इसे 'कटिशूल' भी कहते हैं।

नुस्ख़े

❑ दारुहल्दी, देवदार, मुलेठी, काली मिर्च, फरिफयून—प्रत्येक 9 माशा लें। सबको पानी में पीसकर तीन गुना तिल के तेल में मिलाकर आग पर पकाएं। जब औषध-द्रव्य जल जाए तो उतारकर छान लें। वेदना-स्थल पर इसकी मालिश करके रूई से सिंकाई करें। इससे कमर का शूल (दर्द) दूर हो जाता है।

❑ पीपरामूल, सफ़ेद मूसली, पीपल, देशी अजवायन—प्रत्येक 1 तोला, मैदा लकड़ी, सोंठ, असगंध, नागौरी, सतावर—प्रत्येक 2 तोला लें। सबको कूट-पीस और छानकर, आवश्यकतानुसार पुराना गुड़ मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनाएं। 2 गोली सौंफ़ के अर्क़ 10 तोला के साथ सेवन करें। यह कटिवात में उपयोगी है।

❑ अजवायन, वादियान खताई, चिलगोज़े के बीज की गिरी, खीरा-ककड़ी के बीज की गिरी, अजमोदा मूल की छाल, गाजर के बीज, अजमोदा, तुख़्म इस्पिस्त—प्रत्येक 1 तोला 10 माशा, रूमी मस्तग़ी, केसर, कलमी तज, अकरकरा, अगर—प्रत्येक 7 माशा, कबाबचीनी, काली मिर्च, लौंग, जावित्री—प्रत्येक 10 माशा लें। सबको कूटकर कपड़े से छान लें। अब सबका भार करके उतनी ही मिश्री तथा दो गुना शहद लेकर चाशनी बनाएं। चाशनी बन जाने पर उसमें उक्त चूर्ण को अच्छी तरह मिला दें। इसे 7 माशा की मात्रा में 2 तोला सौंफ़ के अर्क़ के साथ सेवन करें। यह कटिवात को कुछ ही दिनों में जड़ से उखाड़ फेंकती है।

❑ गुलनार, रेवंद, काले तिल, मेहंदी की पत्तियां, कबाबचीनी, गुडूची सत्त्व, सत शिलाजीत, बड़ी इलायची के बीज, छोटी इलायची के बीज, बंसलोचन, गेहूं का सत, कतीरा गोंद, सफ़ेद कत्था, बंग भस्म, तालमख़ाना, लिसोढ़ा, खस, कुंदुर और मुलेठी—प्रत्येक 4 तोला लेकर कूट-पीस कपड़छन करें। इस चूर्ण में इतने ही भार की मिश्री पीसकर मिलाएं। 1 तोला चूर्ण नित्य गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे कटि की निर्बलता सहज ही दूर हो जाती है।

धनुर्वात

धनुर्वात को 'धनुपटंकार' भी कहते हैं, किन्तु आजकल के लोग इस नाम से संभवत: अनजान हैं। इसका अंग्रेजी नाम 'टेटनस' अधिक विख्यात है। इस रोग में शरीर धनुष क़ी तरह टेढ़ा हो जाता है। शरीर का कोई स्थान कट जाने पर उसमें धूलादि के साथ एक तरह के जीवाणु के घुसने पर यह रोग पैदा होता है। घोड़े की लीद में इस रोग के बीज (जीवाणु) बहुत रहते हैं। यह बहुत ही प्राणघातक रोग है। इसमें जबड़े बंद हो जाते हैं। रोगी मुंह नहीं खोल पाता। मुंह और गरदन की मांसपेशियों में तीव्र खिंचन होती है।

नुस्ख़े

❑ किन्ना (बिरोजा), जुंदबेदस्तर, अकरकरा, इंद्रायन का गूदा और काली मिर्च 7-7 माशे की मात्रा में लेकर, अच्छी तरह कूटकर उसमें आधा सेर रोग़न सुदाब मिलाएं। फिर कांच के बर्तन में डालकर दस दिन तक धूप में रखा रहने दें। रोज़ाना बर्तन को हिला दिया करें। इसके बाद पुनः उतने ही प्रमाण में उक्त द्रव्य डालकर दस दिन तक धूप में रखें और रोज़ हिला दिया करें। समय पूरा हो जाने पर तेल को किसी बोतल में छानकर भर लें। इस तेल की मालिश करने से धनुर्वात में लाभ होता है।

❑ कुचला (आवश्यकतानुसार) लेकर चीनी के किसी पात्र में डालकर उस पर घीकुंआर का रस इतना डालें कि कुचला से दो अंगुल ऊपर आ जाए। फिर उसे छाया में रखें। जब घीकुंआर का रस सूख जाए तो दो बार अदरक का रस डालकर तर एवं शुष्क करें। तदुपरांत बारीक पीसकर रख लें। 2 रत्ती यह चूर्ण मलाई में रखकर नित्य सेवन करें। यह धनुर्वात की गुणकारी औषधि है।

इरकुन्नसा (गृध्रसी वात)

नितंब से लेकर जांघ के पिछले भाग से होकर सायटिका नाम की जो सबसे बड़ी और मोटी नर्व पैर की एड़ी तक चली गई है, उसमें प्रदाह होने को 'गृध्रसी' या सायटिका कहते हैं। बहुत ज्यादा सर्दी लगना, आंतों में गांठ-गांठ मल इकट्ठा होकर सायटिका नर्व पर दबाव पड़ना, जरायु के निकटवर्ती किसी स्थान पर अर्बुदादि होकर या भ्रूण के साथ जरायु का सायटिका नर्व पर दबाव देना, वात या गठिया, फारसेप से प्रसव कराना, कशेरुका रोग आदि कारणों से इसकी उत्पत्ति होती है। इसमें दर्द की एक लहर-सी उठती है जो रोगी को बेचैन कर देती है।

नुस्ख़ा

❑ गुलाब के फूल, सोंठ, सकमूनिया, तिल—प्रत्येक 10.50 माशा, निशोथ, श्वेत त्रिवृता 4 तोला 4.50 माशा, शहद 43 तोला 9 माशा, बादाम का तेल 1.50 तोला, पीली हरड़ 2 तोला 4 रत्ती; अजमोदा, सौंफ़, सफ़ेद मिर्च, एलुआ, सातर, सेंधा नमक, मेहंदी की पत्तियां, समुद्रझाग—प्रत्येक 5.25 माशा, सफ़ेद सुरंजान 1 तोला 9 माशा, बूजीदान, माहीजहरज, कबर की जड़, चीता, सफ़ेद जीरा—प्रत्येक 7 माशा लें। त्रिवृता व निशोथ को कपड़छन चूर्ण कर बादाम के तेल में स्नेहाक्त करें। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर शहद के साथ माजून बनाएं तथा उक्त बादाम के तेल में स्नेहाक्त चूर्ण भी मिला दें। 7 माशा यह माजून ताजे पानी से सेवन करें। यह गृध्रसी वात की उत्तम औषधि है।

कम्पवात

कम्पवात में हाथ हिलते रहते हैं। व्यक्ति चाहे जितना अपने हाथों को वश में रखने का प्रयास करे, किन्तु वह उसमें सफल नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्तियों को अपने हस्ताक्षर करने में भी बड़ी मुश्किल पेश आती है।

नुस्ख़े

❑ नारियल की गिरी 2.25 तोला, गंदना के बीज 3.75 तोला, अकरकरा 2.25 तोला, कलौंजी 13.50 माशा, राई 22.50 माशा, चिलगोज़े की गिरी, हब्बतुलख़ज़रा की गिरी—प्रत्येक 1.50 तोला लें। इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनाएं। उससे तिगुनी मात्रा में शहद लेकर गरम करें और उसमें उक्त चूर्ण को मिलाकर माजून बनाएं। 9 माशा माजून सप्ताह में केवल तीन बार सेवन करें। यह माजून कम्पवायु नाशक है।

❑ मालकांगनी, धतूरा, तारपीन का तेल—प्रत्येक 5 तोला, लौंग का तेल 1 तोला एवं रोग़न मोम 5 तोला लें। सबको मिलाकर पीड़ित अंग पर लेप करें और रूई रखकर बांध दें। यह प्रयोग कम्पवात में उपयोगी है।

❑ दालचीनी, सूखा पुदीना, काबुली हरड़—प्रत्येक 7 माशा, हींग, खूमी, निशोथ, जुंदबेदस्तर—प्रत्येक 4 माशा, अकरकरा और केसर—प्रत्येक 3 माशा, संखिया 2 रत्ती; उस्तूखूदूस, लौंग, बालछड़—प्रत्येक 10.50 माशा लें। सभी द्रव्यों को बारीक पीसकर शहद के साथ काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लें। 2 से 4 गोली प्रातः और सायंकाल भोजन के बाद सेवन करें। इससे कम्पवात में लाभ होता है।

अंगघात (पोलियो)

यह बच्चों को होने वाला सबसे भयंकर रोग है। इस रोग के कारण बच्चे विकलांग हो जाते हैं। प्रारंभ में इस रोग का कुछ पता नहीं चलता, किन्तु जब इस रोग से शरीर का कोई अंग विकृत हो जाता है, तो ज्ञात होता है कि रोग का प्रकोप हो चुका है। यह 2 से 12 वर्ष के बच्चों को अधिक होता है। यदि शुरू में ही बच्चों को टीके आदि लगवा दिए जाएं तो इससे बचाव किया जा सकता है।

नुस्ख़े

❑ कलमी दालचीनी, लौंग, तेजपाता—प्रत्येक 1 तोला, नरकचूर 2 तोला

दारुहल्दी, उर्द गर्की—प्रत्येक 1 तोला, गुलाब का अर्क़ 1 सेर, तिल का तेल 2 सेर, मजीठ 1 पाव; कायफल, तीज, छड़ीला—प्रत्येक 4 तोला, बालछड़, नागरमोथा—प्रत्येक 2 तोला लें। समस्त द्रव्यों को यवकुट करके रात्रि में गुलाब अर्क़ में भिगो दें। सुबह उसे कलईदार देगची में पकाएं। जब अर्क़ आधा जल जाए, तो तिल का तेल मिलाकर इतना पकाएं कि शेष अर्क़ भी जल जाए और सिर्फ़ तेल बाक़ी बचे। अब देगची को आग से उतारकर, तेल को कपड़े से छानकर बोतलों में भर लें। एक सप्ताह तक बोतलों को भूमि में एक हाथ गहरा गड्ढा करके दबा दें। इसके बाद निकालकर, सुहाता गरम तेल पीड़ित अंग पर मलें। यह तेल अंगघात (पोलियो) में बहुत लाभ करता है।

❑ केसर 1 तोला 10.50 माशा, बालछड़, अहिफेन, अकरकरा—प्रत्येक 4 माशा, काली और सफ़ेद मिर्च, ख़ुरासानी अजवायन—प्रत्येक 7.50 तोला लें। सबको अलग-अलग कूट-छानकर तीन गुना शहद में मिलाकर तीन महीने तक जौ के बीच बोरी में दबाए रखें। इसके उपरांत उपयोग करें। 4 माशा यह औषधि 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सुबह के वक़्त सेवन कराएं। यह अंगघात के लिए विशेष गुणकारी है।

वातज नाड़ीशोथ

वातज नाड़ीशोथ बड़ी उम्र के लोगों को अधिक होता है। शोथ (सूजन) के कारण बहुत पीड़ा होती है। निम्नलिखित नुस्ख़ों की औषधियां इसमें बड़ी कारगर साबित होती हैं।

नुस्ख़े

❑ मेहंदी के पत्ते, सूखा मकोय, कड़वा कूट, कड़वा सुरंजान, सोंठ, काला जीरा—प्रत्येक 6 माशा लें। सर्वप्रथम आवश्यकतानुसार सिरका लेकर इन औषधियों को उसमें अच्छी तरह पीस लें। फिर थोड़ा-सा गुल रोग़न मिलाकर पीड़ित स्थान पर लेप करें। यह वातज नाड़ीशोथ के लिए लाभदायक है।

❑ सनाय मक्की के पत्ते 10 माशा, श्वेत त्रिवृत् 4 माशा, काला जीरा 4 माशा, सूखा पुदीना 4 माशा, काली मिर्च 4 माशा एवं मीठा सुरंजान 1.50 तोला—इन सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। रात को सोते समय 4 माशा यह चूर्ण ताज़े पानी के साथ सेवन करें। यह वातज नाड़ीशोथ और आमवात में अतीव लाभकारी है।

❑❑

5

मस्तिष्क रोग

वैसे तो मस्तिष्क से सम्बंधित अनेक रोग हैं, किन्तु उनमें प्रमुख सिर दर्द, अनिद्रा, आधासीसी का दर्द, याददाश्त की कमी, मस्तिष्क की दुर्बलता, उन्माद, मिरगी (अपस्मार) एवं हिस्टीरिया आदि प्रमुख हैं। इस अध्याय में हम इन्हीं रोगों के निवारण की चर्चा कर रहे हैं।

सिर दर्द

सिर दर्द इस बात की चेतावनी देता है कि शरीर में कहीं कोई ख़राबी है। वह ख़राबी शारीरिक क्रियाओं की हो सकती है, मानसिक हो सकती है और किसी अंग-विशेष की भी हो सकती है। पेट की ख़राबी से भी सिर दर्द हो जाता है। सिर दर्द के अनेक कारण होते हुए भी पाचन और विजातीय द्रव्यों का निष्कासन उचित रूप में न होने पर विषाक्त रक्तप्रवाह को ही सिर दर्द का मूल कारण मानना चाहिए। जुकाम, नाड़ी-दौर्बल्य, दिल को चोट पहुंचाने वाली कोई बात, शरीर में ओषजन की कमी, रक्ताल्पता, मस्तिष्क में रक्ताधिक्य, यकृत की शिथिलता, अधिक श्रम, अल्पनिद्रा, मासिकस्राव की ख़राबी, आंखों पर अस्वाभाविक ढंग से ज़ोर देना तथा रक्तचाप आदि से भी सिर दर्द हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ कुंदुर, अंजरून, आंवला, गिल अरमनी—प्रत्येक 7 माशा, मुरमकी, अहिफेन, ख़ुरासानी अजवायन के बीज, केसर, लुफाह जड़ की छाल—प्रत्येक 1 तोला 5.50 माशा लें। सबको कूट-छानकर गुलाब के अर्क़ और काहू के रस में मिलाकर टिकिया बनाएं। 1 टिकिया पीसकर कनपटी और मस्तक पर लेप करें। यह हर तरह के सिर दर्द में लाभकारी है।

❑ काबुली हरड़ का बक्कल, काली हरड़, गुल बनफ़शा, भुना हुआ अमलतास का गूदा—प्रत्येक 2 तोला, छिला हुआ निशोथ, सूखा धनिया—प्रत्येक 8 तोला,

बादाम का मग़ज़ 6 तोला, खशखश 3 तोला, सफ़ेद चंदन, कतीरा—प्रत्येक 3 तोला, पीली हरड़ का बक्कल, गुलाब के फूल—प्रत्येक 9 तोला तथा आंवला 5 तोला लें। सबको अलग-अलग बारीक पीसकर 5 तोला बादाम के तेल में जज़्ब करें। फिर 3 पाव मिश्री की चाशनी करके उसमें मिला दें। 1 तोला सुबह और 1 तोला शाम को गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह सिर दर्द के लिए लाभकारी है।

❑ बहेड़े का बक्कल, गुठली निकाला हुआ आंवला, बंसलोचन, गुलाब के फूल, नीलोफ़र के फूल—प्रत्येक 22.50 माशा, सफ़ेद चंदन, कतीरा—प्रत्येक 12.50 माशा, सफ़ेद निशोथ, सूखा धनिया—प्रत्येक 7.50 तोला, पीली हरड़ का बक्कल, काबुली हरड़ का बक्कल, काली हरड़, मुशब्बी सकमूनिया और बनफ़शा के फूल—प्रत्येक 3 तोला 9 माशा लें। सबको कूट-छानकर 11 तोला 3 माशा बादाम के तेल में स्नेहाक्त करें। फिर उन्नाब, सपिस्तां—प्रत्येक 100 नग, बनफ़शा के फूल 2 तोला 9 माशा का काढ़ा बनाएं। इसे छानकर औषधि से डेढ़ गुना वज़न में हरड़ के मुरब्बे का शीरा लेकर सभी को उसमें मिला दें। 7 माशा यह औषधि अर्क़ गावज़बान 12 तोला के साथ सेवन करें। यह सिर दर्द को दूर करने के साथ-साथ मस्तिष्क का शोधन भी करता है।

❑ मुजव्वफ, सफ़ेद निशोथ, मुलेठी का सत, गुलाब के ताज़ा फूल—प्रत्येक 7 माशा, सकमूनिया, गारीकून—प्रत्येक 3.50 माशा लें। सबको कूट-छानकर पानी में घोटकर गोलियां बना लें। 7 माशा गोलियां रोज़ सुबह ताज़े पानी से खाएं। यह सिर दर्द के लिए लाभकारी हैं।

❑ रेबंद चीनी 2.50 तोला, सोंठ 1.25 तोला, बबूल का गोंद 1.25 तोला और धतूर का बीज 3.25 तोला लें। बबूल के गोंद को पानी में घोलकर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर उसमें मिलाएं और चने के बराबर गोलियां बना लें। ये गोलियां सिर दर्द मिटाती हैं।

आधासीसी का दर्द

इस दर्द को अर्धावभेदक, अधकपारी अथवा आधे सिर का दर्द भी कहते हैं। यह साधारण सिर दर्द से अधिक कष्टदायक होता है। हकीमों का मत है कि यह दर्द बुद्धिमान लोगों अर्थात् मस्तिष्क के अधिक काम करने वाले, अधिक विचारशील एवं चिंतित लोगों को ही ज़्यादा होता है। युवतियों में काम-इच्छा को अधिक समय तक दबाकर रखने अथवा ऋतुस्राव की विकृति के कारण आधे सिर का दर्द हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ सतावर 3.50 तोला, मुलेठी 4 तोला 8 माशा, सूखा आंवला 10 तोला, मवेज मुनक़्क़ा, सेंधा नमक, पीपल—प्रत्येक 14 माशा, पीली हरड़ का बक्कल,

लौह भस्म—प्रत्येक 2 तोला 4 माशा लें। इनमें कूटने योग्य द्रव्यों को कूट-छानकर 2 तोला बादाम के तेल में मिलाएं। फिर मवेज मुनक़्क़े पीसकर मिश्री 20 तोला एवं शुद्ध शहद 39 तोला की चाशनी में मिलाकर उक्त द्रव्यों के चूर्ण भी इसमें मिला दें। इसे 5 माशे की मात्रा में रोज़ाना ताज़े पानी द्वारा सुबह और रात में सोते समय 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ खाएं। यह आधे सिर दर्द के लिए अतिशय गुणकारी है।

❑ सूखा धनिया 4 तोला, उस्तूखूदूस 6 तोला तथा काली मिर्च के 72 दाने—इन सबको कूट-छानकर चूर्ण बना लें। 10 माशा यह चूर्ण सूर्योदय से पहले पानी के साथ लें। यह हर तरह के दर्द के लिए लाभकारी है।

❑ ख़ुरासानी अजवायन, अहिफेन, कपूर—प्रत्येक 1 माशा लें। सबको पानी में पीसकर मसूर के बराबर गोलियां बनाएं। 1 या 2 गोली गुलरोग़न में घोलकर नाक में टपकाएं। इस प्रयोग से आधे सिर का दर्द दूर होता है।

मस्तिष्क की दुर्बलता

मस्तिष्क की दुर्बलता से चक्कर आते हैं, खड़े होते ही आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है, दृष्टि धूमिल हो जाती है, सोचने-समझने की शक्ति जवाब दे जाती है और अधिक सोचने के कारण सिर दर्द होने लगता है।

नुस्ख़े

❑ बहेड़ा और पीली हरड़ का बक्कल 2 तोला, बिना गुठली का आंवला 2 तोला, उस्तूखूदूस 2 तोला, मीठे बादाम का मग़ज़ 5 तोला, मीठे कद्दू के बीज का मग़ज़ (गिरी) 6 तोला, तरबूज़ के बीज का मग़ज़ 6 तोला, खीरा-ककड़ी के बीज का मग़ज़ 6 तोला, नारियल की गिरी 6 तोला, तुख़्म खशखश सफ़ेद 2 तोला, चांदी के वर्क़ 25 नग, मिश्री 2 सेर और बादाम का तेल 5 तोला लें। पहले मिश्री की चाशनी बनाएं, फिर शेष द्रव्यों को पीसकर इसमें मिलाएं। बाद में चांदी का वर्क़ मिलाकर अच्छी तरह घोटें। इसे 1 से 2 तोला तक नित्य सेवन करें। यह मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है तथा नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है।

❑ पन्ना 5 माशा, माणिक 3 माशा, अंबर 1 माशा, सोने के वर्क़ 1 माशा, चांदी के वर्क़ 3 माशा तथा प्रवालशाखा 1 तोला लें। इन सबको 10 तोला केतकी के अर्क़ में ख़ूब खरल करके टिकियां बना लें। इसके बाद टिकियों को मिट्टी की हांडी में बंद करके 10 सेर कंडों की अग्नि दें। शीतल हो जाने पर निकालकर सुरक्षित रखें। इसमें से 2 चावल भस्म 1 तोला सादा ख़मीरा गावज़बान के साथ सेवन करें। यह विस्मृति आदि मस्तिष्क-दौर्बल्यजनित व्याधियों में लाभकारी है।

❑ सोंठ, काली मिर्च, पीपल, गुठली निकाला हुआ आंवला, काली हरड़, चीता, जरावंद मुदहरज, सालम मिश्री, बाबूना की जड़, चिलगोज़ा की गिरी, ताज़ा खोपरा—प्रत्येक 3 तोला, बीज निकाला हुआ मुनक़्क़ा 9 तोला और बाबूना 1.50 तोला लें। सबको कूट-छानकर दुगुने शहद की चाशनी में मिलाएं। इसे 7 माशा की मात्रा में सौंफ़ का अर्क़ 6 तोला और मकोय का अर्क़ 6 तोला के साथ सुबह के समय सेवन करें। यह मस्तिष्क रोगों के लिए लाभकारी है। इससे स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

❑ मीठे बादाम, मीठे कद्दू और तरबूज़ के बीज की गिरी—प्रत्येक 3 माशा, बबूल का गोंद 3 माशा, गेहूं का सत 3 माशा और मिश्री 2 तोला लें। इन सबको पानी में पीसकर धीमी आंच पर रखें। गाढ़ा हो जाने पर उतारकर सेवन करें। यह मस्तिष्क की रुक्षता, नज़ला और सूखी खांसी के लिए गुणकारी है।

❑ गावज़बान के पत्ते 3.50 तोला, गावज़बान के फूल, सूखा धनिया, सफ़ेद बहमन, लाल बहमन, सफ़ेद चंदन, कतरा हुआ अब्रेशम, बालंगू बीज, फरंजमुश्क और बादरंजबूया—प्रत्येक 1 तोला लें। इन्हें रात को 2 सेर पानी में भिगोकर सवेरे काढ़ा बनाएं। जब एक तिहाई पानी जल जाए, तो छानकर 1 सेर चीनी और एक पाव शुद्ध शहद मिलाकर चाशनी करें। ख़ूब गाढ़ा होने पर उसे 1 तोला की मात्रा में चांदी के वर्क़ में लपेटकर 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह हृदय और मस्तिष्क को पुष्ट बनाकर आंखों की रोशनी बढ़ाता है।

अनिद्रा

नींद बिल्कुल न आना या अच्छी तरह न आना 'अनिद्रा रोग' कहलाता है। इसमें रोगी जाग-जाग पड़ता है और स्वप्न देखा करता है। जब मस्तक में रक्त का दबाव होता है तो नींद नहीं आती। मानसिक उत्तेजना, उत्कंठा, सुस्ती या पक्वाशय की गड़बड़ी से अथवा किसी दूसरे रोग के साथ लक्षण के रूप में नींद न आने का रोग उत्पन्न हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ गुलाब के फूल, सफ़ेद चंदन, बालछड़, छड़ीला—प्रत्येक 13.50 माशा, गावज़बान 3 तोला 9 माशा और बादरंजबूया 1 तोला 10.50 माशा लें। सबको आधा सेर गुलाब के अर्क़ और आधा सेर बारिश के पानी में रात भर भिगोकर सुबह इतना पकाएं कि मात्र तीन पाव जल-अर्क़ शेष रह जाए। उसे छानकर आधा सेर मिश्री मिलाकर चाशनी करें। इस चाशनी में प्रति तोला के हिसाब से 2.50 रत्ती के लगभग गावज़बान अर्क़ मिला दें। 2 तोला नित्य इसका सेवन करें। इससे अनिद्रा का रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

❑ मीठे बादाम, पिस्ते, फिंदक, चिलगोजे, मीठे कद्दू, अखरोट की गिरी और कुंजद मुकश्शर—प्रत्येक 2 तोला लें। इन्हें कूटकर गरम करें और निचोड़ कर तेल निकालें। इस तेल को सिर पर अच्छी तरह मलें। इस प्रयोग से अनिद्रा दूर होती है और प्रगाढ़ निद्रा आती है। कुछ दिनों के सेवन से अनिद्रा रोग सदा के लिए चला जाता है।

❑ पोस्ते की डोंडी, काहू के बीज, ख़ुरासानी अजवायन 4-4 तोला, धतूर और काली खर्बक 2-2 तोला लें। सबको अच्छी तरह कूटकर पानी में पकाएं। जब पानी ख़त्म हो जाए तो हाथ से अच्छी तरह मसलकर उसमें तिल का तेल डालकर पकाएं। इसके बाद उतारकर रखें और ठंडा होने पर तेल को छान लें। इस तेल की मालिश सोते समय माथे, सिर, हथेलियों एवं तलवों पर करने से कुछ ही देर में गहरी नींद आ जाती है।

याददाश्त की कमी

बहुत से बच्चों को स्कूल का पढ़ा-लिखा याद नहीं रहता। औरतों में हर बात भूल जाने की आदत हो जाती है। पुरुषों में याददाश्त की इतनी कमी हो जाती है कि काम-धंधे का हिसाब लगाना भी उनके लिए मुश्किल हो जाता है। याददाश्त की कमी के कई कारण होते हैं, जैसे—पूरी नींद न लेना, विश्राम न करना, शोर-गुल वाले स्थान में रहना, जननेन्द्रिय की थकावट, बेमेल विवाह, आंखों पर जोर डालकर उनसे ज्यादा काम लेना, कठिन रोग जनित दुर्बलता, शरीर से विकलांग होना या अंग भंग हो जाना, गंदे वातावरण में रहना आदि याददाश्त की कमी के मुख्य कारण हैं।

नुस्खे

❑ पीपल, गावज़बान, बिल्लीलोटन—प्रत्येक 3.50 तोला, काकनज 3.25 तोला, कुंदुर 2 तोला, मस्तग़ी 14 माशा तथा चीनी समस्त द्रव्यों के भार जितनी लें। चीनी के अलावा सबको बारीक पीसें और छान लें। इसके बाद चीनी पीसकर उसमें मिला दें। 7 माशा की मात्रा में यह चूर्ण नित्य जल से सेवन करने पर याददाश्त बढ़ती है तथा अन्य मानसिक विकार दूर होते हैं।

❑ सोद कूफी, बच, कुंदुर 3-3 तोला, सोंठ, काली मिर्च—प्रत्येक 1.50 तोला और शहद 36 तोला लें। शहद को छोड़कर सबका कपड़छन चूर्ण बनाएं। फिर शहद की चाशनी बनाकर चूर्ण उसमें मिला दें। इस तरह माजून तैयार हो जाएगा। 5 माशा माजून 10 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ रोज़ाना खाएं। याददाश्त बढ़ाने का यह बेहतरीन नुस्ख़ा है।

❑ अंबर अशहब, कतरा हुआ अब्रेशम, इज़ख़िर, ऊद, बिल्लीलोटन, काबुली हरड़ का बकला, दालचीनी, कुंदुर और सोने के वर्क़—प्रत्येक 4.50 माशा, पिस्ता, खोपरा, बादाम, हब्बतुल् ख़जरा, फिंदक और चिलगोज़ा की गिरियां—प्रत्येक 9 माशा और शहद 22.50 तोला लें। सबको साफ़ और पीस करके शहद की चाशनी में मिलाकर माजून तैयार करें। 4.50 माशा माजून रोज़ाना खाएं। इससे याददाश्त में कमी नहीं होती। यह माजून बेवकूफ़ों को भी अक़्लमंद बना देता है।

❑ विलायती अतीमून, भिलावां—प्रत्येक 3 तोला, तज, जराबंद मुदहरज, बच, केसर, दारचीनी, मस्तग़ी—प्रत्येक 2.25 तोला, कुश्त शीरी, सुदाब बीज, सफ़ेद मिर्च—प्रत्येक 3 तोला, गारीकून 9 तोला और पीला एलुआ 22 तोला लें। सबको पीस-छानकर चूर्ण बनाएं और उससे तीन गुना शहद की चाशनी बनाकर चूर्ण को उसमें मिला दें। गाढ़ा होने पर उतारकर रखें। माजून तैयार है। 4 माशा माजून ताज़ा पानी या 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह दिमाग़ को ताक़त देता है और स्मरण शक्ति (याददाश्त) को पुष्ट करता है।

उन्माद

मस्तिष्क में ज़ख़्म और प्रदाह होने के कारण या चोटादि लग जाने की वजह से स्वाभाविक क्रिया में गड़बड़ी हो जाती है। इसी को 'उन्माद' या पागलपन कहते हैं। नींद न आना, सिर दर्द, चेहरा या आंखों की भाव-भंगिमा बदल जाना, लगातार बकना, चित्त में भ्रम पैदा होना; कभी रोना, कभी जोर से चिल्लाना और कभी हंसना आदि इस रोग के लक्षण हैं। अनिद्रा एवं भूख न लगना इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

नुस्ख़े

❑ उन्नाब 10 दाना, लिसोढ़ा 20 दाना, अफ़्तीमून 2 तोला, सनायमक्की 2 तोला, गावज़बान, शाहतरा, बस्फाइज फुस्तकी, उस्तूख़ूदूस, ऊदसलीब, कंतूरियून क्षुद्र, बिल्लीलोटन, बनफ़शा और नीलोफ़र के फूल, मकोय, परसियावाशां, कासनी मूलत्वक, सौंफ़, मुलेठी, कासनी बीज, खीरा-ककड़ी के बीज, खरबूज़े के बीज, पीली हरड़ का बकला, काबुली हरड़ का बकला, काली हरड़ और गुलाब के फूल—प्रत्येक 9 माशा लें। कूटने योग्य द्रव्यों को यवकुट करके (अफ्तीमून को छोड़कर) डेढ़ पाव पानी में क्वाथ करें। फिर उसे छानकर अमलतास का गूदा और यवास शर्करा—प्रत्येक 4 तोला, ख़ुरासानी शीरखिश्त तथा सूर्यातपी गुलकंद—प्रत्येक 3.75 तोला उसमें घोलकर अफ्तीमून भी शामिल करें। यह मात्र 1 मात्रा है। ऐसी 1 मात्रा क्वाथ 4.50 माशा मीठे बादाम का तेल मिलाकर पिलाएं। यह उन्माद रोग की श्रेष्ठ औषधि है।

❑ सकमूनिया, अनीसून, लौंग—प्रत्येक 3.50 माशा, गारीकून 17.50 माशा, वसफाइज 14 माशा, अयारिज फैकरा 21 माशा तथा लाजवर्द (धोया हुआ) 10.50 माशा लें। इन सबको अजमोदा के रस में पीसकर टिकिया बनाएं। 10.50 माशा प्रमाण में यह टिकिया माउल् जुब्न के साथ खिलाएं। यह उन्माद रोग के लिए लाभकारी है।

❑ अनबिध मोती, कहरुवा शमई—प्रत्येक 6.75 माशा, कतरा हुआ अब्रेशम, अंतर्धूम में जलाया हुआ केकड़ा—प्रत्येक 6 माशा, सुवर्ण भस्म 2.25 माशा, फरंजमुश्क व बादरूज बीज, उस्तूखूदूस—प्रत्येक 10.50 माशा, सफ़ेद बहमन, ऊदखाम, हज्र अरमनी, लाजवर्द, तज, दारचीनी, केसर, क्षुद्रैला, जदवार खताई—प्रत्येक 4.50 माशा, अफ़्तीमून 11.25 माशा, याक़ूत रुम्मानी, गावज़बान के फूल, कासनी बीज, तिब्बती कस्तूरी, कपूर कैसूरी—प्रत्येक 4.50 माशा, दरूनज अकरबी, बालछड़, यवास शर्करा, अंबर अशहब—प्रत्येक 7 माशा, खीरे के बीज की गिरी, गुलाब के फूल—प्रत्येक 18 माशा, गुलाब का अर्क़ 33.50 तोला, शर्बत हुम्माज, शर्बत सेब, शर्बत अनार—प्रत्येक 11.25 तोला तथा शहद आवश्यकतानुसार लें। यथाविधि माजून तैयार करके चांदी के पात्र में 40 दिन तक सुरक्षित रखें। इसके उपरांत सेवन करें। यह उन्माद रोग के लिए लाभकारी है, साथ ही मस्तिष्क को पुष्टि भी प्रदान करता है।

मिरगी (अपस्मार)

मिरगी आवेश सम्बंधी रोग है। एकाएक बेहोश हो जाने के बाद अकड़न होकर यह रोग पैदा होता है। इसके पूर्व का लक्षण है, सारे शरीर में कीड़ा रेंगने का अनुभव होना, पर कितनी ही बार ये लक्षण भी नहीं प्रकट होते। दुःख, शोक, भय, क्रोध आदि मानसिक आवेग, अधिक इंद्रिय सेवन, हस्तमैथुन आदि दुराचार, मादक पदार्थों का अत्यधिक सेवन और माता-पिता को यह रोग होना आदि इसके उत्तेजक कारण हैं। दांत बंध जाना, श्वासकष्ट, चेहरा बिगड़ जाना, आंख की पुतली का ऊपर चढ़ जाना और घूमते रहना, आंखें खुली रहना, मुंह से फेन (झाग) निकलना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। यह अवस्था 5 से 20 मिनट तक और कभी-कभी कुछ अधिक समय तक रहती है।

नुस्खे

❑ अकरकरा, बसफाइज फुंतुकी, अफ़्तीमून और उस्तूखूदूस 3-3 तोला लेकर सबको कूट-छानकर गुठली निकाला हुआ मुनक़्क़ा 1.50 पाव में मिलाकर माजून बनाएं। 1 से 1.50 माशा तक यह माजून रोज़ाना सेवन करें। मिरगी रोग के शमन के लिए यह अचूक नुस्खा है।

❑ ऊदसलीब 1.50 तोला, अकरकरा 1.50 माशा, बीज निकाले मुनक्के आधा सेर, पीली हरड़, काबुली हरड़, गुठली निकाला आंवला, उस्तूखूदूस—प्रत्येक 3 तोला लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर, मुनक्कों को सिल पर पीसकर मिलाएं और थोड़ा गरम कर लें। इसे 7 माशा की मात्रा में रोज़ाना पानी के साथ सेवन करें। यह मिरगी नाशक है—दौरों को दूर करता है।

हिस्टीरिया

नासमझ या अनपढ़ लोग हिस्टीरिया के दौरों को देखकर गलतफ़हमी के शिकार हो जाते हैं। वे समझते हैं कि उनकी बहू-बेटी पर किसी भूत या आसेब का असर हो गया है। वे रोगिणी का सही इलाज कराने के बजाय आमिलों व झाड़-फूंक करने वालों के फेर में पड़ जाते हैं। उनकी सादगी और जिहालत का लाभ उठाकर पेशेवर आमिल इनसे ख़ूब पैसा लूटते हैं। हिस्टीरिया के दौरों का कारण विशेषत: स्नायुमण्डल की क्रिया में गड़बड़ी पैदा होना, मासिक धर्म का रुक जाना तथा मानसिक तनाव आदि हैं। माहवारी की ख़राबी के कारण गैस का दबाव मस्तिष्क को जकड़ लेता है, जिसके कारण रोगी को दौरे पड़ने शुरू हो जाते हैं। यह रोग विशेषकर स्त्रियों को अधिक होता है।

रोग का हमला होने पर ऐसा मालूम होता है कि पेट से गले तक कोई चीज़ या गोली की तरह कुछ चढ़ रहा है। स्नायविक दुर्बलता ही हिस्टीरिया का प्रधान कारण है। इसका दौरा होने के पहले ही प्राय: रोगिणी को अहसास हो जाता है और वह सावधान हो जाती है। कोई कसकर मुट्ठी बांध लेती है तो कोई धनुष की तरह टेढ़ी हो जाती है। श्वास में आवाज़ होती है। दौरे के समय रोगिणी हाथ-पांव पटकती है, कभी रोती और कभी हंसती है। कभी-कभी उसमें इतनी शक्ति आ जाती है कि लोग उस पर भूतबाधा का प्रकोप समझ लेते हैं। थोड़ी देर के लिए रोगिणी बेहोश भी हो जाती है।

अधिक आयु हो जाने पर भी जिन लड़कियों का विवाह नहीं हो पाता या किशोरावस्था में लड़कियां किसी से प्रेम करती हैं और प्रेमी उन्हें छोड़कर चला जाता है या जिससे वे विवाह करना चाहती हैं, उनसे विवाह नहीं होता अथवा गंभीर चिंता, शोक, दु:ख और अतृप्त काम-वासना से पीड़ित होने पर लड़कियां इस रोग का शिकार होती हैं।

नुस्ख़े

❑ ऊदसलीब 4.50 माशा, हींग 4.50 माशा, जुंदबेदस्तर 7 माशा और कस्तूरी 4.50 माशा लें। इन सबको बारीक पीसकर अर्क़ दारचीनी या अर्क़ सौंफ़ के साथ उड़द के बराबर गोलियां बनाएं। 2 गोली रोज़ाना 12 तोला अर्क़ सौंफ़ के साथ सेवन करें। ये गोलियां हिस्टीरिया के लिए बड़ी गुणकारी हैं।

❑ खीरा-ककड़ी के बीज 8 तोला, कासनी की जड़ 10 तोला, खरबूजे के बीज, कसूस बीज, अंजल मगज और कुरफा मगज—प्रत्येक 4 तोला, लाल गुल्म 3 तोला, गावजबान के फूल 2 तोला, सिरका 1 बोतल और मिश्री 1.75 सेर लें। इनका यथाविधि शर्बत बनाएं। 4 तोला यह शर्बत 12 तोला सौंफ के अर्क में मिलाकर उपयोग करें। यह शर्बत दिमाग को ताजगी देता है तथा हिस्टीरिया के दौरे में राहत पहुंचाता है।

❑ कस्तूरी 1 रत्ती; कपूर, हींग, असारून और बालछड़—प्रत्येक 1 माशा लें। सबको बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। 1 गोली सुबह नाश्ते के बाद सेवन करें। यह हिस्टीरिया शमन के लिए एक सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

❑ कश्मीरी केसर, रूमी मस्तगी, सफेद और लाल चंदन, सूखा धनिया—प्रत्येक 7 माशा, अम्बर अशहब 3 माशा, कस्तूरी 2 माशा, मिश्री 16 तोला, शुद्ध शहद 7 तोला, अबींध मोती, प्रवालशाखा, कहरुवा, दरूनज, कतरा हुआ अब्रेशम, नरकचूर, सफेद बहमन—प्रत्येक 7 माशा, लौंग 3 माशा, छड़ीला, बालछड़, क्षुद्रैला बीज, तमालपत्र, दालचीनी, जुंदबेदस्तर—प्रत्येक 3.50 माशा लें। मिश्री और शहद के अलावा शेष सभी को कूट-पीस-छानकर चूर्ण बनाएं। फिर मिश्री और शहद की चाशनी तैयार करके उसमें उक्त चूर्ण को मिला दें। इस प्रकार सेवन योग्य माजून बनकर तैयार हो जाएगा। 2 से 4 माशा माजून अर्क गुलाब और गावजबान के साथ उपयोग करें। यह माजून हिस्टीरिया रोग के शमन के लिए सर्वश्रेष्ठ है। 60 दिन तक इस माजून का नित्य सेवन किया जाना चाहिए।

❑❑

6

कान, नाक एवं गले के रोग

कान, नाक एवं गला मनुष्य के अति महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इन अंगों में कोई ख़राबी होने पर वह बहुत बेचैनी तथा कष्ट अनुभव करता है। अतः इन ज्ञानेन्द्रियों पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है। इस अध्याय में हम इन्हीं विषयों पर दृष्टिपात कर रहे हैं—

कान के रोग

किसी भी समय कोई रोग किसी को हो सकता है, किन्तु कान के रोग प्रायः छोटे बच्चों को ही अधिक होते हैं। दर्द, सूजन, ज़ख़्म का होना, पीब आना आदि कान के ऐसे अनेक रोग हैं जो बहुत कष्ट देते हैं। कभी-कभी कई अन्य कारणों से भी कान के रोग हो जाते हैं। कान के किसी भी रोग के उपचार में कोताही नहीं बरतनी चाहिए। इसके उपचार निम्नवत हैं—

नुस्खे

❑ 4 तोला सिरका में अफसंतीन रूमी 4 माशा चार पहर तक पानी में भिगोकर रखें, फिर उसे पकाकर छान लें। तदुपरांत कड़वे बादाम का तेल 5 तोला डालकर आंच पर रखें। जब सिरका जल जाए और तेल मात्र रह जाए तो उतार लें। सुबह-शाम दो-दो बूंद सुहाता गरम कान में डालें। यह कान के दर्द, सूजन अथवा कान में फुंसी आदि शमन के लिए लाभकारी है।

❑ अजवायन, सोंठ, मुलेठी, हींग, बूरए अरमनी, इंद्रायन का गूदा, अकरकरा—प्रत्येक 6 माशा, सफेद प्याज़ 2 गांठ, अफसंतीन रूमी 1 तोला, हल्दी, लहसुन, क़ुस्ततल्ख़, बादाम की गिरी—प्रत्येक 2 तोला लें। इन सबको अधकूट करके रात्रि में आबपित्तागाव में तर करें। सुबह मरजंजोश के पत्तों का रस, करेले के पत्तों का रस तथा मूली का रस—प्रत्येक 2 तोला, अंगूरी सिरका 5 तोला, तिल का तेल 5 छटांक मिलाकर पकाएं। जब सबके जल जाने पर सिर्फ़ तेल ही बाक़ी रहे तो उसे छानकर रख लें। आवश्यकता के समय 1 बूंद सुहाता गरम तेल कान में टपकाएं। यह

कर्णगत कृमियों को नष्ट करता है, फुंसियों को मिटाता है तथा कान के हर प्रकार के शूल में लाभकारी है।

❑ अजवायन, सोंठ, मुलेठी—प्रत्येक 3 माशा, हींग, बूरए अरमनी, इंद्रायन का गूदा—प्रत्येक 1.50 माशा, अकरकरा 1 माशा, सफ़ेद प्याज़ 1 गांठ, अफसंतीन रूमी, हल्दी, लहसुन—प्रत्येक 6 माशा, कड़वा कुट, कड़वे बादाम की गिरी—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको यवकुट करके रात में गौ-पित्त के पानी में भिगोएं। सवेरे सुदाब मरजंजोश, करेला, सुखदर्शन के पत्तों तथा मूलक का रस—प्रत्येक 1 तोला, तेज़ शराब 2.50 तोला तथा तिल का तेल 1 छटांक मिलाकर पकाएं। जब मात्र तेल शेष रह जाए तो ऊपर से द्रव्य डालकर पकाएं और छानकर शीशी में रख लें। दो-तीन बूंद सुहाता गरम तेल कान में टपकाएं। यह कान के दर्द और कान की भनभनाहट में लाभदायक है।

❑ गूदा सहित खट्टे अनार का रस 10 तोला में इसके छिलकों को पकाएं और मसलकर छान लें। फिर शुद्ध सिरका 6 माशा एवं रोग़न कुंदुर 3 माशा मिलाकर पकाएं। जब पानी जल जाए और मात्र तेल शेष रह जाए, तो उसे छानकर सुरक्षित रखें। दिन में दो-तीन बार गरम सुहाता तेल कान में डालें। इससे ऊंचा सुनने की शिकायत दूर हो जाती है।

नाक के रोग

नाक के रोगों में मुख्य हैं—जुकाम (जो सर्दी-गरमी) के प्रकोप से हो जाता है तथा नाक से ख़ून गिरना (नकसीर) भी एक रोग ही है। कभी-कभी नकसीर में अधिक ख़ून आने से दशा शोचनीय हो जाती है। नाक का एक अन्य रोग है, पीनस! शरीर में अधिक शुष्कता होने से जब श्लेष्म सूख जाता है तो नाक बंद हो जाती है। ऐसे में श्वास लेने में बहुत कष्ट होता है। शुष्कता के कारण रोगी को किसी तरह का गंध-ज्ञान भी नहीं होता। इस स्थिति को 'पीनस रोग' कहते हैं। ये सभी रोग मनुष्य को कष्ट पहुंचाते हैं। इनके उपचार निम्नलिखित हैं—

नुस्ख़े

❑ समुद्रफल की गिरी 2 माशा, कपूर 1 माशा, नौसादर 2 माशा, करंज की गिरी 2 माशा—इन सबको पीसकर नासिका में सूंघने से पीनस रोग मिट जाता है।

❑ हींग 1 माशा, कपूर 1 माशा तथा पीला एलुआ 1 माशा—इन्हें शरीफ़ा के हरे पत्ते का रस 1 तोला और आड़ू के हरे पत्ते का रस 1 तोला में पीसकर 1 तोला गुल रोग़न मिलाकर नासिका में टपकाएं। इस प्रयोग से नाक के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

❑ हरा माजूफल, कुंदुर, संगज़राहत, दम्मुल अख़्वैन (ख़ूनख़राबा), गिल [illegible]

मिलाएं। इसमें से 1 चुटकी लेकर फुकनी द्वारा नाक में फूंक दें अथवा बकरी के दूध में मिलाकर नासिका में टपकाएं। यह नाक से गिरने वाले ख़ून (नकसीर) को रोकने का सबसे अच्छा उपाय है।

गले के रोग

गले के रोगों में मुख्य हैं—गला बैठना एवं गले में दर्द होना। यदि इन दोनों रोगों के प्रति लापरवाही बरती गई तो कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहां कुछ नुस्खे दिए जा रहे हैं जो गले के अनेक रोगों में लाभकारी हैं।

नुस्ख़े

❑ खीरा, ककड़ी और कद्दू के बीज की गिरी, मिश्री, कतीरा, गेहूं का सत, बबूल का गोंद, मिश्री और मुलेठी का सत—2-2 तोले की मात्रा में लें। सबको पीसकर पानी का छींटा देकर चने के बराबर गोलियां बनाएं और सुबह-शाम एक-एक गोली मुंह में डालकर चूसें। यह गोली आवाज़ खोलती है। यह स्वरभेद के लिए भी गुणकारी है।

❑ बाकला और चने का आटा, रेवंद चीनी, गेहूं का सत, अजवायन, सोसन की जड़, सफ़ेद मिर्च, केसर, मुरमक्की, लोबान—प्रत्येक 2.50 तोला, शिलारस 5 तोला, भुने फिंदक की गिरी, इलकुल्अंबात, छिली हुई मुलेठी, बबूल का गोंद—प्रत्येक 15 तोला, चिलगोज़ा की गिरी, छिले हुए बादाम की गिरी—प्रत्येक 30 तोला, अलसी के भुने बीज, बीज निकाले मुनक्के—प्रत्येक 1 सेर लें। सबको बारीक पीसकर आवश्यकतानुसार शहद मिलाकर अऊक (अवलेह) बनाएं और एक-एक बड़ा चम्मच सुबह एवं रात को खाएं। यह स्वरभेद में अतीव गुणकारी है। इससे गले के अनेक रोगों का शमन भी हो जाता है।

गण्डमाला (अपची)

ख़ून ख़राब होने पर शरीर के बहुत से स्थानों जैसे—गला, गरदन अथवा बगल में मृदु और गोल आकार की हल्की पीड़ा देने वाली गांठें या ग्रंथियां उभर आती हैं। ये गांठें बैंगन के बीज, मछली के पपड़ों के समान और तीव्रावस्था में आंवले की गुठली की तरह दिखाई देती हैं। कण्ठमाला की तीव्रावस्था को गण्डमाला (अपची) कहा जाता है। जब इन गांठों में लाल रंग की दर्द भरी सूजन आती है तो रोगी को बहुत पीड़ा होती है। माता-पिता को कण्ठमाला या गरमी का दोष होने पर अक्सर बच्चों को यह बीमारी हो जाती है। सीड़ भरी जगहों में रहना, समुचित पोषण न होना, साफ़ हवा का न मिलता आदि इस रोग की उत्पत्ति के कारण हैं।

नुस्ख़े

❑ हब्ब ऊद्बलसां, ऊदबलसां, तज, मस्तगी, तगर, केसर, बालछड़,

दारचीनी—प्रत्येक 1 भाग और एलुआ 2 भाग लें। इन सबको कूट-छानकर सौंफ़ के अर्क़ में मिलाकर आधा-आधा माशा की गोली या टिकिया बना लें। सुबह खाली पेट 4 से 10 टिकिया (गोलियां) खाकर ताज़ा पानी या पानी में एक चम्मच शहद मिलाकर अथवा अर्क़ बादियान पिएं। दो तीन महीने तक इनका सेवन करने से कण्ठमाला रोग का समूल नाश हो जाता है।

❑ जराबंद मुदहरज, मूली के बीज, राई, मुकल अरजक, एलुआ—प्रत्येक 2 तोला, उशक 3 तोला, कनेर की जड़ 5 तोला और अंगूरी सिरका आवश्यकतानुसार लें। सभी द्रव्यों को पत्थर की कुंडी में खरल करें। जब सब बारीक हो जाएं, तो थोड़ा-थोड़ा सिरका डालकर इतना घोटें कि चाशनी गोली बनने योग्य हो जाए। फिर गाय का घी थोड़ा-थोड़ा मिलाकर आठ पहर तक निरंतर खरल करें। जब सिरके की नमी दूर होकर चिकनाई आ जाए, तो आधा-आधा माशा की गोलियां बना लें। रोज़ 1 गोली खाएं। यदि संभव हो तो ऊपर से कोई उपयुक्त शर्बत पिएं। निम्नलिखित मरहम का लेप भी करें। यह प्रक्रिया कंठमाला की गांठों-ज़ख़्मों को दूर करती है और सूजन उतारती है।

❑ मेहंदी, नीलाथोथा और काली मिर्च—प्रत्येक 1 तोला लें। सबको एक साथ सूखा ही पीसकर 10 तोला मक्खन में मिलाएं। इसी प्रकार मक्खन तैयार करके गांठों एवं ज़ख़्मों पर लगाएं।

❑ जुरंबाद, गारीकून, चीता, नौसादर—प्रत्येक 10.50 माशा, अनीसून, तज, बालछड़, लौंग, जायफल, पिसी हुई रूमी मस्तग़ी—प्रत्येक 7 माशा, बकरी के गले की शुष्क की हुई ग्रंथियां 1 तोला 4 रत्ती, बसफाइज फुस्तकी और उस्तूखूदूस—प्रत्येक 1 तोला 5.50 माशा, बहेड़ा, आंवला, हड्डी दूर की हुई सफ़ेद निशोथ, मक्की सनाय—प्रत्येक 2 तोला 4 रत्ती, काली हरड़ 4 तोला 4 माशा और अफ़्तीमून 2 तोला 11 माशा लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर तीन गुना शहद में मिलाएं। इसे 1 तोले की मात्रा में 12 तोला शहद के शर्बत के साथ खाएं। यह कंठमाला में लाभकारी है। मसूर और लोबिया आदि का सेवन इलाज के दौरान भूलकर भी न करें।

❑ नीला संखिया की 4-5 माशा की एक डली और गाय का मक्खन आवश्यकतानुसार (गाय के मक्खन को 20 बार जल में धोएं, जिससे अम्लता ख़त्म हो जाए) लें। पहले कंठमाला के ज़ख़्म पर गाय का उक्त मक्खन मल दें। फिर संखिया की डली लेकर ज़ख़्मों पर फेरें। यह क्रिया कुछ देर जारी रखें। तत्पश्चात् 4 माशा उस्तूखूदूस को जल में पकाकर छानें और मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाएं। कुछ ही दिनों में ज़ख़्म शुष्क हो जाएंगे।

❑❑

7

आंखों के रोग

जन्नतनशीं हकीम लुक़मान का कथन था कि संसार में मनुष्यों की आंखें सात प्रकार की होती हैं तथा सौ प्रकार के आंखों के रोग होते हैं। आंखों के रोगों (विकारों) के कारण भी अनेक होते हैं, जैसे—सिर या आंखों में चोट लगना, उत्तेजक वस्तुओं का सेवन, धुएं, धूल, तेज़ गरमी, सूर्य की ओर देखना, अति स्त्री-प्रसंग, धातु-विकार, दाढ़-दांत उखड़वाना, गलत ढंग से आंखों से काम लेना, पेट की ख़राबी, डर, चिंता, क्रोध, मानसिक उद्वेग आदि। यहां कुछ प्रचलित रोगों के बारे में बताया जा रहा है।

आंख आना (आई फ्लू)

आई फ्लू, नेत्राभिष्यंद या आंख आना विशेष प्रकार के जीवाणुओं द्वारा तीव्र संक्रामक रूप में फैलता है। इस रोग के जीवाणु वायु या जल द्वारा लोगों तक पहुंचते हैं और तुरंत संक्रमण कर रोग की उत्पत्ति करते हैं। रोगी के वस्त्र, रूमाल या तौलिए के स्पर्श मात्र से ही रोग के जीवाणु हाथों में लग जाते हैं। फिर जब कोई मुंह या आंखों का स्पर्श करता है तो आई फ्लू हो जाता है। रोग के जीवाणु वायु द्वारा उड़कर स्वस्थ लोगों तक पहुंचकर भी उन्हें रोगी बना देते हैं। इसमें आंखें एकदम लाल हो जाती हैं। तेज़ दर्द और जलन होती है। रोगी पलकें नहीं खोल पाता। धूप का प्रकाश उसके लिए असहनीय हो जाता है। भीतर से पूय निकलने के कारण पलकें चिपक जाती हैं। प्रारंभ में तेज़ खुजली होती है, फिर खुजलाने से शोथ हो जाता है।

नुस्खे

❑ शादनज अदसी मगसूल 2 तोला 11 माशा, तांबा भस्म 2 तोला 4 माशा, छिद्ररहित मोती 1 तोला 2 माशा, मुरक्की, कतीरा, गोंद बबूल—प्रत्येक 7 माशा, केसर, दम्मु[illegible]ज़ैन—प्रत्येक 2.50 माशा लें। इन सबको खरल करके बत्ती बनाएं और आंखों के ऊपर लगाएं। इससे दुखती आंखों को आराम मिलता है।

❑ काली काबुली पीली हरड़, गुठली रहित आंवला, बहेड़े का बकला, सूखा धनिया—प्रत्येक 5 तोला लें। इनको कूट-कपड़छन कर बादाम के तेल (आवश्यकतानुसार) में स्नेहाक्त करके तीन गुना शहद के साथ चटनी-सी बनाएं। रात को सोते समय 7 माशा यह चटनी 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह आई फ्लू में बहुत लाभ करती है।

❑ गोंद बबूल और सोंठ—प्रत्येक 3.50 माशा, गेरू 4 तोला और अहिफेन 14 माशा लें। इन सबको कूट-छानकर हरे धनिये के रस में गूंधकर चने के बराबर गोलियां बना लें। आवश्यकता पड़ने पर 1 गोली पानी में पीसकर दिन में 4-4 घंटे के अंतर से पलकों पर सुहाता गरम लेप करें। आई फ्लू के लिए यह अतीव लाभकारी है।

❑ नीम की 5 पत्तियां और 5 रत्ती केसर, यमानी फिटकिरी 2 तोला 4 माशा, अहिफेन 1 तोला 2 माशा और शुद्ध रसवत 4.50 तोला लें। इन सबको पीसकर लोहे की कड़ाही में थोड़ा पानी डालकर लोहे के दस्ते से ख़ूब घोटें। इसके बाद अग्नि पर पकाएं और छोटी-छोटी गोलियां बना लें। जब भी किसी की आंख दुखे, एक गोली पानी में घिसकर पलकों पर लेप करें। वेदना का शमन शीघ्र हो जाएगा।

❑ काला सुरमा, समुद्रझाग, लौंग, जंगार, सोनामक्खी, रूपामक्खी—प्रत्येक 3 माशा, यशद भस्म 5 तोला, केसर, अहिफेन—प्रत्येक 1.50 माशा लें। इन सबकी यथाविधि गोलियां बनाएं। आवश्यकता पड़ने पर एक गोली पानी में घिसकर पलकों पर लेप कर दें। यह आंखों की लाली और वेदना दूर करती है।

रोहे (पोथकी)

रोहे (पोथकी) के प्रारंभ में आंखें दुखने लगती हैं, वे लाल हो जाती हैं, पूय निकलने लगता है और शोथ हो जाता है। इसके साथ ही पलकों में भीतर की ओर दाने निकल आते हैं। यदि समय रहते इसका उपचार न किया जाए तो यह रोग नेत्रहीन तक बना सकता है।

नुस्ख़े

❑ जस्ते का फूल 2 माशा, मिश्री 2 माशा, नीम की कोंपलें 3 नग, छोटी इलायची के 2 बीज, मरकरी 4 रत्ती, चाकसू 6 माशा, अंजरूत 2 माशा, मिश्री 2 माशा, भुनी हुई फिटकिरी 2 माशा और कज्जल 2 माशा लें। इन सबको खूब खरल करके 2.50 तोला वेजलीन में भली-भांति मिलाकर रख लें। रोहे होने पर पलक उलटकर उन पर कंबल की भांति लगाएं। यह रोहे, लाली तथा आई फ्लू में विशेष रूप से लाभप्रद है।

❑ कपूर 3.50 माशा, तूतिया और फिटकिरी—प्रत्येक 7.50 तोला लें। इन्हें मिलाकर लगाने से भी रोहे का शमन हो जाता है।

जाला, नाख़ूना और फूला

जाला, नाख़ूना और फूला आंखों के घातक रोग हैं। आंखें शरीर की सबसे संवेदनशील अंग हैं। ज़रा-सी लापरवाही से आंखों की रोशनी जा सकती है—इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए। कोई भी रोग होने पर उसका सही इलाज जितना जल्दी हो सके, करना चाहिए।

नुस्ख़े

❑ सफ़ेद सुरमा 4 माशा, जंगार 3 माशा, अहिफेन 1 माशा, समुद्रझाग 4 माशा, काला सुरमा, यशद (फुलाया हुआ)—प्रत्येक 2 तोला लें। इन सबको अलग-अलग कूट-पीस-छानकर, 1 नीबू के रस में खरल करें। इसकी एक सलाई रोज़ाना आंखों में लगाने से जाला दूर हो जाता है। यह धुंध के लिए भी लाभकारी है।

❑ जंगार 7 माशा, वर्की हरताल का सत्व 3 माशा और जलाई हुई रूई 2 तोला लें। इन सबको बारीक पीसकर एक सप्ताह मद्य (शराब) में तर रखें। फिर बत्ती बनाकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर मद्य में ही घिसकर आंख में लगाएं। यह नाख़ूना का नाश करता है।

❑ सिंदूर 3 माशा, लाहौरी साबुन, हाथी का नाख़ून और चूड़ी का हरा कांच—प्रत्येक 6 माशा लें। इन सबको अलग-अलग पीसकर मिलाएं और दोबारा खरल करके सुरमा बना लें। सुबह और रात को सोते समय कांच की सलाई से इस सुरमे को आंखों में लगाएं। यह हर प्रकार के फूला का नाश करता है। जब तक पूरा फ़ायदा न हो जाए, इसे लगाते रहें।

❑ भुनी हुई फिटकिरी 3.50 तोला, काली मिर्च, तिल के फूलों की कलियां और चमेली की कलियां—प्रत्येक 400 नग लें। इन सबको अच्छी तरह बारीक खरल करके, सुरमा-सा बना लें। 3-3 सलाई सुबह, दोपहर और शाम को आंखों में लगाएं। फूला को नष्ट करने में यह अत्यंत गुणकारी है। यह छाले को काटता है और नाख़ूना भी दूर करता है।

मोतियाबिंद

बहुमूत्र, बुढ़ापा, शारीरिक दुर्बलता और चोटादि कारणों से मोतियाबिंद होता है। इसमें पहले सभी चीजें धुंधली-सी दिखाई देती हैं, आंखों के आगे भुनगे-से

उड़ते दिखते हैं। जिस वस्तु को देखो, उस पर एक जाल-सा बिछा दिखाई देता है। यह रोग क्रमशः बढ़ता जाता है तथा रोशनी एकदम ग़ायब हो जाती है। रोगी एक प्रकार से अंधा हो जाता है। यही मोतियाबिंद की निशानी है।

नुस्ख़े

❑ चीनी ममीरान, मंडूर, छिला हुआ चाकसू, तांबे का पाउडर (बुरादा), अक़ीक़ यमनी—प्रत्येक 3 माशा लें। इन सबको अच्छी तरह खरल करके सुरमा बना लें। सवेरे सोकर उठते ही और रात को सोते समय एक सलाई आंख में लगाएं। यह सुरमा प्रारंभिक मोतियाबिंद में लाभकारी है।

❑ बकरी का पित्त, आंबा हल्दी और गोल मिर्च—प्रत्येक 1 माशा को नीबू के रस में भिगोकर शुष्क करें। फिर खपरिया (संगबसरी) 7 माशा को चार बार अग्नि में लाल करके नीबू के रस में बुझाएं। अब खिरनी के बीज की गिरी, चमेली की कली—प्रत्येक 7 माशा को सौंफ़ के रस में खरल करके, पूर्वोक्त द्रव्य मिलाकर सुरमा तैयार करें और यथाविधि सेवन करें। यह रतौंधी, जाला एवं मोतियाबिंद में लाभकारी है।

❑ राल, नीलाथोथा—प्रत्येक 3.50 माशा और साबुन 5 तोला 10 माशा लें। पहले साबुन को छुरी से बारीक टुकड़ों में करके लोहे के बरतन में डालकर अग्नि पर रखें। फिर नीलाथोथा को लोहे के इमामदस्ता में पीसकर साबुन में डालें, जिससे नीलाथोथा और साबुन जलवत् हो जाएं। इसके बाद राल डालकर तेज़ आग पर रखें और लोहे के डंडे से हिलाते जाएं। जब औषधि का रंग काला हो जाए, तो उतारकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर पोस्तदाना के बराबर लेकर सीपी में डालें और थोड़ा-सा पानी डालकर, घिसकर लगाएं। यह मोतियाबिंद को बढ़ने से रोकता है।

धुंधता

आंखों के आगे हर वक़्त एक धुंध-सी छाई रहना तथा हर वस्तु धुंधली दिखाई देना, चाहे वो किसी भी कारण हो, 'धुंधता' कहलाती है। निम्नलिखित नुस्ख़ों के प्रयोग से यह धुंधता समाप्त हो जाती है।

नुस्ख़े

❑ भुनी हुई फिटकिरी, काला सुरमा, चीनी ममीरान—प्रत्येक 6 माशा, कपूर, अहिफेन, मुक्ता—प्रत्येक 1 माशा लें। इन सबको गुलाब और चमेली के फूल—प्रत्येक 5 तोला में खरल करके रखें। रात को सोते समय और सुबह उठकर यशद की सलाई से आंखों में लगाएं। यह धुंध के लिए लाभदायक है।

❑ पीली हरड़ और आंवला-बीज की गिरी—प्रत्येक 2 तोला लेकर पानी में तीस पहर तक खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाएं। 3 गोलियां रात को सोते समय रोज़ खाएं। यह धुंध नाशक है। यह मोतियाबिंद की प्रारंभिक अवस्था में भी लाभकारी है।

दृष्टिदौर्बल्य

बहुत से लोगों को दूर की तथा बहुतों की नज़दीक की नज़र कमज़ोर हो जाती है। किसी को दूर की चीज़ें धुंधली-सी दिखाई देने लगती हैं तथा किसी को नज़दीक में कम दिखने लगता है, पुस्तक आदि पढ़ने अथवा सूई में धागा डालने में असुविधा होने लगती है। इस कमी की पूर्ति ऐनक द्वारा हो जाती है। निम्नलिखित नुस्ख़ों को अमल में लाकर भी इसकी पूर्ति की जा सकती है। इसके उपयोग से ऐनक (चश्मे) से छुटकारा मिल जाता है। यदि पहले से नंबर अधिक हो तो वह कम हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ सादनज (धोया हुआ), तांबा (जलाया हुआ—ताम्र भस्म), रूपामक्खी, सेंधा नमक, बूरए अरमनी—प्रत्येक 14 माशा, समुद्रझाग, सफ़ेद मिर्च, काली मिर्च—प्रत्येक 1.50 माशा, नौसादर, केसर—प्रत्येक 3.50 माशा, पीपल, एलुआ, लौंग, बालछड़—प्रत्येक 16 माशा लें। इन सबको इतना खरल करें कि पाउडर की तरह महीन हो जाए। अब इसे सुरमे की भांति सलाई द्वारा आंखों में आंज लें। इससे बहुत कम समय में दृष्टि की दुर्बलता दूर हो जाती है। यह फूला, नाख़ूना और जाला में भी बहुत अच्छा फल प्रदर्शित करता है।

❑ पारा 2 माशा, कबाबचीनी, नील के बीज—प्रत्येक 6 माशा और अस्फहानी सुरमा 2 तोला लें। इन सबको सुरमे की भांति खरल करें। तत्पश्चात् बारीक कपूर 2 माशा एवं रूह केवड़ा 2 तोला डालकर लगातार दो घंटे तक खरल करें। इसे सुबह-शाम दोनों वक़्त आंखों में लगाएं। यह दृष्टि की दुर्बलता दूर कर दृष्टि को बढ़ाती है।

❑❑

8

मूत्र रोग

मूत्र रोगों में विभिन्न रोग शामिल हैं, जैसे—बार-बार मूत्र होना, मूत्र के समय कष्ट एवं जलन होना, पेशाब न होना, गंदला मूत्र होना, पेशाब में प्रमेह होना आदि। इन रोगों में कुछ रोग उचित उपचार द्वारा जल्दी ठीक हो जाते हैं, जबकि कुछ रोग लंबे समय तक इलाज करने पर ठीक होते हैं। इस अध्याय में हम अश्मरी (पथरी) तथा मधुमेह (डायबिटज़) पर चर्चा कर रहे हैं जो कुछ परेशानी पैदा करने वाले होते हैं।

अश्मरी (पथरी)

शरीर के स्वस्थ होने पर इससे ऐसे पदार्थ बाहर निकलते हैं, जिनकी शरीर को आवश्यकता नहीं होती, किंतु जब परिपोषण कार्य में गड़बड़ी पैदा हो जाती है तो उसका परिणाम उल्टा होता है। ऐसा ही कुछ मूत्र के साथ होता है। यदि एक साफ़ शीशो में थोड़ी देर तक मूत्र रखने पर ईंट का चूरा या बालू के कण की तरह उसके नीचे कुछ जम जाए तो पथरी रोग की उत्पत्ति समझनी चाहिए। यह पथरी यदि गुर्दे में हो तो पीठ, उरु, पुट्ठे, अंडकोश एवं प्रभृति में बहुत पीड़ा होती है।

नुस्खे

❑ कासनी जड़ की छाल, गाफिस के फूल, ख़तमी-बीज, छिली हुई मुलेठी, बालछड़, बनफ़शा, गावज़बान—प्रत्येक 2 तोला 3 माशा, कासनी-बीज, सौंफ़, खरबूज़ा और कद्दू के बीज की गिरी, तुख़्मकुर्तुम—प्रत्येक 3 तोला 9 माशा लें। इन सबको अधकूट करके चौबीस घंटों के लिए 2.50 सेर पानी में भिगोकर रखें। फिर बीज निकाला हुआ मुनक़्क़ा 12 तोला मिलाकर आग पर रखें। जब मात्र 1 सेर पानी रह जाए तो छानकर उसमें 1 सेर चीनी मिलाकर गाढ़ी चाशनी-सी बना लें। इसे 9 माशा से 1.50 तोला तक अर्क़ मकोय और अर्क़ सौंफ़—प्रत्येक 6 तोला में मिलाकर सेवन करें। यह गुर्दे से पथरी को निकालकर पीड़ा समाप्त करता है।

❑ खीरा, ककड़ी, कद्दू और खरबूज़े के बीज की गिरी, हब्ब काकनज—प्रत्येक 1.50 तोला एवं हज्रुल्यहूद 15 तोला लें। इन्हें खरल में अच्छी तरह पीस-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। फिर तीन गुना शहद की चाशनी में इस चूर्ण को मिलाकर माजून तैयार करें। 7 माशा माजून सवेरे ताज़े पानी के साथ सेवन करें। यह पथरीजन्य मूत्रावरोध का उद्घाटन करता है और पथरी को टुकड़े-टुकड़े करके निकालता है।

❑ अंतर्धूम में जलाया हुआ बिच्छू 1.50 माशा, सफ़ेद और काली मिर्च—प्रत्येक 8 माशा, सोंठ 3.50 माशा, काकनज की जड़ 1.50 तोला, जिंतियानारूमी (रूमी पाखानभेद) 1 तोला 3.50 माशा और जुंदबेदस्तर 12 माशा लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण बनाएं तथा तीन गुना शहद की चाशनी में मिलाकर माजून तैयार करें। 12 तोला शर्बत बजूरी के साथ 1 तोला यह माजून खाएं। यह वृक्क (गुर्दे) और वस्तिगत पथरी को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े करके मूत्र के साथ बाहर निकालता है।

❑ संग सरमाही, हज्रुल्यहूद—प्रत्येक 4 तोला, मग़ज़ खसकदाना, मग़ज़ आलू बालू, हब्बुलकुल्त—प्रत्येक 1 तोला, सौंफ़ 2 तोला, कुसुमबीज 3 तोला और ख़रबूज़े के बीज की गिरी 5 तोला लें। इन सबको कूट-छानकर चूर्ण बनाएं तथा तीन गुना शहद में मिलाकर पूर्वोक्त विधि से माजून तैयार करें। 7 तोला यह माजून अर्क़ लौंग 6 तोला, अनन्नास का अर्क़ 6 तोला और शर्बत बजूरी बारिद 4 तोला के साथ उपयोग करें। यह माजून वृक्क एवं वस्तिगत अश्मरी (पथरी) और सिकता को सरलतापूर्वक निकाल देता है।

मधुमेह (डायबिटीज़)

अधिक मात्रा में श्वेतसार खाने, वंशगत दोष, विशेष चिंतन, श्वास-क़ास, यकृत, मस्तिष्क और मेरुमज्जा में चोट लगने, गठिया, मलेरिया आदि होने मधुमेह (डायबिटीज़) रोग की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं। क़ब्ज़ियत एवं बहुत अधिक प्यास इसके प्रधान लक्षण हैं। इसमें शरीर धीरे-धीरे क्षीण होता चला जाता है।

नुस्ख़े

❑ कासनी 4 तोला, कुलफा 10 तोला, छोटी इलायची, बंसलोचन, सत शिलाजीत, गुडूची सत्व, कपूर, कुनैन—प्रत्येक 2 माशा, सूखा मकोय, छोटा गोखरू, बबूल का कच्चा फूल, बबूल की जड़, बबूल की छाल, बबूल का गोंद—प्रत्येक 1 तोला, जलाकर राख किए गए बबूल के कांटे 1 तोला, जामुन के बीज की गिरी 2 तोला तथा ताज खुरूस 4 नग लें। इन सबको परस्पर मिलाकर, कूट-छानकर चूर्ण

...मिलाकर चूर्ण ... कपड़छन चूर्ण 14 माशा मिला दें। 1 माशा से ... माशा तक यह चूर्ण 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह मधुमेह के लिए लाभदायक है।

❑ बंसलोचन, हब्ब काकनज, पोस्तदाना, मुलेठी का सत, गोंद कतीरा, दम्मुल अख़्वैन, गिल अरमनी, गिल मख़्तूम—प्रत्येक 2 तोला, गेहूं का सत, कद्दू के बीज की गिरी, कुलफा के बीज—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको अलग-अलग कूट-छानकर मिला लें। यह चूर्ण जितना हो, उतने ही प्रमाण में सफ़ेद खांड मिलाएं। 7 माशा यह चूर्ण 10 तोला दही के तोड़ के साथ सुबह-शाम ख़ाली पेट खाएं। यह चूर्ण मधुमेह में गुणकारी तथा गुर्दों को बल देने वाला है।

❑ ज़हरमोहरा खताई, नीला बंसलोचन, शुद्ध पुरानी ईंट—प्रत्येक 1 तोला, कपूर 6 माशा, जुफ्त बलूत 7 दाना, कहरुवा शमई, गोंद बबूल—प्रत्येक 1 तोला और पोस्त मुसल्लम 4 नग लें। इन्हें महीन पीसकर चूर्ण बनाएं। 9 माशा यह चूर्ण 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह गुर्दों के उष्ण प्रकृति विकार जन्य मधुमेह में परम गुणकारी है।

❑❑

9

कुछ अन्य रोग

इस अध्याय में हम हकीम लुक़मान द्वारा ईजाद किए गए विभिन्न रोगों के नुस्ख़े प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें मुंह और होंठों के रोग, दांतों के रोग, ताऊन (प्लेग) नज़ला-जुकाम आदि रोगों पर प्रकाश डालेंगे।

मुंह और होंठों के रोग

मुंह एवं होंठों के छोटे-मोटे रोग प्रायः घर में किसी-न-किसी को होते रहते हैं। यहां हम कुछ ऐसे प्राचीन नुस्ख़ों का उल्लेख कर रहे हैं जो फौरन असर डालते हैं। बीमार का इलाज घर पर ही हो जाता है। नए यूनानी चिकित्सक भी इनसे लाभ उठा सकते हैं।

नुस्ख़े

❑ सफ़ेद मोम 2 तोला 4 माशा, तिल का तेल 5 तोला 10 माशा, कपूर 2 माशा, मुरदासंग और सफ़ेदा कश्मीरी—प्रत्येक 14 माशा लें। तेल को गरम करके उसमें मोम पिघलाएं और अन्य द्रव्यों को कूट-छानकर मिला दें। शीतल होने पर एक अंडे की सफ़ेदी अच्छी तरह मिलाएं। यदि सर्दियों में होंठ फटते हों तो इसे लगाएं, आराम मिलेगा।

❑ पीली हरड़ का बकला, माजू नीलाथोथा (जलाया हुआ), मस्तग़ी, भुनी हुई फिटकिरी—प्रत्येक 3 माशा, लाल प्रवालमूल, कहरुवा शमई—प्रत्येक 4 माशा, पीला कसीस 9 माशा, सावरश्रृंग, लोहचून—प्रत्येक 13.50 माशा, मौलसिरी की छाल, चोबचीनी—प्रत्येक 7 माशा, संगज़राहत, सफ़ेद कत्था, जलाई हुई सुपारी—प्रत्येक 6 माशा लें। इन सबको बारीक पीस-छानकर मंजन की तरह दांतों और मसूड़ों पर मलें। यह मंजन मुख को स्वच्छ और श्वास को सुगंधित बनाता है। इससे मसूड़ों से ख़ून आना भी रुक जाता है।

❑ शुद्ध कपूर 1 माशा, नीलाथोथा 8 रत्ती, गुलाब के फूल, सफ़ेद कत्था, कलमी शोरा, छोटी इलायची के बीज—प्रत्येक 2 माशा लें। पहले नीलाथोथा तवे पर रखकर भून लें। फिर शेष द्रव्यों को अलग-अलग बारीक करके उसमें मिलाकर महीन चूर्ण बनाएं। 1-1 माशा यह दवा दिन में 2-3 बार मुंह में मलें। यह मुखशोधन की श्रेष्ठ औषधि है। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि दवा गले के भीतर न उतरने पाए।

दांत के रोग

दांतों के रोग बड़े कष्टप्रद होते हैं। यदि शुरू में ही दांतों की सफाई नियमित रूप से सुबह और रात को सोते समय की जाए तथा कुछ बातों पर ध्यान दिया जाए तो अनेक समस्याओं से बचा जा सकता है। दांतों के मुख्य रोग हैं—दांतों में खून आना, दर्द होना, मसूड़ों का कमजोर होना आदि। इन सभी के उपचार हेतु नुस्खे निम्नवत हैं—

नुस्ख़े

❑ मस्तग़ी, सफ़ेद कत्था, कुटकी, सफ़ेद जीरा, भुना हुआ नीलाथोथा—प्रत्येक 3.50 माशा, सोंठ, कबाबचीनी, कपूरकचरी, वज्रदंती—प्रत्येक 1.50 माशा, पीला कसीस, सूखा धनिया, लाहौरी नमक—प्रत्येक 7 माशा तथा नागरमोथा 4.25 तोला लें। इन सबको कूट-पीसकर बारीक-महीन चूर्ण बनाएं। इसमें से थोड़ा मंजन लेकर सुबह और रात को सोते समय दांतों पर मलें। यह पायरिया नाशक है। साथ ही दांतों को दृढ़ एवं चमकदार बनाता है।

❑ काली मिर्च 3 माशा, तवे पर भुनी हुई फिटकिरी, जलाई हुई पीली कौड़ी—प्रत्येक 6 माशा, अहिफेन 4 रत्ती, अकरकरा, सफ़ेद जीरा, लाहौरी नमक, नौसादर, देशी अजवायन—प्रत्येक 3 माशा लें। सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनाएं और कपड़े में छानकर रखें। यह मंजन दांतों के दर्द के लिए लाभदायक है। किसी भी कारणवश कैसा भी दांत का दर्द हो, इसको मलने से कुछ ही क्षणों में वह दूर हो जाता है।

❑ शब्ब यमानी (यमानी फिटकिरी) 4 तोला, मिट्टी के बरतन में करके अग्नि पर रखें और थोड़ा-थोड़ा हिलाते रहें, ताकि उसकी दूषित भाप निकल जाए। फिर 2 तोला गुलाब के फूल और जीरे के साथ उसे पीसकर रख लें। आवश्यकता [illegible]

6 माशा, गिल अरमनी 3 माशा, जलाई हुई प्रवालशाखा, जलाई हुई सीप, ख़ूनख़राबा—प्रत्येक 2 माशा लें। इन सबको महीन पीसकर कपड़े में छान लें। इसे दिन में दोनों वक़्त दांतों पर मलें। यदि मसूड़ों से ख़ून बहता हो तो यह मंजन बहुत लाभ करता है। दो-तीन दिनों में ही ख़ून जाना बंद हो जाता है।

ताऊन (प्लेग)

प्राचीनकाल से ही इस रोग को महामारी के नाम से जाना जाता था। हकीम लुक़मान के ज़माने में तो इस रोग का नाम सुनते ही गांव-के-गांव ख़ाली हो जाते थे। लोग उस जगह को ही छोड़कर भाग खड़े होते थे, जहां इस रोग का कोई शिकार हो जाता था। उस ज़माने से आज तक समय-समय पर इस रोग के बारे में अनुसंधान होते रहे। इससे बचाव की औषधियों का भी निर्माण होता रहा। संभवत: इसी कारण इस रोग पर किसी हद तक अंकुश लगा लिया गया। इस रोग की उत्पत्ति का आधुनिक रूप इस प्रकार है—

यह संक्रामक तथा स्पर्शाक्रमक रोग है जो विशेषत: मनुष्यों एवं छोटे जानवरों में पाया जाता है। कोकोबैसिलस नामक जीवाणु इसके प्रादुर्भाव के कारण माने गए हैं। विशेष रूप से चूहे इस रोग के दूत होते हैं। इसके जीवाणु अंधेरी कोठरियों, तर तथा सीड़ भरी जगहों में बढ़ते हैं। प्लेग के सूक्ष्म जीवाणु उन चूहों के ख़ून में पाए जाते हैं, जिन्हें यह रोग हो जाता है। उनके द्वारा एक-एक करके अनेकानेक चूहों में रेट फ्लिआ के द्वारा, जो उसके बालों में रहते हैं और उनका ख़ून पीकर जीवन निर्वाह करते हैं, फैल जाते हैं। इन चूहों के मरने के बाद ये जीवाणु उनके शरीर से निकलकर स्वस्थ शरीर पर हमला करते हैं।

बच्चों और जवानों को यह रोग अधिक होता है। हमारे देश में गांठों वाला रोग ही अधिक होता है। वैसे सड़ने वाला, फेफड़े वाला और आंतों वाला रोग भी इसके विभाग हैं। उत्पत्ति होने के बाद एक सप्ताह तक यह रोग गुप्तावस्था में रह सकता है, किन्तु साधारणत: दूसरे से पांचवें दिन के अन्दर ही गांठें निकल आती हैं। इस रोग से मृत्यु होने के पश्चात् शरीर की त्वचा के ऊपर अनेकानेक दाग़ दिखाई पड़ते हैं। यद्यपि ताऊन (प्लेग) की पुन: आवृत्ति बहुत ही कम होती है, लेकिन जब होती है तो स्थिति चिंताजनक हो जाती है।

नुस्ख़े

❑ तुख़्म हुम्माज, जरिश्क, दरूनज अकरबी—प्रत्येक 6 तोला, मेहंदी के सूखे पत्ते 12 तोला, इमली 20 तोला, आलूबुख़ारा 10 तोला, सफ़ेद चंदन 5 तोला

और लाल चंदन 5 तोला लें। इनको रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल पकाकर छान लें। फिर उसमें 12 सेर चीनी मिलाकर पाक (चाशनी) कर लें। 2 तोला यह शर्बत गावज़बान अर्क़ या काकमाच्य अर्क़ इत्यादि में मिलाकर पिलाएं। यह गांठों वाले ताऊन के लिए बहुत फ़ायदेमंद है।

□ केसर, यशब हरा, ज़हरमोहरा, मोती, सब्ज़ याक़ूत—प्रत्येक 3 माशा, सोने के वर्क़ 1.50 माशा, चांदी के वर्क़ 3 माशा, अर्क़ गुलाब, अर्क़ केतक्य, अर्क़ बेदमुश्क—प्रत्येक 5 तोला, दरूनज अकरबी, जदवार, जुरंबाद, सफ़ेद बहमन—प्रत्येक 6 माशा, लाल चंदन, गिल मख़्तूम, गिल अरमनी, दारचीनी, जिंतियाना, जराबंद मुदहरज, बंसलोचन, हब्बबलसां—प्रत्येक 4 माशा लें। केसर व यशब को केतक्य अर्क़ में घोट लें तथा रत्नों को अलग अर्क़ों में खरल करके पिष्टी बनाएं। फिर शेष द्रव्यों को महीन पीसकर सबको मिलाएं। आख़िर में चांदी व सोने के वर्क़ मिलाकर अच्छी तरह खरल करके 1-1 रत्ती की गोलियां बना लें। 2-2 गोली दिन में तीन बार अर्क़ गुलाब 5 तोला के साथ सेवन कराएं। यह प्लेग (ग्रंथिक ज्वर) में बड़ा चमत्कारी प्रभाव डालती है। आज भी देश के बड़े-बड़े यूनानी दवाख़ानों में इस औषधि का निर्माण किया जाता है। यह 'हब्ब ताऊन अंबरी' के नाम से तैयार मिलती है।

□ छुईमुई के पत्ते , अर्क़ बेदमुश्क 12 तोला और अर्क़ गावज़बान डेढ़ पाव में पीस-छानकर रख लें तथा तृषा मालूम होने पर दिन भर में 1-1 या 2-2 घंटे के अंतराल से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पिलाएं। यह प्लेग की बीमारी से निजात पाने का एक चमत्कारी नुस्ख़ा है।

□ फादेज़हर हैवानी, ज़हरमोहरा खताई, दरियाई नारियल, आक की जड़ की छाल और राई—प्रत्येक 4 माशा, सफ़ेद चंदन 6 माशा, लाल चंदन 8 माशा, सोने का वर्क़ 3 माशा, पपीता (खाकी रंग का तिकोना बीज), अहिफेन—प्रत्येक 1 माशा लें। सबको महीन पीसकर प्याज़ के रस में घोटकर मूंग के बराबर गोलियां बना लें। तीन-चार दिन तक 1-1 गोली सेब के ताज़ा रस के साथ सेवन कराएं। ग्रंथिक ज्वर (ताऊन) रोग की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

□ याक़ूत रुम्मानी, याक़ूत ज़र्द, काफूरी यशब, कहरुवा शमई, कबाबचीनी, नारमृश्क, दरूनज अकरबी, जुरंबाद, लाल चंदन, छिला हुआ धनिया, अम्बर अशहब, फादेज़हर हैवानी—प्रत्येक 13.50 माशा, सोंठ, जरिश्क, तेज़पात, नागरमोथा, शकाकुल मिश्री, नीलोफ़र के फूल—प्रत्येक 1.50 तोला, गावज़बान, बिजौरे का पीला छिलका, सफ़ेद बं[illegible]चन, कतरा हुआ अबेशम—प्रत्येक 2.50 तोला, बिल्ली-

किरफा, क्षुद्र और वृहद्एला, गिल अरमनी, गिल मख्तूम, केसर, जदवार खताइ, सोने के वर्क़, चांदी के वर्क़—प्रत्येक 4.50 माशा एवं कस्तूरी 9 माशा लें। मीठा अनार, गावज़बान, चंदन का अर्क़ आदि औषध-द्रव्यों के प्रमाण से तीन गुना लेकर चाशनी बनाएं और औषधियों को कूट-छानकर मिलाएं। इसे 7 माशा ताजे पानी से प्रात:काल सेवन-करें। यह प्लेग और विशूचिका के लिए लाभकारी है।

नज़ला-जुकाम

नज़ला एवं ज़ुकाम ऋतु परिवर्तन के कारण होते हैं। सर्दी-गरमी के प्रकोप से भी ये संभव हैं। प्राय: सर्दियों में गरम पानी से नहाकर, स्नान-गृह से खुली हुई ठंडी वायु में आने पर सर्दी लग जाने से यह रोग हो जाता है। कभी-कभी यह रोग पुराने भी पड़ जाते हैं, जैसे—श्वास आगे चलकर दमा आदि का रूप धारण कर लेता है। अत: ऋतु परिवर्तन के समय शरीर की सुरक्षा आवश्यक है।

नुस्ख़े

❑ सौंफ़, खीरा-ककड़ी के बीज और सूखा पुदीना—प्रत्येक 4 माशा, बनफ़शा के फूल 9 माशा, परसियावाशां 9 माशा, अंजीर पीली 22.50 माशा, अलसी के बीज 4.50 माशा, उन्नाब 40 दाना, लिसोढ़ा 70 दाना, पोस्ते की डोंडी 1 तोला, छिली हुई मुलेठी 14 माशा, उस्तूख़ूदूस 14 माशा, गावज़बान 7 माशा, गावज़बान के फूल, जुफा ख़ुश्क, मेथी, बाकला—प्रत्येक 14 माशा लें। इन सबको आधा सेर पानी में इतना पकाएं कि पानी आधा जल जाए। इसको मल-छानकर इसमें आधा सेर मिश्री की चाशनी तैयार करें। चाशनी बन जाने पर बादाम की गिरी 6 माशा और पोस्तदाने का शीरा 6 माशा मिलाएं। फिर मुलेठी का सत 2 माशा, शकरतीगाल 2 माशा, गोंद बबूल, कुंदुरु मग़ज़, बिहीदाना—प्रत्येक 2 माशा और मुरमक्की 1 माशा पीसकर मिलाएं। इसे 3 माशा से 5 माशा तक की मात्रा में 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ खाएं। जिन लोगों को ऋतु परिवर्तन से बार-बार नज़ला-ज़ुकाम हो जाता है, उनके लिए यह नुस्ख़ा बहुत मुफ़ीद है।

❑ शुद्ध बछनाग 1.50 माशा, कलमी शोरा 9 माशा, कपूर 6 माशा और अहिफेन 2 माशा लें। इन सबको बारीक खरल करके, पानी की सहायता से मूंग के बराबर गोलियां बनाएं। एक-एक गोली दोनों वक़्त खाएं। यह हर तरह के नज़ले के लिए उपयोगी है।

❑ पोस्तदाना, सफ़ेद चंदन, ऊदसलीब, परसियावाशां, मुलेठी—प्रत्येक 2 तोला, बीज निकाले मुनक़्क़े 25 दाना, मिश्री आधा सेर; गुलाब के फूल, गावज़बान,

सौंफ़, ख़तमी-बीज—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको कूट-पीसकर शर्बत बनाएं। 1 तोला शर्बत 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ लेने से नज़ला, जुकाम और खांसी में लाभ होता है।

❑ गोंद बबूल, अहिफेन, कतीरा, ख़ुरासानी अजवायन, काहू के बीज, लुफाह की जड़, मुलेठी का सत और केसर—प्रत्येक 4 तोला लें। इन सबको महीन पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। जब भी नज़ले-जुकाम की शिकायत हो, 1 गोली पानी से निगल लें।

❑ नीम के पत्ते, तंबाकू के पत्ते, धनिये के सूखे पत्ते, सिरस के बीज, उस्तूखुदूस के फूल, सफ़ेद इलायची—प्रत्येक 4 माशा लें। इन सबको कूट-पीसकर रख लें। इसमें से थोड़ी-सी चुटकी में लेकर नस्य लें। यह नज़ला-जुकाम में शीघ्र प्रभावी है।

❑❑

10

खांसी एवं श्वास रोग

सर्दी-गरमी के कारण ही खांसी एवं श्वास के रोगों की उत्पत्ति होती है। खांसी आने का मुख्य कारण कफ का जम जाना होता है, जबकि श्वास रोग खांसी आदि के बाद उत्पन्न होता है। खांसी विभिन्न प्रकार की होती है, जिसके रोगोपचार हेतु निम्न नुस्ख़े प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

नुस्ख़े

❑ पिसा हुआ नमक 1 पाव एवं नौसादर 1 तोला लें। नौसादर को नमक के बीच तवे पर रखें और एक खाली प्याला ऊपर से औंधा रख दें। फिर तवे को चूल्हे पर रखकर दो घंटे तक धीमी आंच दें। इसके बाद आंच बंद कर दें। जब तवा आदि ठंडा हो जाए, तो नौसादर को निकालकर बारीक पीस लें। 2 रत्ती की मात्रा में यह नौसादर मक्खन में मिलाकर सेवन करें। इससे सूखी खांसी में लाभ होता है। यदि खांसी तर हो तो नौसादर बताशे में रखकर खाएं। इससे खांसी के साथ-साथ श्वास रोग भी ठीक हो जाता है।

❑ रोग़न बनफ़शा, रोग़न कद्दू—प्रत्येक 1.50 तोला और मोम 1 तोला लें। इन्हें पिघलाकर काहू का रस, हरे धनिये का रस—प्रत्येक 1 तोला में मिलाकर वक्ष पर मालिश करें। सूखी खांसी में सीने को तर रखने के लिए यह अतीव गुणकारी है।

❑ छिली हुई मुलेठी, इसबगोल—प्रत्येक 3 तोला, चीनी 1 पाव, कोकनार मुसल्लम 20 नग; ख़तमी बीज, कतीरा, बबूल का गोंद, शीरा-ककड़ी के बीज, बिहीदाना—प्रत्येक 1 तोला 5 माशा लें। कोकनार मुसल्लम (पोस्ते की डोंडी), बिहीदाना और ख़तमी के बीजों को रात्रि में तिगुने उष्ण जल में भिगोकर सवेरे आंच पर रखें। जब आधा जल शेष रह जाए, तो उसे उतारकर कपड़े में छानें और चीनी मिलाकर चाशनी करें। अब कतीरा और बबूल का गोंद पीसकर उसमें मिला दें। इसे 1 तोला की मात्रा में मुंह में रखकर चूसें। नज़ला और खांसी में लाभ होगा।

❑ गोंद बबूल, कतीरा, गेहूं का सत, मुलेठी का सत, चीनी—प्रत्येक 70

बच्चे को 1 रत्ती, 2 वर्ष के बच्चे को 2 रत्ती, इसी हिसाब से आयु के अनुसार मात्रा बढ़ा-घटाकर अजवायन के अर्क के साथ दें। यह काली खांसी की गुणकारी औषधि है।

❑ सफेद संखिया 2 माशा, अर्क क्षीर 10 तोला, तीक्ष्ण (तेज) तंबाकू 5 तोला और अहिफेन 1 तोला लें। इन सबको अच्छी तरह खरल करें। फिर 2 तोला एलुआ डालकर ख़ुरासानी अजवायन का चूर्ण 2 तोला और धतूर के बीज 2 तोला मिलाकर पुन: खरल करें। जब मिश्रण शुष्क हो जाए तो सुरक्षित रख लें। अब 4 रत्ती इस औषधि में 5 तोला बादाम का तेल डालकर खरल करें और सोलह मात्राएं बना लें। नित्य 3 से 4 मात्रा का सेवन करें। यह श्वास रोग (दमा) के लिए लाभप्रद है।

❑ दालचीनी, जावित्री, कबाला और सफेद पोस्ता के दाने, मीठे बादाम की गिरी, अंबर, अशहब, निकत जदवार, छिले बकायना के बीज, मुलेठी, बोल (मुरक्की), शिलारस, गावजबान के बीज, जहरमोहरा खताई, नीली झांई के बंसलोचन, शुद्ध कस्तूरी, रक्त प्रवालमूल, प्रवालशाखा, हरा पशब, याकूत रुम्मानी, जराबंद मुदहरज, रूमी मस्तगी, छोटी इलायची के बीज, गावजबान के फूल—प्रत्येक 1 माशा, मुक्ता पिष्टी (मरवारीद महलूल), काकड़ासींगी—प्रत्येक 2 माशा, गोंद बबूल, कतीरा, केसर, मुलेठी का सत, शकरतीगाल—प्रत्येक 1.50 माशा और शुद्ध अहिफेन 3 माशा लें। इन सबको पीसकर गावजबान का लुआब मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। एक-एक गोली दिन में तीन बार मुंह में डालकर उसका रस चूसते रहें। यह दमा नाशक है।

❑❑

ग्राम; छिलका उतारी हुई मीठे बादाम की गिरी, मीठे कद्दू के बीजों की गिरी– प्रत्येक 35 माशा लें। सबको कूट-पीसकर मीठे बादाम के तेल में स्नेहाक्त करके आवश्यकतानुसार गुलाब का अर्क़ मिलाकर चटनी बनाएं। 4 माशा चटनी प्रात:काल चाटने से सूखी खांसी दूर होती है तथा कंठ-स्वरयंत्रस्थ प्रदाह का शमन होता है।

❑ सफ़ेद ख़तमी के बीज, खीरा-ककड़ी के बीज—प्रत्येक 4 माशा, बिहीदाना 3 माशा, पोस्ते की डोंडी 2 तोला, लिसोढ़ा 50 नग, उन्नाब 20 नग और मुलेठी 1 तोला लें। इन सबको 2 सेर पानी में उबालें तथा आधा सेर चीनी की चाशनी तैयार करें। चाशनी में जौ का शीरा, छिलका उतरी बादाम की गिरी का शीरा, पोस्तदाने का शीरा—प्रत्येक 1 तोला मिलाएं। पूर्ण रूप से चाशनी तैयार होने पर मुलेठी का सत, कतीरा और बबूल का गोंद—प्रत्येक 3 माशा पीसकर मिला दें। इस प्रकार यह गाढ़ी चटनी तैयार हो जाएगी। 7 माशा यह चटनी सुबह-शाम चाटें। यह खांसी, नज़ला और श्वास रोगों में गुणकारी है।

❑ ख़तमी और खुब्बाजी के बीज—प्रत्येक 17.50 माशा, परसियावाशां 12.25 माशा, छिली हुई मुलेठी, जूफा शुष्क—प्रत्येक 2 तोला 4 माशा, उन्नाब 30 नग, लिसोढ़ा 50 नग, सफ़ेद अंजीर 24 नग और बनफ़शा के फूल 14 माशा लें। इन सबको पानी में उबालकर छान लें। फिर आधा सेर चीनी मिलाकर गाढ़ी चटनी बनाएं। इसे दिन भर में कई बार चाटें। हर बार चाटने की मात्रा 1 तोला से कम नहीं होनी चाहिए। यह चटनी खांसी एवं श्वास को दूर कर वक्ष को कफ दोषों से मुक्त करती है।

❑ तुख़्म मीरद (विलायती मेहंदी के बीज), गावज़बान के फूल, सूखा धनिया—प्रत्येक 1 तोला 5.50 माशा, बस्तूखूदूस 0.50 तोला 2.25 माशा, काहू के बीज 2.50 तोला 5 माशा, ख़ुरासानी अजवायन, कोकनार मुसल्लम—प्रत्येक 4 तोला 4.50 माशा, सफ़ेद खश के बीज 5.50 तोला 4 माशा लें। सबको रात भर पानी में भिगोकर सुबह पकाएं। फिर मल-छानकर तीन गुना मिश्री मिलाकर चाशनी तैयार करें। तदुपरांत गुलाब के फूल, सूखा धनिया, मुलेठी का सत, गेहूं का सत, बबूल का गोंद, कतीरा, मुरक्की—प्रत्येक 0.50 तोला 2.25 माशा बारीक पीसकर मिला लें। इसे 7 माशा 2 तोला की मात्रा में शर्बत खशखश और 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ प्रात:काल निहार मुंह खाएं। यह हर प्रकार के गरम-सर्द नज़ले एवं खांसी के लिए लाभकारी है।

❑ केले के वृक्ष के तने का रस 10 तोला और फिटकिरी 1 तोला लें। फिटकिरी को लोहे के तवे या कड़ाही में पिघलाएं तथा केले के तने के रस का छींटा देते रहें। जब सारा रस समाप्त हो जाए, तो तवे को चूल्हे से उतार लें। उसे 1 वर्ष के

बच्चे को 1 रत्ती, 2 वर्ष के बच्चे को 2 रत्ती, इसी हिसाब से आयु के अनुसार मात्रा बढ़ा-घटाकर अजवायन के अर्क़ के साथ दें। यह काली खांसी की गुणकारी औषधि है।

❑ सफ़ेद संखिया 2 माशा, अर्क़ क्षीर 10 तोला, तीक्ष्ण (तेज़) तंबाकू 5 तोला और अहिफेन 1 तोला लें। इन सबको अच्छी तरह खरल करें। फिर 2 तोला एलुआ डालकर ख़ुरासानी अजवायन का चूर्ण 2 तोला और धतूर के बीज 2 तोला मिलाकर पुनः खरल करें। जब मिश्रण शुष्क हो जाए तो सुरक्षित रख लें। अब 4 रत्ती इस औषधि में 5 तोला बादाम का तेल डालकर खरल करें और सोलह मात्राएं बना लें। नित्य 3 से 4 मात्रा का सेवन करें। यह श्वास रोग (दमा) के लिए लाभप्रद है।

❑ दारचीनी, जावित्री, काला और सफ़ेद पोस्ता के दाने, मीठे बादाम की गिरी, अंबर, अशहब, तिक्त जदवार, छिले बकला के बीज, मुलेठी, बोल (मुरक्की), शिलारस, गावज़बान के बीज, ज़हरमोहरा खताई, नीली झांई के बंसलोचन, शुद्ध कस्तूरी, रक्त प्रवालमूल, प्रवालशाखा, हरा यशब, याक़ूत रुम्मानी, जराबंद मुदहरज, रूमी मस्तग़ी, छोटी इलायची के बीज, गावज़बान के फूल—प्रत्येक 1 माशा, मुक्ता पिष्टी (मरवारीद महलूल), काकड़ासींगी—प्रत्येक 2 माशा, गोंद बबूल, कतीरा, केसर, मुलेठी का सत, शकरतीगाल—प्रत्येक 1.50 माशा और शुद्ध अहिफेन 3 माशा लें। इन सबको पीसकर गावज़बान का लुआब मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। एक-एक गोली दिन में तीन बार मुंह में डालकर उसका रस चूसते रहें। यह दमा नाशक है।

❑❑

11

तपेदिक (राजयक्ष्मा)

वर्तमान में इस रोग को टी.बी. के नाम से अधिक जाना जाता है। यह भी संक्रामक रोग है। अधिक मानसिक परिश्रम, ख़राब भोजन, अधिक स्त्री-प्रसंग, हस्तमैथुन की अधिकता, अधिक शराब पीना आदि से इस रोग की उत्पत्ति हो जाती है। इस रोग का आक्रमण बहुत धीरे-धीरे और गुप्त रूप से होता है। पहले सूखी खांसी, बाद में तर, कफ में पीब या रक्त, शरीर का क्षय, संध्या के समय हल्का ज्वर और रात्रि में पसीना इसके प्रधान लक्षण हैं। आलस्य, गला बैठना, चलने पर हांफना आदि लक्षण भी धीरे-धीरे दिखाई पड़ते हैं। कभी-कभी अजीर्ण और मंदाग्नि के कारण भी व्यक्ति इस रोग के फेर में पड़ जाता है।

नुस्खे

❑ गुलकंद, बीज निकला मुनक़्क़ा (दाख), किशमिश—प्रत्येक 5 तोला, बादाम की गिरी 20 तोला, शर्बत बनफ़शा आधा सेर, शर्बत नीलोफर तीन पाव, मिश्री आधा सेर, अर्क़ बेदमुश्क तीन पाव; मुक्ता, कहरुवा और माणिक की पिष्टियां 1-1 तोला, पोस्ते की डोंडी, पोस्ते का दाना—प्रत्येक 5 तोला, खीरा व ककड़ी के बीज की गिरी बिहीदाने का मग़ज़, कद्दू का मग़ज़ (बीज की गिरी), बबूल का गोंद, कतीरा, कासनी के बीज, अंतर्धूम में जलाया हुआ केकड़ा, छिले हुए काहू के बीज, सफ़ेद चंदन, सूखा धनिया, गेहूं का सत, बंसलोचन, गिल अरमनी, परशियावशां, छिली हुई मुलेठी, खरबूज़े के बीज की गिरी, गावज़बान के फूल, केसर, बनफ़शा के फूल और कपूर—प्रत्येक 2 तोला लें। पहले अर्कों में मिश्री डालकर चाशनी बनाएं। फिर शेष सामग्रियों को कूट-पीस और छानकर, चाशनी में मिलाकर माजून तैयार करें। 5 माशा माजून अर्क़ हराभरा के साथ नित्य सेवन करें। राजयक्ष्मा (तपेदिक) के लिए यह अतीव गुणकारी है।

❑ कहरुवा शमई, सत मुलेठी, गुलाब की कली—प्रत्येक 9 माशा, खीरा व ककड़ी के बीज की गिरी 1 तोला, बबूल का गोंद 4.50 माशा, अंतर्धूम में जलाया

हुआ बुस्सद (प्रवालमूल) 4.50 माशा, कैसूरी कपूर 3.50 माशा, केसर, कतरा हुआ अब्रेशम—प्रत्येक 6.50 रत्ती, अनबिध मोती, सफ़ेद बंसलोचन, अंतर्धूम में जलाया हुआ मीठे पानी का केकड़ा, काहू के बीज, पोस्तदाना, कुलफे के छिले हुए बीज, कतीरा—प्रत्येक 1 तोला 1.50 माशा लें। इन सबको कूट-छानकर हरे बारतंग के स्वरस से टिकिया बनाकर सुखा लें। 3 माशा टिकिया ताज़े पानी से नित्य प्रयोग करें। इससे ज्वर शांत होता है तथा तपेदिक का रोग धीरे-धीरे ठीक होता जाता है।

❑ माणिक (याक़ूत), अनबिध मोती, पन्ना, पुखराज, फ़िरोज़ा, जहरमोहरा खताई, प्रवालमूल, कहरुवा, बंसलोचन, सोने व चांदी के वर्क़—प्रत्येक 6 माशा, अम्बर 4 माशा, कस्तूरी, मोमियाई—प्रत्येक 3 माशा, नारियल (दरियाई), जदवार—प्रत्येक 1.50 माशा, केवड़ा, गुलाब, बेदमुश्क अर्क़—प्रत्येक 4 तोला लें। पहले कस्तूरी और अंबर के अलावा शेष सभी को अलग-अलग खरल करके मिला लें। फिर कस्तूरी और अंबर को मिलाकर 1-1 रत्ती की गोलियां बनाएं। आधी से एक गोली केवड़ा, गुलाब व बेदमुश्क में हल करके (घोलकर) पिलाएं। यह फेफड़ों को बलशाली बनाकर तपेदिक को दूर भगाने में सक्षम है।

❑ सफ़ेद चंदन, छोटी इलायची के बीज और बंसलोचन—प्रत्येक 9 माशा, अगर, दरूनज अकरबी, सफ़ेद बहमन, जुरंबाद—प्रत्येक 2 तोला 8 माशा, मुक्ता, बुस्सद सोख़्ता, कहरुवा, अंतर्धूम में जलाया हुआ नहर का केकड़ा, कतरा हुआ अब्रेशम, लाल चंदन और कपूर—प्रत्येक 4 माशा, केसर 2.25 माशा, कस्तूरी आधा माशा, अंबर अशहब 1 माशा, गुलाब के फूल 1.50 तोला, गावज़बान 1 तोला 4.50 माशा, काहू के छिले बीज, खरबूज़े के बीज की गिरी, कद्दू के बीज की गिरी, खीरे के बीज की गिरी और कुलफा के बीज—प्रत्येक 14 माशा, सेब, अनार एवं बिही का सत लें। पहले कुल औषध-द्रव्यों के भार जितनी शर्करा लेकर चाशनी बनाएं। फिर इसमें औषध-द्रव्यों का चूर्ण बनाकर मिला दें। 3 माशा यह औषध प्रात:काल ताज़े जल से सेवन करें। यह उष्ण प्रकृति के राजयक्ष्मा (तपेदिक) रोगियों के लिए अत्युपयोगी है। इसके नित्य सेवन से वातिक ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

❑ सपिस्तां 60 अदद, उन्नाब 20 अदद, कतीरा 10 माशा, बबूल का गोंद 10 माशा, बिहीदाना 1 तोला 5.50 माशा, मुलेठी, ख़तमी व खुब्बाजी के बीज, नीलोफ़र व बनफ़शा के फूल—प्रत्येक 2 तोला 4 रत्ती, अड़ूसे के पत्ते आधा सेर और सफ़ेद चीनी 1 सेर लें। कतीरा और बबूल के गोंद को छोड़कर शेष सभी द्रव्यों को उबालकर छान लें। फिर उसमें चीनी डालकर चाशनी बनाएं तथा बबूल का गोंद व कतीरा का कपड़छन चूर्ण मिलाएं। रोज़ाना 2 तोला शर्बत 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह सूखी खांसी और राजयक्ष्मा के लिए लाभकारी है।

❑ गिल अरमनी, जहरमोहरा (पिष्टी)—प्रत्येक 1.50 तोला, बबूल का गोंद

6 माशा, बंसलोचन, मुक्ता पिष्टी, सफ़ेद चंदन, सूखा धनिया—प्रत्येक 3 तोला, बिनौले की गिरी, बादाम की मीठी गिरी—प्रत्येक 6 तोला तथा कैसूरी कपूर 9 माशा लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर मूंग के दाने के बराबर गोलियां बनाएं और उन पर चांदी का वर्क़ चढ़ा दें। 2 गोलियां 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन कराएं। इससे तपेदिक रोग शीघ्र चला जाता है।

❑ अनार के दाने की आकृति का रक्तवर्ण माणिक (याक़ूत रुम्मानी), पन्ना, अनबिध मोती, लाल बदख़्शां, कहरुवा, सफ़ेद संगेयशब और कैसूरी कपूर—प्रत्येक 3.50 माशा, अंजबार जड़ की छाल, गिल अरमनी, सफ़ेद चंदन—प्रत्येक 2.25 माशा, मुलेठी का सत, बबूल का गोंद, कतीरा, गेहूं का सत, अंतर्धूम में जलाया हुआ केकड़ा, गुल नीलोफ़र, सफ़ेद बंसलोचन, सफ़ेद पोस्ते की डोंडी, गावज़बान के फूल—प्रत्येक 4.50 माशा और केसर 3.75 रत्ती लें। पहले रत्नों को गुलाब के अर्क़ (12 तोला) में खरल करके पिष्टी बनाएं। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर, सबको मिलाकर बिहीदाने के लुआब में घोटकर मूंग के दाने के बराबर गोलियां बनाएं। 2-2 गोली सुबह-शाम 2 तोला अर्क़ गावज़बान या 2 तोला सेब अथवा अनार के शर्बत के साथ सेवन कराएं। यह उत्तमांगों को बल देने वाला और राजयक्ष्मा के लिए गुणकारी है।

❑ ज़हरमोहरा, गिल अरमनी—प्रत्येक 9 माशा, बबूल का गोंद 3 माशा, मुक्ता, बंसलोचन, श्वेत चंदन और धनिया सूखा—प्रत्येक 1.50 तोला, कैसूरी कपूर 4.50 माशा, कद्दू और बिनौले की गिरी—प्रत्येक 3 तोला लें। सबको कूट-छानकर चने के बराबर गोलियां बनाकर उन पर चांदी का वर्क चढ़ा दें। यह गोलियां 1 से 2 माशा तक 12 तोला अर्क़ नीलोफ़र के साथ सेवन करें। इससे तपेदिक रोग का शमन हो जाता है।

❑ बंसलोचन, कहरुवा, पोस्त, खशखश, कपूर, संगज़राहत, गिल अरमनी—प्रत्येक 3 माशा, अंतर्धूम में जलाया हुआ केकड़ा 2.50 तोला, गेहूं का सत, खीरा-ककड़ी के बीज की गिरी—प्रत्येक 1 तोला, गुलाब के फूल, मुलेठी का सत, कतीरा, बबूल का गोंद, भुने हुए कुलफे के बीज—प्रत्येक 9 माशा और अहिफेन 1 माशा लें। सबको कूट-छानकर बिहीदाना के लुआब से टिकियां बनाएं। 4 माशा की मात्रा में यह टिकिया 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ उपयोग करें। यह क्षयरोग नाशक है।

❑ अनबिध मोती, बंसलोचन, अंतर्धूम में जलाया हुआ नदी का केकड़ा, तुख़्म खशखश सफ़ेद, काहू के बीज, कुलफे के छिले हुए बीज, कतीरा—प्रत्येक 1.50 माशा, कहरुवा शमई 9 माशा, गुलाब के फूल 9 माशा, खीरा-ककड़ी के बीज

की गिरी 22.50 माशा, बबूल का गोंद, बुस्सद सोख़्ता—प्रत्येक 4.50 माशा, कपूर 3.50 माशा, केसर 1.50 माशा और कतरा हुआ अब्रेशम 1.50 माशा लें। इन सबको कूट-पीसकर यथाविधि टिकियां बनाएं। इसे 5 माशा सुबह और 5 माशा शाम को उचित अनुपान द्वारा सेवन करें। इससे कुछ ही दिनों में क्षयरोग समाप्त हो जाता है।

❑ मिश्री, बबूल का गोंद, कतीरा, गुलाब के फूल, बंसलोचन—प्रत्येक 7 माशा, मुलेठी 5 माशा, गेहूं का सत, कुलफा—प्रत्येक 7 माशा, लाल और सफ़ेद चंदन—प्रत्येक 3 माशा, काहू के बीज 3 माशा, मुलेठी का सत 5 माशा, कैसूरी कपूर 1 माशा, मीठे कद्दू की गिरी, खीरा, ककड़ी और खरबूज़े के बीज की गिरी, तुख़्म खशखश—प्रत्येक 9 माशा और सरतान सोख़्ता 1 तोला लें। इन सबको कूट-छानकर इसबगोल के लुआब में टिकियां बना लें। यह तपेदिक तथा तपेदिक के कारण होने वाले बुख़ार, खांसी और श्वास में लाभकारी है। इसे 7 माशा की मात्रा में 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें।

❑ कोकनार 30 नग, बिहीदाना 13.50 माशा, सफ़ेद ख़तमी के बीज, छिली हुई मुलेठी, केकड़ा—प्रत्येक 2.50 माशा लें। इनको बारिश के पानी या गावज़बान-अर्क 1 सेर में रात के वक़्त भिगोकर रख दें और सुबह ख़ूब पकाएं। पानी आधा रह जाने पर छान लें। फिर इसबगोल का लुआब 3.75 तोला और आधा सेर चीनी मिलाकर ख़मीरा के समान गाढ़ी चाशनी (पाक) कर लें। चाशनी के अंत में अकाकिया, गुडूची सत्व और बंसलोचन—प्रत्येक 4.50 माशा, बबूल का गोंद, कतीरा—प्रत्येक 2.50 माशा, केसर, ख़ुरासानी अजवायन—प्रत्येक 1.50 माशा, कहरुबा शमई और बिना सूराख वाला मोती—प्रत्येक 2.25 माशा लें। इन सबको अलग-अलग अच्छी तरह खरल करके थोड़ा-थोड़ा डालकर हिला-हिलाकर अच्छी तरह मिला लें। 6 माशा यह दवा गदही या छागी के दूध के साथ उपयोग करें। इसके बाद सहनशक्ति का विचार करते हुए दवा की मात्रा बढ़ाते जाएं और 2 तोले तक पहुंच जाएं। यह क्षय, नज़ला-ज़ुकाम, खांसी और समस्त फुफ्फुस रोगों के लिए लाभदायक है।

❑❑

12

त्वचा के रोग

शरीर की त्वचा में ताप, शीतलता और दूसरे अनुभवों को ग्रहण करने की अपनी क्षमता होती है। त्वचा अपनी सामर्थ्यता के अनुसार ही किसी वस्तु को ग्रहण करती है। इसलिए जब प्रतिकूल खाद्य पदार्थों के अति सूक्ष्म कण उसमें प्रवेश करते हैं तो शारीरिक शक्ति उन्हें निष्कासित करती है। यह निष्कासन त्वचीय रोग के रूप में उभर कर सामने आता है। वैसे तो त्वचीय रोगों की भरमार है, किन्तु हम कुछ ख़ास किस्म के रोगों का ही यहां उल्लेख कर रहे हैं।

कुष्ठ रोग

वात, पित्त और कफ दोषों के कुपित होने से शरीर में रस, रक्त, मांस और जल विकृत हो जाते हैं। इसके दूषित प्रभाव से कुष्ठ रोग की उत्पत्ति होती है। रोग के प्रारंभ में मांसपेशियों में दर्द होता है और रोगी को ज्वर (बुख़ार) हो जाता है। शरीर के विभिन्न अंगों में खुजली हो जाती है। त्वचा अधिक चिकनी एवं स्निग्ध अनुभव होती है। थोड़ी-सी धूप लगने एवं परिश्रम करने पर त्वचा में जलन होने लगती है। उस पर किसी स्पर्श का अनुभव नहीं होता। लाल-लाल व्रण बनने लगते हैं, शोथ उत्पन्न हो जाता है और फिर पूय का स्राव होने लगता है। खान-पान में लापरवाही या मछली खाकर दूध पी लेना आदि कारणों से रक्त दूषित होकर कुष्ठ रोगों की उत्पत्ति होती है। कुछ रोग बहने-गलने वाले होते हैं तो कुछ केवल दाग़ों वाले। सफ़ेद दाग़ों को भी कुष्ठ रोग का एक हिस्सा माना जाता है।

नुस्ख़े

❑ जंगली अंजीर के वृक्ष की छाल, नीम की छाल, चाकसू, पंवाड़ के बीज और बकुची—प्रत्येक 2 तोला लें। इन सबको कूट-पीस और छानकर चूर्ण बनाएं। यह चूर्ण 6 माशा की मात्रा में रात को पानी में भिगो दें। सवेरे इसका निथरा हुआ पानी रोगी को पिलाएं और सीठी पीसकर दाग़ों पर लेप करें। केवल सादी बेसनी

रोटी के अलावा कोई अन्य आहार न दें। यह कुष्ठ रोग के लिए गुणकारी औषधि है। जब तक पूरा लाभ न हो जाए, इलाज बराबर जारी रखें।

❑ संखिया एवं पारा—प्रत्येक 3 माशा, रेवंद चीनी 9 माशा, कुंदुर 1.50 माशा और बबूल का गोंद 6 माशा लें। पहले आवश्यकतानुसार नीबू का रस लेकर उसमें पारा को अच्छी तरह खरल करें। फिर शेष द्रव्यों को कूट-छानकर बकरी के पित्त में मिलाकर मूंग के बराबर गोलियां बना लें। रोगी को 1-1 गोली सुबह-शाम खिलाएं। ये गोलियां कुष्ठ रोग में बहुत अच्छा काम करती हैं। अम्ल पदार्थ इन गोलियों के सेवनकाल में अपथ्य हैं।

❑ बकुची 3 तोला, चीता 3 तोला और देशी नील 3 तोला लें। इनको महीन पीसकर चूर्ण बनाएं और सिरका मिलाकर टिकिया बना लें। 1 टिकिया पानी में घिसकर कुष्ठ के ज़ख़्मों-दाग़ों पर लगाएं। इससे शीघ्र लाभ होता है।

❑ कतीरा लाजवर्द, चोब चीनी वर्दी, शुद्ध आंवलासार गंधक, शिंगरफ—प्रत्येक 2 तोला लें। सबको बारीक करके तीन रात-दिन गुलाब के अर्क़ में भिगोकर रखें। फिर सबको कतीरा के लुआब में मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। रोगी को रोज़ 2 गोली खिलाकर ऊपर से पित्त पापड़ा का अर्क़ 5 तोला और चोब चीनी का अर्क़ 5 तोला पिलाएं। इन गोलियों के सेवन से गलित कुष्ठ और आतशक आदि में.भी लाभ होता है।

❑ आंवलासार गंधक, मुरदासंग, अंजीर की छाल, बकुची—प्रत्येक 1 तोला लें। सबको महीन पीसकर अदरक के रस में घोटकर बड़ी-बड़ी टिकिया बनाकर रखें। यथावश्यक 1 गोली अदरक के रस में घिसकर, इसका लेप पीड़ित स्थान पर करें। यह हर प्रकार के (गीला, बहने वाला तथा शुष्क) कुष्ठ रोगों में परम लाभकारी है।

दाद

यह बहुत अधिक खुजैला और कष्टकर रोग है। यह जहां भी होता है, एक रिंग की शक्ल में होता है। इस रिंग में छोटे-छोटे लाल दाने से उभरे दिखाई देते हैं, जिनमें बहुत खुजली होती है। रोगी इस रोग से बहुत परेशान होता है। यह कहीं भी हो सकता है।

नुस्ख़े

❑ चौकिया सुहागा 1 तोला, पालकजूही की जड़ की छाल 2 तोला और कलौंजी 6 तोला—सबको बारीक पीसकर, दही में घोलकर दो दिन रखा रहने दें, जिससे यह सड़ जाए। तीसरे दिन से इसे दाद पर लगाएं। यह दाद को बिना कष्ट के शीघ्र दूर करता है।

❑ आमलासार गंधक, रक्त गुग्गुल और मूली के बीज—प्रत्येक 1 तोला, नीला थोथा 6 माशा। इनको मूली के रस में खरल करके लंबी-लंबी बत्तियां (या गोलियां) बना लें। आवश्यकतानुसार 1 गोली या 1 बत्ती जल या मूली के रस में घिसकर दाद पर लगाएं। यह दाद के लिए चमत्कारी, उत्कृष्ट भैषज है। प्रायः तीन ही दिन में इसका गुण प्रकाशित हो जाता है। इसको कोमल-से-कोमल स्थान पर लगा सकते हैं। कुछ दिन के प्रयोग से ही दाद का नामोनिशान मिट जाता है।

❑ आमलासार गंधक, पारा, मुरदासंग, बबूल का गोंद और मिश्री—प्रत्येक समभाग लें। पहले गंधक और पारा की कज्जली करें, फिर शेष द्रव्य को बारीक पीसकर पानी के साथ गोलियां बना लें। एक गोली थोड़े पानी में घिसकर सुबह-शाम दाद पर पतला लेप करें। इसके उपयोग से पहले ही दिन खाज बंद हो जाएगी और पांच-छह दिन में दाद समूल नष्ट हो जाएगा।

कण्डू (खुजली)

कण्डू स्वयं में कोई स्वतंत्र रोग नहीं है। प्रायः दूसरे रोगों के कारण शरीर में कण्डू (खुजली) की उत्पत्ति होती है। शरीर की त्वचा में तैलीय ग्रंथियां होती हैं। आहार में उष्ण, तेल, मिर्च, चटपटे, मसालेदार तथा मादक द्रव्यों के सेवन से शरीर में शुष्कता उत्पन्न होती है तो ग्रंथियों में स्निग्धता गायब हो जाती है और ऐसे में शुष्क त्वचा में खुजली होने लगती है।

नुस्ख़े

❑ आमलासार गंधक, गेरू, कालीजीरी (जीरा स्याह)—प्रत्येक 6 माशा। तीनों को खूब महीन कूटकर कपड़छन करें और तीन पुड़िया बना लें। दो पुड़िया तीन घंटे के अंतर से दही के साथ खा लें और दिन भर थोड़ा-थोड़ा करके दही पीते रहें। किन्तु दही अम्ल न होना चाहिए। तीसरी पुड़िया शुद्ध सरसों के 5 तोला तेल में मिलाकर सारे शरीर पर मलें। सायंकाल को दही और ख़श का शरबत मिलाकर सेवन करें। इसके प्रयोग से एक ही दिन में हर तरह की खुजली दूर हो जाती है।

❑ आमलासार गंधक, कमीला, नीलाथोथा, मुरदासंग—सबको एक समान मात्रा में लेकर, कूट-पीसकर और कपड़े में छानकर शुद्ध घी में गरम करके प्रलेप बना लें। 1 से 2 तोला तक 3 तोला मक्खन मिलाकर शरीर पर मालिश करें और 1 घंटा धूप में बैठें। इसके उपरांत स्नान कर लें। यह कण्डू के लिए सिद्ध भैषज है।

❑ भुना हुआ तूतिया 3 माशा, पारा, सफेद राल, कमीला, मुरदासंग, सिंदूर, काली मिर्च, मेहंदी के हरे पत्ते का रस—प्रत्येक 6 माशा। सबको खरल करके 21 बार जल से धोया हुआ गाय का घी 4 तोला मिलाकर रखें। मरहम की भांति इसे खाज पर लगाएं। इससे खाज का शीघ्र शमन हो जाता है।

❑❑

13

बाल रोग

छोटे बालकों को भी बड़ों के समान भांति-भांति के रोग हुआ करते हैं। लेकिन कुछ रोग ऐसे हैं जो केवल बालकों को ही होते हैं। निम्नलिखित नुस्ख़े बालकों के साधारण और गंभीर रोगों के शमन के लिए विशेष उपयोगी हैं।

नुस्खे

❑ तुलसी के बीज, काली मिर्च, बंसलोचन, गुडूची सत्त्व, सफ़ेद जीरा—प्रत्येक 2 तोला लें। सबको बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। चार घंटे के अंतर से 1-1 गोली माता के दूध में घोलकर बालक को पिलाएं। यह बालकों के हर प्रकार के ज्वर में लाभकारी है।

❑ हरिताश्म (ज़हरमोहरा खताई), दरियाई बंसलोचन, हज्रुलयहूद, पीली हरड़ का छिलका, छोटी इलायची के दाने, गुलाब के फूल, केसर—प्रत्येक 6 माशा और अबीध मोती 4 रत्ती लें। सबसे पहले मोती को अकेले ही रूह केवड़ा में एक घंटे तक खरल करें। फिर शेष द्रव्यों को बारीक करके मोती की पिष्टी में मिलाएं और मूंग के बराबर गोलियां बना लें। नित्य एक-एक गोली सुबह-शाम गुलाब के अर्क़ या माता के दूध में घिसकर पिलाएं। यह बालकों के अतिसार और अजीर्ण को नष्ट करता है।

❑ गुलाबी कत्था, कपूर—प्रत्येक 4 तोला, गुलनार 5 तोला, माजूफल, छोटी-बड़ी इलायची, पीली हरड़ का छिलका, माई, विलायती मेहंदी के बीज (हब्बुल्आस), लाल-सफ़ेद चंदन, कुलफा के बीज, बनफ़शा—प्रत्येक 1.25 तोला, कतीरा, गोंद कीकर—प्रत्येक 7 माशा, बंसलोचन, सूखा धनिया, सुमाक, यमानी फिटकिरी, कमलगट्टा की गिरी, कद्दू के बीज की गिरी, खीरा-ककड़ी के बीज की गिरी—प्रत्येक 2.50 तोला लें। इन सबको अलग-अलग कूट-छानकर मिला लें। एक-एक चुटकी सवेरे-शाम बालक के मुंह में डाल दें। यदि उसका मुंह आ रहा हो, तो

मुंह में मल दें। यह चूर्ण बालकों के प्रायः कफज रोगों में लाभदायक है। वमन, अतिसार, अजीर्ण, मुखपाक और मसूड़ों में सूजन आदि में भी लाभ करता है।

❑ सूखा आंवला, काले कुलफा के बीज (तुख्म खुर्फा सियाह)—प्रत्येक 6 माशा लें। हरे बारतंग का रस आवश्यकतानुसार लेकर उसमें उक्त द्रव्यों को पीसकर, मुर्गी के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर रखें। जिन बालकों को उताश रोग (तीव्र पिपासा होना और तालू नीचे बैठ जाना) हो, इस औषधि को उनके तालू पर मलें। रोग का शीघ्र निदान हो जाएगा।

❑ पीली हरड़ का छिलका, कमलगट्टा की गिरी, बंसलोचन, बेरपत्थर, दरियाई नारियल, ज़हरमोहरा खताई (हरिताश्म), छोटी इलायची का दाना, केसर, गुलाब के फूल—प्रत्येक 4 माशा लें। सबको महीन पीसकर अर्क़ गुलाब में अच्छी तरह खरल करें। फिर मूंग के दाने के बराबर गोलियां बना लें। बालकों के सूखा रोग में 1 गोली (1 वर्ष के शिशु को) माता के दूध में घोलकर पिलाएं। मलावरोध होने पर शर्बत अंजीर में 1 गोली पीसकर चटाएं। अजीर्ण में गुलाब अर्क़ या शहद में घोलकर अनार के शर्बत के साथ पिलाएं। यह बालकों के सभी रोगों में लाभदायक है।

साधारण नुस्ख़े

हकीम लुक़मान ने बालकों के रोग निवारण के नुस्ख़ों का कथन इस प्रकार किया है—

❑ केले के फल के बारीक तंतुओं के रस में जीरा और मिश्री मिलाएं। इसमें से 4 माशा दवा रोज़ एक बार पिलाने से तथा उसे ही मसूड़ों पर दिन में 8–10 बार लगाने से दांत आसानी से निकल आते हैं। साथ ही उनकी वजह से होने वाले ज्वर, दस्त और खांसी में भी आराम हो जाता है।

❑ अजवायन के कुछ दाने माता या बकरी के दूध में पीसकर बालक को पिलाने से उसके पेट का दर्द, हरे-पीले दस्त होना तथा कै आदि में आराम होता है।

❑ यदि किसी बालक की छाती पर कफ जम गया हो, जिस कारण उसे श्वास लेने में भी तकलीफ़ हो रही हो तो उसकी छाती पर गाय के घी की धीरे-धीरे मालिश करें और उस घी को वहीं सुखा दें। बहुत जल्दी छाती कफ से मुक्त हो जाएगी।

❑ यदि बालक को तीव्र खांसी हो तो उसकी छाती पर रोज़ सरसों का तेल मलें और थोड़ा गुदा-स्थल पर भी मल दें, जल्दी ही आराम हो जाएगा। इसी सरसों के तेल में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर छाती पर मलने से छाती पर जमा कफ आराम से निकल जाता है।

❑ यदि बालक दूध गिराता हो, खांसी और श्वास के कारण बहुत बेचैन हो तो आधा पाव पानी में 2.50 तोला खाने का चूर्ण और 5 तोला मिश्री पीसकर घोलें। फिर उसमें से निथारकर 8–10 बूंद पानी बालक को पिला दें। फौरन आराम हो जाएगा।

❑ कौड़ी की भस्म शहद में मिलाकर बालक के मसूड़े पर मलने से बालक के दांत आराम से निकलते हैं।

❑ शहद के साथ सुहागा पीसकर मसूड़ों पर मलने से दांत सुख से निकल आते हैं।

❑ धाय के फूल और पीपल पीसकर रखें। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर मलने से भी दांत बिना कष्ट के उभर आते हैं।

❑ कच्चे आंवलों या कच्ची हल्दी का रस मसूड़ों पर मलने से दांत सहज ही निकल आते हैं।

❑ सिरस के बीज, कायफल का टुकड़ा अथवा तुंबरू के बीज बालक के गले में बांधने से भी दांत बिना कष्ट के निकलते हैं।

❑ पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजवायन, अजमोदा, हल्दी, मुलेठी, देवदारु, बायबिडंग, छोटी इलायची, नागकेसर, नागरमोथा, कचूर, काकड़ासींगी, बिरिया, संचर नमक—प्रत्येक 3 माशा लें। इन सबको महीन पीस–छानकर चूर्ण बनाएं। फिर इस चूर्ण में अभ्रक भस्म 3 माशा, शंख भस्म 3 माशा, लौह भस्म 3 माशा एवं सोनमक्खी की भस्म 3 माशा मिला दें। अब इन्हें खरल करके, पानी के साथ घोटकर 2–2 रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर रखें। इनमें से 1 गोली पानी के साथ पत्थर पर घिसकर बालक के मसूड़ों पर लगाएं। दिन में 3–4 बार यह क्रिया करने से दांत आसानी से निकल आएंगे।

❑ संगज़राहत (सेलखड़ी), गले अरमनी, गेरू—प्रत्येक 1 तोला तथा भुनी फिटकिरी 1 रत्ती लें। इन सबको महीन पीस–छानकर रखें। इनमें से थोड़ी–थोड़ी दवा दिन में 4–5 बार बालक के मुंह में उंगली से लगाने से मुंह के घाव, छाले, मुंह आना या मुंह पकना आदि में आराम होता है।

विशेष—यदि इसके सेवनकाल में बालक का मल लाल रंग का आए तो कदाचित डरना नहीं चाहिए।

❑ यदि बालक के पेट में मरोड़ हो तो रेवंद चीनी की जड़ को दूध में घिसकर उसे पिलाएं। मात्रा आधा रत्ती से ज़्यादा न हो। इससे दस्त होकर मरोड़ ख़त्म हो जाएगा।

❑ यदि बालक के पेट में दर्द, आम एवं अजीर्ण हो तो धनिया और सोंठ का थोड़ा–सा काढ़ा पिलाने से लाभ होता है।

❑ करेले, अडूसे, नागरपान एवं जामुन की छाल का रस—प्रत्येक 0.50 तोला लेकर, उसमें बच घिस-घिसकर एक सप्ताह तक बालकों को पिलाने से उसका डब्बा रोग दूर हो जाता है। इसे रोज़ छोटा आधा चम्मच की मात्रा में दें।

❑ काले जीरे का चूर्ण शहद में मिलाकर चटाने से पेट के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

❑ यदि बालक का कव्वा लटक जाए तो मुलतानी मिट्टी, सिरके में मिलाकर सिर पर रखने से फ़ौरन आराम हो जाता है।

❑ बंसलोचन पीसकर शहद के साथ चटाने से बालक की खांसी मिटती है।

❑ एरंड के पत्तों का रस निकालकर रोज़ बालक की गुदा में लगाने से चुनचुने-कृमियों की पीड़ा नहीं होती।

❑ गौमूत्र में नमक मिलाकर पिलाने से बालकों का पसली चलना, डब्बा रोग और श्वास में आराम हो जाता है।

❑ धनिया को पानी में पीसकर सिर पर लगाने से सिर दर्द काफ़ूर हो जाता है तथा बच्चे को सुख की नींद आती है।

❑ शहद में केसर घिसकर आंखों में आंजने से आंखों की जलन मिटती है।

❑ लहसुन के छोटे-छोटे टुकड़े करके, काले तिल के तेल में डालकर आग पर रखें। जब लहसुन जल जाए, तो उसे उतारकर छान लें। इस तेल को कान में डालने से कान का बहरापन कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

❑ सुहाता गरम अलसी का तेल कान में डालने से कान का दर्द नष्ट होता है।

❑❑

14

हृदय रोग

हृदय रोग स्त्रियों के मुकाबले पुरुषों को ही अधिक होता है। खान-पान तथा जलवायु आदि का हृदय पर विशेष प्रभाव पड़ता है। मादक द्रव्यों के अत्यधिक सेवन और व्यभिचार से भी हृदय पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। अधिक शोक, चिंता एवं धूम्रपान से भी विभिन्न प्रकार के हृदय रोग उत्पन्न होते हैं। अश्लील वातावरण तथा अधिक परिश्रम करने के कारण अधिकांश लोग हृदय रोगों के शिकार होते हैं। विभिन्न रोगों की अधिकता, स्थूलता और मल-मूत्रादि वेगों को अधिक समय तक रोके रखने एवं उष्ण, रुक्ष, कषाय और तिक्त पदार्थों के अत्यधिक सेवन से भी रक्त दूषित होकर हृदय रोगों की उत्पत्ति करता है।

हृदय दौर्बल्य

हृदय की दुर्बलता भी एक रोग है, जिसका समय रहते उपचार किया जाना चाहिए। इसके कुछ महत्त्वपूर्ण नुस्खे इस प्रकार हैं—

नुस्ख़े

❑ जहरमोहरा खताई 1.75 तोला, अबीध मोती, कहरुवा शमई, प्रवालमूल (बुस्सद), धोया हुआ लाजवर्द (मगसूल), याकूत सुर्ख़ (रक्त माणिक), याक़ूत कबूद (नीलवर्ण माणिक), याक़ूत असफ़र (पीतवर्ण माणिक), हरा यशब, पन्ना, लाल अक़ीक़, चांदी के वर्क़, मस्तग़ी—प्रत्येक 7 माशा, सोने के वर्क़, जदवार खताई, दरियाई नारियल, मकोय एवं कस्तूरी मोमियाई (शिलाजीत)—प्रत्येक 3 माशा लें। गुलाब के अर्क़ में सभी को दो सप्ताह तक खरल करके रखें। फिर इसे 2 चावल की मात्रा में ख़मीरा गावज़बान जवाहरवाला 5 माशा या लुबूब कबीर 5 माशा अथवा ख़मीरा गावज़बान सादा 1 तोला के साथ सेवन करें। बादी और अम्ल पदार्थों से परहेज़ करें। यह निर्बलता को दूर करता है तथा हृदय, मस्तिष्क और यकृत को शक्ति व पुष्टि प्रदान करता है। यह अद्‌भुत एवं चमत्कृत द्रव्यों में से है और आसन्नमृत रोगी में भी अपना आश्चर्यजनक प्रभाव प्रदर्शित करता है।

❑ अक़ीक़ और यशब भस्म, क्षुद्रैला-बीज, कमलाक्ष की गिरी, जहरमोहरा असली, अबीध मोती और चांदी के वर्क़ को समान भार में लें। पहले जहरमोहरा एवं मोती को अर्क़ केवड़ा में खरल करें। फिर शेष द्रव्यों को बारीक पीसकर रूह केवड़ा में खरल करके शीशी में रखें। 3 रत्ती यह दवा गावज़बान 6 माशा में मिलाकर खाएं तथा ऊपर से गाय का दूध, शर्बत अब्रेशम या शर्बत संदल पिएं। यह हृदय की धड़कन को सामान्य रखने में गुणकारी तथा शांतिदायक है। इसके कुछ दिनों के सेवन से हृदय की दुर्बलता दूर हो जाती है।

❑ पन्ना (रत्न) को गुलाब के अर्क़ में खरल करके ख़ूब बारीक कर लें। फिर मिट्टी के प्याले में घीकुंआर का लुआब भरकर उसके भीतर उक्त पन्ना के चूर्ण को रखकर 10 सेर उपलों की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर निकालकर सुरक्षित रखें। 2 चावल भस्म ताज़े जल या किसी उपयुक्त अनुपान से उपयोग करें। यह भस्म यकृत और मूत्र-पिण्डों को बल प्रदान करता है। कास एवं कासजन्य ज्वर में लाभकारी है तथा बहुमूत्र आदि में उपयोगी है। यह हृदय को भी बल प्रदान करता है।

❑ मुक्ताशुक्ति, हरिताश्म, प्रवालमूल, कहरुवा शमई, यमनी, अक़ीक़ एवं हरा यशब—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको अर्क़ गुलाब में इतना खरल करें कि 15 तोला अर्क़ शोषित हो जाए। शुष्क होने पर इसे कांच के बर्तन में रखें। 3 माशा से 4.50 माशा तक ख़मीरा गावज़बान अम्बरी 1 तोला में मिलाकर अर्क़ गावज़बान 10 तोला एवं शर्बत अनार 2 तोला के साथ खिलाएं। यह हृदय के लिए अत्यंत बलदायक है। इसके अलावा ख़मीरा गावज़बान, ख़मीरा मरवारीद, ख़मीरा मरवारीद जदीद, अक्सीर, कल्ब, कुश्ता मिरजान जवाहरवाला, याक़ूती मुरक्कब एवं प्रभृति योग भी इस रोग में उपयोगी हैं।

❑ सफ़ेद चंदन 2 छटांक, अर्क़ गुलाब आधा सेर एवं मिश्री आधा सेर लें। चंदन को रात भर गुलाब के अर्क़ में भिगोकर सवेरे पकाकर छान लें और मिश्री डालकर चाशनी कर लें। 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ 2 तोला इस दवा का सेवन करें। यह हृदयोल्लासकारी और हृदय को बल देने वाला है।

❑ लाल माणिक, हरा पन्ना तथा बिना बिंधा हुआ मोती—प्रत्येक 6 माशा लें। इन सबको अर्क़ बेदमुश्क और अर्क़ केवड़ा—प्रत्येक 5 तोला में खरल करके रख लें। 6 रत्ती यह दवा ख़मीरा अब्रेशम या ख़मीरा गावज़बान अम्बरी 5 माशा में मिलाकर अर्क़ गावज़बान और शर्बत अनार के साथ सेवन करें। यह हृदय को बल देता है। आसन्न मृत्युकाल में भी यह स्वल्प काल के लिए हृदय की गति को तीव्र कर देता है।

घीकुआंर डालें कि प्रवाल शाखाएं पूरी तरह ढक जाएं। फिर उसे 20 सेर कंडों की अग्नि दें। अग्नि के ठंडी हो जाने पर उसे निकालकर सुरक्षित रखें। 2 चावल भस्म ख़मीरा गावज़बान अम्बरी 5 माशा के साथ उपयोग करें। यह हृदय को मज़बूत बनाता है, शीघ्रपतन रोकता है तथा नज़ला-ज़ुकाम में लाभ पहुंचाता है।

❑ थूहर की समिधाओं के छोटे-छोटे टुकड़े कर लें और कुंडी-सोटे से घोटकर रस निकालें। इस रस से चांदी के 2 तोले बुरादा को चार पहर तक खरल करें। फिर उसे मिट्टी के सकोरे में रखकर उसका मुंह बंद करके 15 सेर उपलों की अग्नि दें। जब उपले जलकर राख हो जाएं, तो चांदी का बुरादा निकालकर पुनः चार पहर तक थूहर की डंडियों के रस में खरल करके 15 सेर उपलों की अग्नि दें। इस प्रकार तीन आंच दें। फिर निकालकर खरल करें। भस्म तैयार है। रोज़ाना सुबह 1 रत्ती भस्म मक्खन या मलाई में मिलाकर सेवन करें। यह आमाशय, हृदय, मस्तिष्क, यकृत और वृक्कों को बलिष्ठ बनाकर शरीर को पुष्ट करता है। यदि रोगी में शीघ्रपतन आदि का विकार हो तो इससे वह भी दूर हो जाता है।

❑ पन्ना पिष्टी (बारीक पिसा हुआ पन्ना 'रत्न') 2 तोला, अम्बर अहशब 4.50 माशा, चांदी के वर्क़, सोने के वर्क़—प्रत्येक 5.50 माशा, लाजवर्द, श्वेत बहमन, कैंची से कतरा हुआ अब्रेशम, गावज़बान पुष्प—प्रत्येक 3.50 माशा, गुलाब और बेदमुश्क का अर्क़, मीठे अनार का रस—प्रत्येक 2.50 तोला, श्वेत मधु (शहद) 7 तोला, सेब का शर्बत 8 तोला तथा मिश्री 1.50 पाव लें। शहद, शर्बत और मिश्री को पानी में घोलकर मंदी आग पर पकाएं, जिससे उसमें झाग न पैदा होने पाए। तदुपरांत दोनों अर्क़ और अनार का रस मिलाकर चाशनी बनाएं। फिर नीचे उतारकर सभी चीज़ें चाशनी में मिला दें और कांच के किसी पात्र में सुरक्षित रखें। 7 से 9 माशा तक नित्य उपयोग में लाएं। यह हृदय को शक्तिशाली बनाता है एवं उल्लसित करता है। असामान्य धड़कन को सामान्य बनाता है। हकीम लुक़मान के ज़माने से आज तक यह 'ख़मीरा जमर्रुद' के नाम से विख्यात है जो यूनानी दवाख़ानों में तैयार मिलती है।

❑ बारीक पिसे हुए सोने के वर्क़ 17.50 माशा, अबीध मोती 8.75 माशा, अम्बर अहशब 10.50 माशा, याक़ूत रुम्मानी, लाल बदख़शां और हरा पन्ना—प्रत्येक 3.50 माशा, रुब्ब सेब, रुब्ब बिही, रुब्ब नाशपाती, रुब्ब गाजर, रुब्ब अनार—प्रत्येक 10 तोला तथा शहद 20 तोला लें। इन सबका यथाविधि खमीरा तैयार करें और 3 से 7 माशा तक अर्क़ माउल्लहम अम्बरी के साथ-उपयोग करें। यह हृदय के साथ-साथ मस्तिष्क को भी पुष्टि और शक्ति प्रदान करता है तथा

❑ मिश्री 30 तोला और सेवती के फूल 100 नग लें। पुष्पों पर अच्छी तरह गुलाब का अर्क़ छिड़क दें। फिर उन्हें हाथ से मसलकर, मिश्री मिलाकर 4 दिन तक छाया में रखें। इसे 2 तोला गुलकंद, 10 तोला अर्क़ गावज़बान और 5 तोला अर्क़ बेदमुश्क के साथ सेवन करें। यह हृदय की पुष्टता बनाए रखने में सक्षम है।

मूर्च्छा

शरीर की दुर्बलता, हृदय-धड़कन की अनियमितता अथवा बलहीन अवस्था में होने वाली मूर्च्छा में निम्नलिखित नुस्ख़े बड़े असरकारी होते हैं—

नुस्ख़े

❑ कस्तूरी, अम्बर, दरियाई नारियल, हरिताश्म—प्रत्येक 1 रत्ती, गुलाब और बेदमुश्क का अर्क़, ईथर—प्रत्येक 1 तोला लें। पहले चारों द्रव्यों को बाद के तीन द्रव्यों के साथ पीसकर रख लें। एक-एक घंटे बाद तीन बार इसका उपयोग करें। यह हर प्रकार की मूर्च्छा में लाभदायक है।

❑ नागरमोथा, नरकचूर, बालछड़, दारचीनी, गावज़बान के फूल, ऊदगर्की (अगर), बिल्लीलोटन एवं अकरकरा—प्रत्येक 4.50 माशा, मस्तग़ी 3.50 माशा। इलायची, जायफल—प्रत्येक 9 माशा और शुद्ध कस्तूरी 1 माशा लें। इन सबको कूट-पीसकर पानी के साथ चने के बराबर गोलियां बना लें। 2 या 3 गोलियां अर्क़ अम्बर के साथ उपयोग करें। यह मूर्च्छा, हृत्स्पंदन और ठंडे पसीनों में लाभकारी है।

❑ गाजर 1 सेर, गावज़बान 2 तोला, गुल-गावज़बान 1 तोला, सफ़ेद चंदन 22.50 माशा, लाल तोदरी एवं सफ़ेद बहमन—प्रत्येक 13.50 माशा लें। इनसे यथाविधि 20 बोतल अर्क़ तैयार करें। 10 तोला अनुपान के रूप में नित्य उपयोग करें। यह संतापहारक है तथा दिल की धड़कन और वहशत को दूर करता है।

❑ 2.50 सेर गावज़बान को रात में पानी में भिगो दें। सुबह उसे निथारकर अर्क़ निकालें। इस अर्क़ में रात में फिर से 2.50 सेर गावज़बान भिगोएं और सुबह छानकर अर्क़ निकालें। इसे 3 तोला की मात्रा में प्रयोग करें। हृदयोल्लासकारक और हृदयबलदायक होने से इसे मूर्च्छा के योगों के अनुपान रूप में प्रयोग किया जाता है।

हरारत (संताप)

हृदय की दुर्बलता, प्यास और आमाशय में किसी विकार के आ जाने से व्यक्ति को संताप के दौर से गुज़रना पड़ता है। कुछ मानसिक चिंताएं भी संताप का कारण हो सकती हैं।

नुस्ख़े

❑ ताज़ा गुलाब के फूल 5 सेर, गुलाब का अर्क़ 1 सेर, सौंफ़ 15 तोला, बीज निकाले मुनक्के 15 तोला, ऊद (अगर), तालीसपत्र (जरनब), श्वेत बहमन, शकाकुल मिश्री—प्रत्येक 1 तोला और अम्बर 1.75 तोला लें। उन्हें 15 सेर पानी में रात भर भिगोकर सुबह 5 सेर अर्क़ परिश्रुत करें। उसमें ताम्बूल पत्र 100 नग, इलायची, दारचीनी, लौंग—प्रत्येक 15 माशा भी सम्मिलित करें। 10 तोले की मात्रा में अन्यान्य हृदय को बल देने वाला भेषजों के अनुपान स्वरूप उपयोग करें। यह हृदय की धड़कन के लिए लाभकारी है, प्यास बुझाता है, संताप (हरारत) का शमन करता है तथा हृदय व मस्तिष्क को उल्लसित करता है।

❑ नीली झांई का बंसलोचन, धनिया, सफ़ेद चंदन, सफ़ेद इलायची, कहरुवा, हरिताश्म—प्रत्येक 5 तोला, दरियाई नारियल 3 तोला, अक़ीक़ भस्म 2 तोला, प्रवालशाखा भस्म 1 तोला और चांदी के वर्क़ 3 माशा लें। इन सबको कूट-छानकर आटे की भांति महीन चूर्ण बना लें। 2 से 3 माशा तक अनार के सत (रुब्ब अनार) या रुब्ब बिही 2 तोला में मिलाएं और रोगी को थोड़ा-थोड़ा चटाएं। मस्तिष्क की पुष्टि के लिए पोस्त के दाने या बादाम के मग़ज़ के साथ खिलाएं। यह चूर्ण हृदय को पुष्ट करता है, उसका संताप शमन करता है तथा मस्तिष्क, आमाशय और यकृत को बल देता है। हृदय की दुर्बलता के लिए यह ख़ास दवा है।

❑ जवापुष्प 100 नग, नीबू का रस 1 पाव और मिश्री 1 सेर लें। चीनी के किसी पात्र में नीबू का रस डालकर उसमें जवापुष्प बारीक करके भिगो दें तथा प्रातःकाल ऊपर निथरा हुआ पानी निकाल लें। फिर 2 सेर जल में 1 सेर मिश्री की चाशनी करके उक्त निथरा हुआ पानी डालकर बोतलों में आधा-आधा भरें। बोतलों का मुंह अच्छी तरह बंद करके उन्हें पानी से भरे टब या मटकों में डाल दें। दो-चार दिन बाद निकाल-छानकर रखें। 2 तोला शीतल पानी या 12 तोला अर्क़ गावज़बान के साथ सेवन करें। यह हृदय को उल्लसित करता है और संताप का शमन करता है।

❑ गुठली निकाला हुआ 5 तोला आंवला 24 घंटे तक गाय के दूध में भिगोए

को रोकता है, संताप का शमन करता है और शीघ्रहृदयता को विशेष रूप से लाभ पहुंचाता है।

खफ़कान (हृत्स्पंदन)

यहां हम हकीम लुक़मान के जिन नुस्ख़ों का उल्लेख कर रहे हैं, वो उस ज़माने से आज तक चले आ रहे हैं। अनेक हकीमों ने इनमें प्रयुक्त वस्तुओं की नाप-तौल में अपने हिसाब से फेरबदल कर दिया है। ये नुस्ख़े आज भी लोगों का भला कर रहे हैं।

नुस्ख़े

❑ सफ़ेद चंदन, गावज़बान के फूल—प्रत्येक 1 तोला, सूखा धनिया, कहरुवा—प्रत्येक 9 माशा, यशब 7 माशा (2 तोला अर्क़ बेदमुश्क में खरल किया हुआ), मुक्ता 3 माशा (3 तोला अर्क़ केवड़ा में खरल किया हुआ), मुक्ताशुक्ति (सदफ सादिक) 2 माशा एवं किशमिश 5 तोला लें। सभी को बारीक पीसकर आपस में मिला लें। 2 माशा यह चूर्ण 5 तोला अर्क़ केवड़ा के साथ खिलाएं।

❑ सेब का रस 1 पाव और मिश्री आधा सेर—दोनों को मिलाकर शर्बत तैयार करें। 1 तोला यह शर्बत अर्क़ गावज़बान 5 तोला के साथ सेवन करें। यह हृदय को पुष्ट करने वाला है। हृदय की धड़कन, अतिसार और वमन में भी गुणकारी है।

❑ अब्रेशमखाम 14 तोला 7 माशा को जल से धोकर साफ़ करें। फिर एक सेर 13.50 छटांक जल में तीन दिन और तीन रात भिगोएं। इसके बाद इतना पकाएं कि जलकर पांचवां भाग ही शेष रह जाए। इनको मल-छानकर मीठे सेब का रस, खट्टे सेब का रस, मीठे अनार का रस, खट्टे अनार का रस, मीठे अंगूर का रस, बिही का रस, उन्नाब का शीरा, गावज़बान का शीरा (उन्नाब व गावज़बान को उबालकर शीरा निकालें), सफ़ेद चंदन का अर्क़, गुलाब में निकाला हुआ शीरा—प्रत्येक 2 तोला 11 माशा। अर्क़ गुलाब और मिश्री—प्रत्येक 14 तोला 7 माशा मिलाकर ख़मीरा की चाशनी तैयार करें। फिर उसमें केसर 3.50 माशा अर्क़ गुलाब में हल करके अम्बर अशहब व तिब्बी कस्तूरी—प्रत्येक 1.75 माशा मिलाएं। इसे 5 माशा नित्य सेवन करें। यह हृदय की धड़कन और वहशत को दूर करता है।

❑ बंसलोचन 4 माशा, मुक्ता और कहरुवा शमई—प्रत्येक 9 माशा, अर्क़ केवड़ा, सेब का सत—प्रत्येक 20 तोला, कैंची से कतरा हुआ अब्रेशम, सफ़ेद चंदन, सूखा धनिया, गुलाब के फूल, कद्दू की गिरी, गावज़बान के फूल, अम्बर अशहब, शुद्ध कस्तूरी—प्रत्येक 4.50 माशा, चांदी के वर्क़ 6 माशा तथा मिश्री आधा सेर लें। इन सबको कूट-छानकर और मुक्ता को अर्क़ केवड़ा 5 तोला में खरल

करके, सेब के सत एवं मिश्री की चाशनी शेष अर्क केवड़ा मिलाकर बनाएं। फिर औषधि द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर आग से उतार लें। अब उसमें चांदी के वर्क, अम्बर, अहशब और शुद्ध कस्तूरी को अर्क केवड़ा में हल करके मिलाएं। इसे 5 माशा सुबह जल के साथ सेवन करें। यह दिल की धड़कन, वहशत और घबराहट के लिए अतीव गुणकारी है।

❑ अम्बर 2.50 माशा, केसर 9 माशा, मुक्ता प्रवालमूल, संगयशब, इजखिर और नागरमोथा—प्रत्येक 11.50 माशा, कैंची से कतरा हुआ अब्रेशम, बंसलोचन, तेजपत्ता, बालछड़, गिल अरमनी—प्रत्येक 13.50 माशा, ऊद खाम 15.50 माशा तथा आंवले का शीरा 8 तोला लें। समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण तैयार करें। मिश्री समस्त द्रव्यों से डेढ़ गुनी और शहद सम प्रमाण में लेकर चाशनी बनाकर चूर्ण मिला लें। इसे 7 माशा ताज़े जल से सुबह के वक़्त सेवन करें। यह आमाशय को बल देने और दिल की धड़कन को लाभ पहुंचाने वाला है।

❑❑

15

पुरुषों के गुप्त रोग

हकीम लुकमान के ज़माने में हकीमों और वैद्यों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन नब्ज़ देखने की जितनी महारथ लुकमान को हासिल थी, दूसरों को नहीं थी। गुप्त रोगों के इलाज के लिए लोग हकीम लुकमान के पास ही अधिक जाते थे। इसकी वजह यह थी कि जहां दूसरे हकीम और वैद्यों को वे अपनी बीमारी के बारे में बताने से शर्माते थे, वहीं हकीम लुकमान को सिर्फ़ नब्ज़ दिखाने से ही काम चल जाता था। हम उसी काल के नुस्ख़ों का उल्लेख यहां कर रहे हैं।

एहतलाम (स्वप्नदोष)

सोते में मनी (वीर्य) का निकल जाना और कपड़ों का खराब हो जाना ही एहतलाम (स्वप्नदोष) कहलाता है। स्वप्नदोष युवावस्था में होने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है। लेकिन यदि किसी कारणवश स्वप्नदोष द्वारा अत्यधिक वीर्य नष्ट होने लगे, तो शारीरिक दृष्टि से बहुत हानि होती है। इसके शुरू होने के कई कारण हैं। मुख्यत: विचारों का गन्दा होना, प्यार-मुहब्बत की कहानियां पढ़ना, अश्लील फिल्में देखना तथा हर समय गंदी बातें करना। इससे एक प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होती है, जिससे यह रोग उत्पन्न हो जाता है। अधिक खाने एवं रात को सोते समय दूध पीने के कारण भी क़ब्ज़ की शिकायत होने से स्वप्नदोष हो जाता है।

स्वप्नदोष की शिकायत दूर करने के लिए विचारों की पाकीज़गी (शुद्धता) सबसे पहला काम है। गंदी बातों से बचना चाहिए। विचारों की शुद्धता के साथ-साथ लिबास एवं शरीर की सफ़ाई भी बड़ी ज़रूरी है। सुबह-शाम टहलना आवश्यक है। निद्रा भरपूर लेनी चाहिए। रात को सोने से दो-तीन घंटे पहले दूध-चाय आदि नहीं पीनी चाहिए।

नुस्ख़े

- गुलनार फ़ारसी, भंगबीज, जुफ्त बलूत, कुंदुर, बबूल और जामुन की

छाल—प्रत्येक 4 माशा लें। इनको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं तथा बाद में उसमें 9 माशा इसबगोल की भूसी मिला दें। 7 माशा चूर्ण प्रतिदिन खाकर ऊपर से बकरी का दूध पिएं। यह स्वप्नदोष में परम गुणदायक है।

❑ बंसलोचन, सूखा धनिया, बीजबंद, ख़ुरासानी अजवायन, बबूल की गोंद, सुपारी का पुष्प, कुलफा के बीज, छिले हुए काहू के बीज, नीलोफर का पुष्प और गुलनार फ़ारसी—प्रत्येक 1.50 तोला, कहरुवा शमई, प्रवालमूल (बुस्सद), दम्मुलअख़्वैन (ख़ूनख़राबा), गिल अरमनी और यशद भस्म—प्रत्येक 1 तोला तथा मिश्री 1 सेर लें। सबको बारीक पीसकर चूर्ण बनाएं। प्रतिदिन 4 बजे सायंकाल 6 माशा से 1 तोला तक यह चूर्ण लेकर गाय का दूध पिएं। यह स्वप्नदोष निवारक है।

❑ काली हरड़, पोस्त की डोंडी (पोस्त खशखश सफ़ेद), पुरानी सुपारी, सफ़ेद कत्था, ढाक का गोंद, अखरोट की गिरी, खीरा के बीज की गिरी, नारियल की गिरी, बीजबंद, गेहूं का सत, बंग भस्म और गुलनार फ़ारसी—प्रत्येक 6 माशा तथा छिली हुई इमली के बीज की गिरी 1 तोला लें। इन सबको कूट-छानकर 1 तोला इसबगोल की भूसी मिलाकर चूर्ण तैयार करें। 6 माशा चूर्ण जल या दूध के साथ नित्य लें। यह स्वप्नदोष के लिए अतिशय गुणकारी है।

साधारण नुस्खे

❑ 1 तोला सूखा धनिया थोड़ा गरम करके रात को पानी में भिगोकर रखें और सुबह छानकर 2 तोला मिश्री से मीठा करके पिएं।

❑ 7 माशा काहू के बीज को आधा पाव पानी में पीसकर 2 तोले शरबत नीलोफर में मिलाकर पिएं। इसके प्रयोग से जल्दी ही स्वप्नदोष दूर हो जाएगा।

❑ 7 माशा भूपली को रात में भिगोकर रखें। सुबह इसी पानी में पीस-छानकर मिश्री मिलाकर पिएं।

❑ धतूरे के बीज और काली मिर्च दोनों बराबर वज़न में लेकर बारीक पीसकर छान लें। फिर पानी में गूंधकर एक-एक रत्ती की गोली बनाएं। रोज़ाना सुबह एक गोली सौंफ़ के पानी में पीस-छानकर पिएं। स्वप्नदोष के साथ-साथ बुरे ख़्यालातों का आना भी बंद हो जाएगा।

❑ काहू के बीज 30 ग्राम और शक्कर 60 ग्राम—इन्हें बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें शक्कर मिलाकर 5 ग्राम चूर्ण दिन में 2 बार प्रयोग करें।

❑ तालमख़ाना 10 ग्राम, बबूल का गोंद 10 ग्राम, सालब मिश्री 10 ग्राम, इसबगोल की भूसी 30 ग्राम और शक्कर 60 ग्राम लें। पहले तालमख़ाना, बबूल का गोंद और सालब मिश्री को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। फिर इसमें इसबगोल की

भूसी एवं शक्कर अच्छी तरह मिलाकर, नित्य दो बार 6 ग्राम की मात्रा में लें।

❑ असरोल 10 ग्राम और धनिया 10 ग्राम—दोनों को अच्छी तरह बारीक पीसकर चूर्ण बनाएं तथा मिश्री मिलाकर दूध या पानी के साथ लें। जल्दी आराम हो जाएगा।

सावधानी—एहतलाम (स्वप्नदोष) का इलाज करते समय बादी व गरम चीज़ों का परहेज़ करें। इसी के साथ गोश्त, अंडा, मछली, गुड़, तेल और खटाई का भी इस्तेमाल न करें।

जिर्यान (शुक्रप्रमेह)

जिर्यान रोग को मुख्यत: 'धात आना' या 'धात गिरना' भी कहते हैं। नवयुवक इस रोग के अधिक शिकार होते हैं। इसमें मल-मूत्र से पहले या बाद में मूत्रनली के मार्ग से तीन प्रकार के द्रव्य निकलते हैं—एक मनी (धात या वीर्य), दूसरी मजी और तीसरी वदी। मल-मूत्र से पहले या बाद में कभी-कभी सफ़ेद रंग का घोगा-सा निकलता है, यही रोग की जड़ है। इससे कमर में दर्द, घुटनों में तकलीफ़, आंखों के आगे धुंधलका-सा छाना, चक्करों का आना तथा शरीर का दुर्बल होते जाना आदि दोष पैदा हो जाते हैं। यदि इसका इलाज वक़्त रहते न किया जाए, तो मधुमेह (शुगर) रोग की उत्पत्ति हो जाती है। इस रोग के मुख्य कारण इस प्रकार हैं—संभोग न करने के कारण मनी (वीर्य) का अधिक जमा हो जाना, वीर्य में मात्रा से अधिक तेजी व सख़्ती, वासना की ज्यादती या संभोग की अधिकता से गुर्दे की चर्बी का पिघलना, स्वभाव में ताप की अधिकता, हर समय कामुकता के विचारों में लीन रहना तथा क़ब्ज़ आदि।

नुस्ख़े

❑ कौंच के बीज, तालमख़ाना, काली मूसली, सफ़ेद मूसली, बीजबंद, गोखरू, उटंगन के बीज, तेजबल, इक्लीलुलमलिक (नाख़ूना), साठी चावल, कमरकस, काहू के बीज, मीठा इंद्रजौ, सतावर, समुद्रसोख, सिंघाड़े का आटा, तुख़्मसरवाली (सिरियारी के बीज) और ऊंटकटारा जड़ की छाल—प्रत्येक 4 माशा, बंग भस्म 3 माशा तथा चीनी 10 तोला लेकर सभी को अलग-अलग कूटकर, समभाग में खांड मिलाकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन सवेरे 6 माशा चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन करें। शुक्रप्रमेह की यह उत्तम औषधि है। कुछ ही दिनों में यह रोग जड़ से चला जाता है।

विशेष गुण—यह शुक्र प्रमेह को दूर करता है। साथ ही शीघ्रपतन तथा स्वप्नदोष के लिए भी लाभकारी है।

❑ यथा आवश्यक सीसा (नग) लेकर लोहे की किसी कड़ाही में पिघलाएं और सहिजन की लकड़ी से हिलाते रहें। इस बीच में थोड़ी-सी कच्ची चीनी (शर्करा) छिड़कते रहें। जब सब राख हो जाए तो निकालकर सुरक्षित रख लें। यह औषधि 2 रत्ती प्रमाण में 1 तोला मक्खन या मलाई में रखकर या मिलाकर सेवन करें। यह शुक्र प्रमेह के लिए विशेष रूप से गुणदायक है।

❑ इसबगोल की भूसी 1 तोला, बबूल (कीकर) का पंचांग (फूल, गोंद, छाल, कली और पत्ते)—प्रत्येक 6 माशा तथा बंग भस्म 1 रत्ती—सबको आधा सेर गाय के दूध में डालकर अग्नि पर पकाएं। इसी बीच उसमें मिश्री (मीठा बनाने के लिए) भी मिला दें। यह केवल एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा प्रतिदिन सवेरे तैयार करके सप्ताह भर खाएं। यह शुक्रप्रमेह में लाभदायक तथा बाजीकारक भी है।

❑ दक्खिनी श्वेत मिर्च 10 तोला, मीठा तेलिया (बछनाग) दो सेर दूध में शुद्ध किया हुआ 9 माशा, 1 तोला इरजीर (बंग) और पीपल 4 माशा लें। बंग को पिघलाकर उसमें पारा मिला दें। फिर शेष औषधियों को महीन पीसकर उनके साथ मिलाएं और अच्छी तरह खरल करके रख लें। यह औषधि 2 चावल भर 7 माशा माजून आर्द्रखुरमा या 2 तोला मक्खन में लपेटकर सेवन करने से शुक्र प्रमेह का दोष सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

❑ आर्द्रखुरमा (छुआरे का आटा), बबूल का गोंद और सूखे सिंघाड़े का आटा—प्रत्येक आधा सेर लेकर सबको कूट-छान लें। फिर मीठे बादाम की गिरी, चिलगोजे की गिरी तथा पिंतक की गिरी—प्रत्येक 5 तोला लेकर बारीक पीस लें। तरंजबीन और शुद्ध शहद—प्रत्येक अढ़ाई सेर की चाशनी करके इसमें शेष द्रव्यों को मिला दें। फिर बिनौले की गिरी 1 तोला, लौंग 6 माशा, जावित्री 3 माशा और जायफल 3 माशा को कूट-छानकर चाशनी में मिला दें। 1 तोला दूध के साथ इसे नित्य सेवन करें। यह शुक्रप्रमेह के लिए अत्यधिक गुणकारी है, स्वप्नदोष में भी लाभ करता है।

साधारण नुस्खे

❑ लसौड़ा की कोंपलें 3 ग्राम एवं शक्कर 6 ग्राम लें। कोंपलों के छोटे-छोटे टुकड़े करके 180 मि.ली. पानी में भिगोएं। इसके बाद इसे सवेरे छानकर पिएं।

❑ मूसली संभली 60 ग्राम तथा शक्कर 60 ग्राम—इन दोनों को बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

❑ सतावर 20 ग्राम, इमली के बीज की गिरी 20 ग्राम, गाजर के बीज 20 ग्राम और शक्कर 60 ग्राम लें। पहले सतावर, इमली के बीज एवं गाजर के बीजों को बारीक

❑ 4 माशा बड़ का दूध बताशे या शक्कर में डालकर रोज़ाना सवेरे लें।

❑ सोते समय 3 ग्राम सफ़ूफ़ साअलब या सफ़ूफ़ मोलक दूध के साथ लें।

नामर्दी (नपुंसकता)

कुछ लोग पैदाइशी नामर्द (नपुंसक) होते हैं। ऐसे लोगों का इलाज मुश्किल होता है। लेकिन जो लोग अपने लड़कपन में गलतियों एवं बुरी संगत की वजह से अपनी ताक़त गंवा देते हैं और उसके नतीजे में मर्दाना क़ुव्वत से हाथ धो बैठते हैं, उनका बुरा हाल होता है। ये शर्म के कारण किसी से अपना हाल भी नहीं बता पाते और कभी-कभी निराश होकर ख़ुदकुशी तक कर लेते हैं। शादी होने या शादी की बात चलने के समय ऐसे लोगों की परेशानी बढ़ जाती है। पहले तो ऐसे हालात का शिकार ही नहीं होना चाहिए। दूसरे यदि इस हालत में पड़ ही गए हैं, तो उचित ढंग से इलाज कराना चाहिए। नामर्दी दूर करने के लिए यहां कुछ नुस्खे दिए जा रहे हैं। अगर इनको सही तौर पर इस्तेमाल किया जाए तो वो अपनी खोई हुई ताक़त और मर्दानगी को वापस पा सकते हैं।

नुस्खे

❑ भंग, अहिफेन, मीठे बादाम की गिरी, चिलगोज़े की गिरी, अख़रोट की गिरी, मीठे कद्दू के बीज की गिरी एवं काहू की गिरी—प्रत्येक 6 माशा, जायफल और जावित्री 4-4 तोला, कस्तूरी, अम्बर—प्रत्येक 6 रत्ती तथा शहद 30 तोला—इन सबको मिलाकर माजून तैयार करें। 1 माशा माजून नित्य सुबह या शाम गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह वात-संस्थान को उत्तेजित करने और रक्त में शुक्र धातु के घटकों की वृद्धि करने के कारण बाजीकारक है। इसमें अहिफेन होने से शुक्र-स्तंभन का कार्य भी संपन्न होता है। यह मैथुनानंददायक और बल्य है।

❑ यदि कोई नामर्द हो या उसकी मर्दाना ताक़त ख़त्म हो गई हो और वह औरत के पास जाने के नाम से ही घबराता हो तो उसे चाहिए कि वह गरम दूध में शहद मिलाकर पीता रहे। यह भी एक इलाज है। इस इलाज से खोई हुई ताक़त वापस आ जाएगी।

❑ अकरकरा 4 माशा, केसर 8 माशा, जायफल 1 तोला, लौंग 1 तोला, शुद्ध सिंगरफ 2 तोला और अफ़ीम 6 माशा—इन सबको कूट-पीसकर शहद में मिलाकर चने के समान गोलियां बना लें। एक गोली संध्या के समय खाकर ऊपर से गाय का दूध पिएं। इससे नामर्दी (नपुंसकता) दूर होने में सहायता मिलती है।

❑ सफ़ेद प्याज़ का अर्क़ 6 माशा, अदरक का अर्क़ 6 माशा, घी 6 माशा और शहद 6 माशा—इन सबको मिलाकर रोज सवेरे चाटने से 41 दिन में नामर्द भी मर्द हो जाता है।

सावधानी—इन दवाओं के प्रयोग के समय खट्टी, गरम चीज़ों, गरम मसालों एवं गुड़-तेल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। बदन की मालिश के लिए देशी तेल का प्रयोग करें तथा हल्का व्यायाम भी करें। पेट को सही रखें, क़ब्ज़ न होने दें।

जलक (हस्तमैथुन)

जलक एक खतरनाक आदत है, जो प्राय: छोटी उम्र के लड़कों में पैदा होती है अथवा जिन्हें शारीरिक इच्छापूर्ति का जब कोई साधन नहीं मिलता, तो वे अपने हाथों से ही इस इच्छा को पूरी कर लेते हैं अर्थात् शिश्न को हाथ में मसलकर अपनी वासनापूर्ति करते हैं। यह आदत बुरी संगत में रहने, अश्लील साहित्य पढ़ने, अश्लील बातें करने तथा बुरे विचारों व गलत आचरण से पैदा होती है। इस आदत की वजह से शिश्न की रगों व पुट्ठों को बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुंचता है। हाथ की रगड़ से शिश्न पर बुरा असर पड़ता है, क्योंकि यह रगड़ सहवास की हरकत से ज़्यादा सख़्त और ख़ुश्क होती है।

शुरू में पुट्ठों में ताक़त व हरकत पैदा होती है, लेकिन धीरे-धीरे उनमें कमी आती जाती है और शरीर कमज़ोर होता चला जाता है। इसकी वजह से शिश्न में ढीलापन आ जाता है। उसका अगला भाग मोटा और पिछला भाग पतला हो जाता है। उसकी तनाव-शक्ति कम हो जाती है। उसमें टेढ़ापन आ जाता है और रगें फूल जाती हैं। इसका नतीजा यह निकलता है कि मामूली विचार या उत्तेजना से ही वीर्यपात हो जाता है। शिश्न की ताक़त ख़त्म हो जाती है। इस तरह नामर्दी का सामना करना पड़ता है।

नुस्ख़े

❑ मूसली संभली 60 ग्राम, शक्कर सफ़ेद 60 ग्राम और इमली के बीज 20 ग्राम लें। मूसली संभली व इमली के बीजों को सुखाकर, अच्छी तरह पीसकर चूर्ण बना लें। इसके बाद इसमें शक्कर मिला लें। 6 ग्रांम चूर्ण दिन में दो बार सुबह-शाम ताज़े जल के साथ प्रयोग करें।

❑ तालमख़ाना 10 ग्राम, बबूल का गोंद 10 ग्राम, सालब मिश्री 10 ग्राम, इसबगोल की भूसी 30 ग्राम और शक्कर 60 ग्राम ले आएं। तालमख़ाने, बबूल का गोंद और सालब मिश्री को अच्छी तरह पीसकर बारीक कर लें। फिर इसमें इसबगोल की भूसी और शक्कर मिला लें। सुबह-शाम दिन में दो बार प्रयोग करें।

❑ सफ़ेद मूसली आवश्यकतानुसार लेकर, उसको पीसकर चूर्ण बना लें। रात के समय 1 तोला चूर्ण पाव भर गाय के दूध में डालकर पकाएं। जब दूध गाढ़ा हो जाए तो उसे मिट्टी के किसी पात्र में डालकर रख दें। सुबह तक वह खीर की तरह

जम जाएगा। नाश्ते के समय उसमें मीठा मिलाकर खाएं। 40 दिन के प्रयोग से हर तरह की नामर्दी दूर हो जाएगी। यह स्वप्नदोष तथा शुक्रप्रमेह में भी लाभदायक है।

❑ ख़ालिस जाफ़रान, कस्तूरी और अफ़ीम—सभी एक-एक तोला लेकर आधा सेर बड़ के दूध में खरल करके काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लें। रात को भोजन से दो घंटे पहले 1 गोली लें। हर प्रकार की कमज़ोरी दूर हो जाएगी।

❑ काहू के बीज, ख़ुरासानी अजवायन, खीरा के बीज, कासनी के बीज व सूखा धनिया—प्रत्येक 6 माशा तथा नीलोफर के फूल 3 माशा—सबको पीसकर चूर्ण बना लें। 6 माशा चूर्ण और 6 माशा इसबगोल भूसी मिलाकर खशखश के शरबत के साथ फांकें।

❑ अहिफेन, लौह भस्म व रौप्य भस्म—प्रत्येक 4 रत्ती, मोमियाई (शिलाजीत), कस्तूरी, मोती-पिष्टी, बंसलोचन और प्रवालशाखा भस्म—प्रत्येक 1 माशा—सबको पीसकर चने के बराबर गोलियां बनाकर शुद्ध चांदी के वर्क़ में लपेट लें। दो-दो गोलियां सवेरे-शाम दूध से लें। कमज़ोरी-नामर्दी दूर हो जाएगी तथा जलक की इच्छा कभी नहीं होगी।

सुरअतेइन्ज़ाल (शीघ्रपतन)

बुजुर्गों ने कहा है कि यदि पानी की भरी बोतल को उल्टा किया जाए तो पानी बड़ी जल्दी निकल जाता है, लेकिन शहद की भरी बोतल को उल्टा करने पर वह बड़ी देर में निकलेगा। यही हालत सुरअतेइन्ज़ाल (शीघ्रपतन) की है। जिस व्यक्ति का वीर्य पतला होता है, वह मुबाशरत में तनिक-सी हरकत से ही ख़ारिज हो जाता है। शीघ्रपतन होने के कई कारण हैं जो रोगी को स्वयं पता होते हैं।

नुस्ख़े

❑ कुश्ता मोती आधा रत्ती, शुद्ध मकरध्वज पाव रत्ती एवं कुश्ता चांदी 1 रत्ती—ये सब मक्खन में रखकर सुबह-शाम 4 दिन इस्तेमाल करें। इससे स्वप्नदोष का विकार भी ठीक हो जाएगा।

❑ इमली के बीज की गिरी 2 माशा, परशन पानी 1 माशा, बीजबंद 2 माशा तथा असंगध 2 माशा—इन सबको 40 दिन तक सुबह-शाम दूध के साथ प्रयोग करें। गुड़, तेल, खटाई, अंडा, मछली और गोश्त आदि का परहेज़ करें।

❑ छाया में खुश्क की हुई बड़ की दाढ़ी 3 माशा, कुश्ता फौलाद 1 रत्ती, तालमख़ाना 2 माशा एवं कीकर की सूखी फली 1 माशा—इनको दूध के साथ सुबह-शाम प्रयोग करें।

❑ सफ़ेद मूसली 5 माशा, इसबगोल का छिलका 1 तोला, सालब मिश्री 5

माशा, खांड आवश्यकतानुसार और गरम दूध 400 ग्राम—इन सबको मिलाकर खीर बना लें तथा दिन में दो बार खाएं।

❑ शिलाजीत मुसफ़्फ़ा 5 तोला, कुचला मुदब्बर 5 तोला, कुश्ता फौलाद 2 तोला, ज़ाफ़रान असली 1 तोला एवं अफ़सन 3 तोला—इन सबको शहद में मिलाकर चने के बराबर छोटी-छोटी गोलियां बना लें। एक समय निश्चित करके रोज़ाना एक गोली का प्रयोग करें। दूध, घी और मक्खन अधिक मात्रा में खाएं।

❑ अकरकरा 1 तोला, सफ़ेद मिर्च सवा 2 तोला, ज़ाफ़रान 1 तोला, इलायची बड़ी 4 माशा, लौंग 4 माशा, मस्तग़ी सवा 2 तोला, काफ़ी सवा 2 तोला, जामुन 35 नग, मुश्क 2 माशा, अम्बर 4 माशा, बादाम रोग़न 3 तोला, कंद सफ़ेद 3 तोला और भांग 6 तोला—इन सबको अलग-अलग बारीक पीसकर तीन गुना शहद में माजून बना लें। 1 माशा से 3 माशे तक सहन करने की क्षमता तक प्रयोग करें।

❑ करेला को जड़ और पत्तों सहित कूटकर इसका पानी निचोड़कर आग पर खुश्क कर लें। इससे सब्ज़ रंग का चूर्ण या गाढ़ा-सा रूब बना लें। इसके बाद अजमोदा 2 तोला, अफ़ीम 6 माशा, लौंग 6 माशा, ख़ुरासानी अजवायन 6 माशा, भांग 2 तोला, मुकडी 1 तोला, प्याज़ के बीज 6 माशा, गाजर के बीज 6 माशा तथा पुराना गुड़ 2 तोला—इन सबको अच्छी तरह कूट-छानकर 2 माशा रोज़ाना के हिसाब से प्रयोग करें। ख़ुराक लेने के बाद पान चबाएं। प्यास लगने पर सिर्फ़ दूध का सेवन करें। घी और मक्खन का प्रयोग अधिक मात्रा में करें। शीघ्रपतन के लिए यह अचूक औषधि है।

❑ सफ़ेद कनेर की जड़ छाया में सुखाकर बारीक पीस लें और 5 तोला पोस्त खशखश के जोशांदे में उसे खरल कर लें। फिर उसमें 3 माशा अफ़ीम मिलाकर अच्छी तरह खरल करके मटर के बराबर गोलियां बनाकर रखें। रतिक्रिया से पहले 1 गोली पानी से या मुंह में डालकर गीली करके शिश्न के ऊपर और चारों तरफ़ उसका पतला-सा लेप कर दें (अगले हिस्से को बचाएं)। जब लेप सूख जाए तो रति क्रिया (मुबाशरत) करें। शिश्न में तनाव रहेगा तथा शीघ्रपतन की शिकायत नहीं पैदा होगी। मुबाशरत के बाद शिश्न को गुनगुने पानी से धोकर उस पर सरसों का तेल चुपड़ दें।

❑ जोज़बुवा, शंगरफ, अकरकरा, अफ़ीम, दालचीनी, ज़ाफ़रान एवं भांग—3-3 माशा—इन सबको शहद के साथ मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनाएं। संभोग से दो घंटा पहले 1 गोली दूध के साथ लें तथा मुबाशरत का आनंद उठाएं।

❑ गोंद ढाक 5 तोला, बजलबंद 2 तोला व कुश्का कलई 1 तोला—इन तीनों को मिलाकर चूर्ण तैयार कर लें और रोज़ाना दूध के साथ इस्तेमाल करें। इसके नित्य प्रयोग से शीघ्रपतन के दोष का शमन हो जाएगा।

❑ अकरकरा 5 माशा, तुख़्मे रोहान 2 तोला और खांड 2 तोला—इन तीनों को बारीक करके, 6 माशा खुराक संभोग से दो घंटा पहले खाएं। शीघ्रपतन के लिए यह मामूली नुस्खा भी बड़ा लाभकारी है।

❑ अफ़ीम, पारा, तुख़्म जोज, मायस सियाह मिश्री और ज़ाफ़रान 3–3 माशा तथा मुश्क 4 रत्ती लें। इन सबको मिलाकर ख़ूब बारीक पीस लें और चने के बराबर गोलियां बनाकर इन पर चांदी के वर्क़ लगा दें। संभोग से 3 घंटा पहले एक गोली दूध के साथ निगल लें। शीघ्रपतन नहीं होगा और आनंद भी ख़ूब आएगा।

❑ जदवार, जोजबवा, माही रूबियां, खरातीन मुसफ़्फ़ा, माया शुतर आराबी, बसमाया, मुश्क ख़ालिस, शहद, सियाह मिर्च, इंजील, दारचीनी, करन्फल, अफ़ीम और रेग माही 1–1 माशा लें। इन सबको अच्छी तरह कूट–छानकर डेढ़ तोला शहद गरम करके उसमें मिला दें। रोज़ाना आधा माशा प्रयोग करें। थोड़े दिनों में ही शीघ्रपतन रोग दूर हो जाएगा।

❑ रौप्य भस्म 4 माशा, जावित्री, केसर और रेग माही—प्रत्येक 1.50 तोला, जायफल व समुद्रसोख—प्रत्येक 7 माशा, ज़हरमोहरा 1.25 माशा तथा कस्तूरी 1.50 माशा—सबको पीसकर सौंफ़ के अर्क़ में घोटकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाएं। समागम से 1 घंटा पहले 1 गोली आधे नींबू पर छिड़क कर अग्नि पर रखें। जब वह पकने लगे तो थोड़ी देर के उपरांत उसका रस कंठ के भीतर निचोड़ लें। यदि नींबू न मिले तो 1 गोली 1 पाव दूध के साथ खाएं। यह गोली आला क़िस्म की निरापद वीर्यस्तंभन औषधि है। यह शीघ्रपतन का निवारण करती है और 'हब्बे निशात' के नाम से यूनानी दवाख़ानों पर मिलती है।

❑ असली मोमियाई (सत शिलाजीत) 3 भाग, बबूल का गोंद 1 भाग और मिश्री दोनों के बराबर—इनको गुलाब के अर्क़ में घोटकर छोटी–छोटी गोलियां बना लें। सवा दो माशा औषध माउलअस्ल या अर्क़ माउल्लहम के साथ सेवन करें।

ये सभी नुस्ख़े हकीम लुक़मान के ज़माने से आज तक इस्तेमाल होते आ रहे हैं जो बहुत कामयाब माने गए हैं।

शिश्न की ख़राबी

स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हस्तमैथुन या समागम की अधिकता के कारण शिश्न में ख़राबी पैदा हो जाती है। इससे शिश्न में मुर्दनी हो जाती है, ख़ून का दौरा कम हो जाता है और अंडकोश लटक जाते हैं। शिश्न में न तो कठोरता आती है और न ही वो पूरी तरह उत्तेजित हो पाता है। यहां शिश्न की ख़राबी को दूर करने के नुस्ख़े बताए जा रहे हैं।

नुस्ख़े

❑ बड़ी कंटारी के फल, अकरकरा, मालकांगनी, बीर बहूटी, गुले बाबूना, घोड़े का सूम और मलादह एक-एक छटांक तथा तिल का तेल 2 छटांक—इसमें अदरक का पानी मिलाकर कंडों की आग पर चढ़ा दें। जब तेल बाकी रह जाए तो छानकर इस्तेमाल करें। यानी इस तेल की रोज़ाना शिश्न पर मालिश करें। इससे शिश्न की सारी ख़राबियां दूर होंगी।

❑ संखिया, पारा और लौंग—प्रत्येक 1 तोला, किर्ममखमल (बीर बहूटी), केंचुआ व जोंक—प्रत्येक 2 तोला, जरारीह (तेलनी मक्खी) 6 माशा, केसर 1.50 तोला तथा तिल का तेल आवश्यकतानुसार—समस्त द्रव्यों को पीसकर तेल में अच्छी तरह मिलाकर गोलियां बना लें। फिर इनको शुद्ध करके आतशी शीशी में पाताल-यंत्र की विधि से तेल निकालें। बाद में इसमें नरसिंह वसा 1 तोला और सांडा की चर्बी 2 तोला मिलाएं। 2 रत्ती लेकर सुपारी और सीवन को छोड़कर शिश्न पर मलें और ऊपर से पान का पत्ता बांध दें। यदि छोटी-छोटी फुंसियां निकलें तो कोई बात नहीं। यदि फुंसियां बड़ी और दाह अधिक प्रतीत हो, तो तिला (पतला लेप) लगाना बंद करके चमेली का तेल लगाएं। फुंसियों के दबने पर पुनः तिला का उपयोग करें। यह शिश्न की सभी तरह की ख़राबियों को दूर करने वाला है।

❑ विलायती रोग़न व दारचीनी 1-1 तोला और लौंग रोग़न 1 तोला लें। यदि विलायती रोग़न मालकांगनी मिल जाए तो वह भी 2 तोला मिला लें। इनमें 5 तोला रोग़न बेद इंजीर भी मिलाकर रख लें। इसके बाद तीन-चार बूंद रोज़ाना शिश्न पर मलें। थोड़े दिनों में ही शिश्न की सभी ख़राबियां दूर हो जाएंगी और उसमें क़ुदरती सख़्ती पैदा हो जाएगी।

❑ जुन्द बेदस्तार 6 माशा, तुख़्मे इंजीर 6 माशा, लोबान 4 माशा, रोग़न नर्गिस 2 तोला, रोग़न चमेली 2 तोला और रोग़न गुल 2 तोला—इन सबको मिलाकर खरल करें तथा रोज़ अच्छी तरह शिश्न की मालिश करें। इसके प्रयोग से शिश्न के अंदर कोई ख़राबी नहीं रहेगी।

❑ आधा सेर मग़ज़ बिनौला लेकर अच्छी तरह कूट लें और तीन सेर पानी में पकाएं। जब सिर्फ़ दो सेर पानी रह जाए तो ठंडा होने के लिए रख दें। पानी की सतह पर जो तेल जमा हुआ नज़र आए, उसे सावधानी के साथ उतार लें और गरम करके शीशी में भर लें। इस तेल का वज़न यदि 5 तोला हो तो इसमें 6 माशा या एक तोला अम्बर खरल कर लें। फिर तेल को निथारकर रख लें तथा रोज़ाना शिश्न पर मालिश करें। कुछ ही दिनों में शिश्न में नई ज़िंदगी वापस आ जाएगी और जिंसी

❑ रीछ, शेर, सांड और मुर्गे की चर्बी 2-2 तोला लेकर पिघला लें। फिर उसमें प्याज़ का अर्क़ मिला दें। यह लिंग (शिश्न) की हर तरह की कमज़ोरियों के लिए बेहतरीन तेल है। इसकी मालिश से शिश्न में कठोरता के साथ-साथ पूरी ताक़त भी आ जाती है।

❑ जोहर लोबान ख़ाना साज़ 5 माशा और रोग़न चमेली असली 1 तोला—आपस में मिलाकर खरल कर लें। यह तिला शिश्न की ख़राबी दूर करने का बेहतरीन नुस्ख़ा है।

ताक़त का ख़ज़ाना

किसी ने ठीक ही कहा है कि जिस्मानी ताक़त से बड़ा ख़ज़ाना संसार में कोई दूसरा नहीं है। जिन लोगों की यह ताक़त उनकी खुद की ग़लतियों की वजह से कम हो गई है, उसमें सुधार और वृद्धि के लिए प्राचीन हकीम लुक़मान के आज़माए हुए नुस्ख़े यहां दिए जा रहे हैं। इन नुस्ख़ों पर अमल करने से पहले कुछ बुनियादी बातों को जान लेना लाज़िमी है।

मर्दाना ताक़त बढ़ाने के लिए ग़लत हरकतों से बाज़ आना चाहिए। भोजन के तुरंत बाद या भूख की हालत में समागम करने से मेदा और आंतें कमज़ोर हो जाती हैं, जिसका असर शरीर के हरेक अंग पर पड़ता है। नीचे के बालों की जल्दी-जल्दी सफ़ाई बड़ा महत्त्व रखती है। इससे त्वचा में हरकत पैदा होती है और शिश्न में ख़ून का दौरा तेज़ हो जाता है। रोज़ सुबह नहाने से पहले ताज़ा पानी धार बांधकर डालने से भी शिश्न में जोश पैदा होता है। मर्दाना ताक़त बढ़ाने में प्याज़ को हकीमों ने बहुत असरदार माना है। आवश्यकता से अधिक कामवर्धक दवाओं के सेवन से भी हानि होती हैं, क्योंकि रोगी इसका आदी हो जाता है और फिर इनके बिना उसका काम नहीं चलता। ताक़त की कमी दूर करने के लिए दवाओं का प्रयोग करना चाहिए, अय्याशी के लिए नहीं।

नुस्ख़े

❑ रक्त बहमन 8 तोला, श्वेत बहमन 8 तोला, कुलंजन, अकरकरा, जुफ्ता बलूत—प्रत्येक 1 तोला, भंग बीज 2 तोला, कुंदुर एवं मायेशुतुर ऐराबी—प्रत्येक 3 तोला, सालम मिश्री, अकाकिया, जायफल, सोआ के बीज और नागरमोथा—प्रत्येक 5 तोला, अहिफेन 2 तोला, एट्रोपीन 1 माशा, अर्गट आफराई 4 रत्ती, मंडूर भस्म 7 तोला, अक़ीक़ भस्म 2 तोला, त्रिबंग भस्म 2 तोला, बंग भस्म 5 तोला, सुवर्ण भस्म 2 माशा, केसर 2 तोला, मिश्री और शुद्ध शहद—प्रत्येक 3 पाव तथा तरंजबीन 1 सेर लें। पहले मिश्री और यवास शर्करा की चाशनी बनाएं। बाद में सभी

सामान को बारीक कूटकर उसमें मिलाकर, माजून तैयार करें। 2 माशा से 1 तोला तक (शरीर के बल के अनुसार) खाकर ऊपर से गुनगुना दूध पिएं।

विशेष—2 माशा से शुरू करके 4 रत्ती प्रतिदिन बढ़ाएं। यह माजून आमाशय और आंत्र को शक्ति प्रदान करता है, पाचन-शक्ति की वृद्धि करता है, शुक्रमेह को नष्ट करता है, रुकावट को बढ़ाता है तथा शरीर को पुष्ट, बलवान एवं स्थूल बनाता है। उत्तमांगों को बल प्रदान करता है, क़ब्ज़ का निवारण करता है तथा सामान्य स्वास्थ्य की वृद्धि करता है। हकीम फ़ीरोज़ुद्दीन ने इसे अनेक लोगों पर आज़माया था।

❑ सोने और चांदी के वर्क़, कस्तूरी, अम्बर अशहब—प्रत्येक 1 माशा, साफ़ किया हुआ जरिश्क मुनक़्क़ा 7 तोला 1 माशा, जदवार खताई 1 तोला 10 माशा, जावित्री, कवाबचीनी, तगर (असारून), हब्ब सनोवर, हीराबोल (मुरमक्की), जायफल—प्रत्येक 2 तोला, तेजपात 2 तोला 3 माशा, पीपल, बालछड़, दरूनज अकरबी, ऊद कमारी, लौंग, इलायची—प्रत्येक 3 तोला 4 माशा, दारचीनी, जरंबाद (नरकचूर), नागरमोथा, शिलारस (मीआसाइला)—प्रत्येक 2 तोला, सोंठ, मस्तग़ी, काली मिर्च, अजमोदा (तुख़्मकरफ़्स)—प्रत्येक 5 तोला, केसर, अहिफेन—प्रत्येक 1 तोला, प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, यशब भस्म, कहरुवा शमई—प्रत्येक 6 माशा तथा बंग भस्म 3 माशा लें। कस्तूरी, केसर, अम्बर, शिलारस, सोने के वर्क़ इत्यादि को वेतसार्क (अर्क़ वेदमुश्क) में खरल करें। भस्मों को गुलाब-अर्क़ में खरल करें और शेष द्रव्यों को कूट-छानकर मिला दें। फिर शुद्ध रोग़न बलसां 3 माशा मिलाकर पुनः खरल करें और रूह गुलाब व बबूल का गोंद यथावश्यक मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लें। 1 गोली नित्य शुद्ध गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह वीर्य-पुष्टिकारक, वीर्य-स्तंभक, मैथुनानन्दायक और हरारते गरीज़ी को उद्दीप्त करने वाली तथा बाजीकर है।

❑ शिंगरफ की डली 2 तोला, सफ़ेद बछनाग महीन पिसा हुआ तथा सूरण (जमीकंद) आवश्यकतानुसार लें। पहले जमीकंद को कुचलकर रस निचोड़ें। फिर उस रस में बछनाग गूंध लें। उसके मध्य में शिंगरफ की डली रखकर गोला बनाएं और उस गोले पर एक मोटा कपड़ा लपेटकर सिल दें। इसके बाद तांबे की देगची में तीन सेर कुसुम का तेल डालकर गोला इसी में डाल दें। देगची का मुंह किसी बरतन से ढंककर ऊपर पत्थर रख दें और उसके नीचे एक पहर तक मंदी आंच दें। फिर तीन पहर तक तेज़ आंच जलाएं। देगची में से भाप न निकलने दें। इस बीच देगची में आवाज़-सी होगी। चारों पहर पूरे हो जाने पर शिंगरफ की डली निकाल लें और बारीक पीसकर रख लें। 1 चावल भार से 2 चावल भार तक लुबूब कबीर 7 माशा या माजून कलां 5 माशा के साथ सेवन करें। इससे खोई हुई ताक़त और जवानी फिर से लौट आएगी।

❑ मोती, प्रवालमूल (बुस्सद)—प्रत्येक 4.50 माशा, इजखिर का शिगूफा (फुक्काह इजखिर), नागरमोथा, तज, झाऊ, दारचीनी, तगर (असारून) और मस्तग़ी—प्रत्येक 2.25 माशा, अनीसून, सफ़ेद बहमन—प्रत्येक 1.50 माशा, काकजन, लबसास की जड़—प्रत्येक 3.50 माशा, कीकर की गोंद और कतीरा—प्रत्येक 1.75 माशा—इनको कूटकर कपड़छन कर लें। फिर जितना चूर्ण हो, उतने प्रमाण में शहद लेकर चाशनी करके उक्त द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें। 5 माशा से 7 माशा तक ताज़े पानी या दूध के साथ सेवन करें। यह शिश्न को लंबा, मोटा और कठोर (सख़्त) बनाता है। वातनाड़ियों को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ वीर्य को गाढ़ा करता है और रुकावट के समय को बहुत आगे बढ़ा ले जाता है।

❑ शुद्ध मोमियाई (सत शिलाजीत) और रूमी मस्तग़ी 4-4 रत्ती, अम्बर अशहब 1 माशा—इन तीनों को चीनी की एक लंबी प्याली में रखकर, 3 माशा पिस्ते के तेल में मिलाएं। फिर इस प्याली को तांबे के किसी बरतन में रखकर, बरतन में गुलाब-अर्क़ तथा अर्क़ बहर नारंज इतना डालें कि प्याली के ऊपर के किनारे से नीचे रहे। फिर एक देगची में जल भर दें और उस जल में तीन पाए के सहारे जल से ऊपर प्याली रखें। इसके बाद डेगची के मुंह पर ढक्कन रखकर संधियों को आटे से मज़बूत कर दें। अब उस देगची के नीचे आग जलाएं जिससे मोमियाई पिघल जाए। अब उसमें ज़हरमोहरा खताई (फादेज़हर मादनी) और शुद्ध कस्तूरी 1-1 माशा, अबीध मोती, लौंग, सफ़ेद बंसलोचन, जायफल, जावित्री, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, दारचीनी, शकाकुल मिश्री, सोंठ, दरूनूज अकरबी, ऊदहिंदी, ऊद सलीब, सालम मिश्री और जदबार खताई—सभी 4-4 रत्ती की मात्रा में लेकर, कूट-छानकर प्याली की दवा में मिला दें। अब चने के बराबर गोलियां बनाकर सोने के वर्क़ में हरेक गोली को अलग-अलग लपेटकर रख दें। रात्रि में सोते समय 2 गोली अर्क़ गावज़बान 7 तोला, अर्क़ बेदमुश्क 3 तोला, अर्क़ केवड़ा 3 तोला और मिश्री 2 तोला डालकर, बालगू-बीज 3 माशा का प्रक्षेप देकर दूध के साथ उपयोग करें। मर्दाना ताक़त बढ़ाने में इन गोलियों को महारथ हासिल है। यह शिश्न को बल प्रदान करके दौर्बल्य का नाश करती है। स्त्री-समागम के बाद इसका उपयोग अतिशय लाभदायक है।

❑ संखिया, हड़ताल, शिंगरफ—प्रत्येक 1 तोला और काग़ज़ी नीबू 100 नग लें। सभी द्रव्यों को नीबुओं का रस डाल-डालकर कूटें। इसे उस वक़्त तक कूटते रहें, जब तक कि सारे नीबू ख़त्म न हो जाएं। इसके बाद मूंग की दाल के बराबर गोलियां बना लें। जवान आदमी आधी गोली और वृद्ध 1 गोली दूध के साथ सेवन करें। यह नपुंसकना दूर करती है और शीघ्र होने वाले पतन को रोकती है। जवानी

के हस्तमैथुन, बहुमैथुन जैसे कुकर्मों या जराजन्य मैथुनिक शक्ति की कमी अथवा क़मज़ोरी को दूर करके पुनः ताक़त पैदा करने में असरकारी है।

विशेष—इस गोली के सेवनकाल में स्त्री-समागम से बचें और दूध-घी का प्रयोग अधिक मात्रा में करें। यदि इनके सेवन से भूख लगनी बंद हो जाए, तो एक तोला शुद्ध गंधक आमलासार बढ़ाकर फिर से गोलियां बनाएं और सेवन करें।

❑ पालतू नर चिड़े के सिर का गूदा, शकाकुल मिश्री, प्याज़ के बीज, गंदना के बीज, कुशन खुरमा, सालम मिश्री, तारामीरा के बीज (तुख्म जिरजीर) और रेगमाही—प्रत्येक 1 तोला तथा कस्तूरी 3 रत्ती लें। इन सबको कूट-पीसकर शहद और तारामीरा के रस में चने के बराबर गोलियां बनाएं। पहले यह गोली खाएं और ऊपर से काबुली चनों के भिगोए पानी 5 तोला में 2 तोला मिश्री मिलाकर पी लें। यह गोली बूढ़ों में भी जवानों जैसी ताक़त और जोश पैदा कर देती है।

❑ मोम (असली मधुमक्खी का), बत्तख और मुरगाबी की चर्बी, बकरी की पिंडली का गूदा—प्रत्येक 2 तोला, खतमी की जड़ का लुआब 1 तोला, कतीरा 6 माशा, राल 1 तोला और रोग़न बनफ़शा 8 तोला लें। चर्बियों को पिघलाकर और शेष द्रव्य पीसकर तेल (रोग़न) और लुआब में मिलाएं। इसके बाद 2 माशा गरम करके दस मिनट तक शिश्न पर मालिश करें। यह शिश्न को मोटा और सख़्त बनाता है तथा नामर्दी को दूर करता है।

❑ नित्य नहार मुंह खालिस शहद हल्के गरम दूध में अच्छी तरह फेंटकर पीने से मर्दाना ताक़त में बढ़ोत्तरी होती है। कमज़ोर आदमी इसका इस्तेमाल ज़रूर करें।

❑ प्याज़ का अर्क़ 1 सेर, खालिस शहद आधा सेर, सफ़ेद मूसली का चूर्ण 1 पाव लें। प्याज़ के अर्क़ व शहद को किसी कलईदार बर्तन में डालकर आग पर पकाएं। आग हल्की-हल्की जलाएं। यहां तक कि प्याज़ का अर्क़ पूरी तरह जल जाए और सिर्फ़ शहद बाकी रह जाए। अब बर्तन को नीचे उतार लें। उसमें सफ़ेद मूसली का चूर्ण डालकर अच्छी तरह मिला दें। इसे किसी कांच के बर्तन में रख लें। यह माजून 4 माशा सुबह-शाम दूध के साथ खाएं। यह 40 दिन का कोर्स है। ताक़त बढ़ाने का यह एक कामयाब माजून है। इन 40 दिनों में स्त्री-समागम का प्रयास कदापि न करें।

❑ वर्क़ तिला सोना 6 माशा, नमक का तेज़ाब 6 माशा, शोरा 4 माशा—इन सबको किसी कांच की शीशी में डालकर हिलाएं। फिर इसमें 10 तोला गुलाब का अर्क़ मिला लें। बस दवा तैयार है। इसकी 7 से 10 बूंद तक माउल लहम या अर्क़ गावज़बान में डालकर पिएं।

❑ असली सोने के वर्क़ और पारा बराबर वज़न में लेकर इतना खरल करें कि गोली बंध जाए। जब गोली बन जाए, तो सिरके में डाल दें। गोली के सख़्त होने पर

सावधानी से रखें। इसे दूध में डालकर पकाएं और दूध पी लें। इससे ताक़त और भूख में वृद्धि होगी और चेहरे पर सुर्खी आ जाएगी। कुछ ही दिनों में वृद्ध तक को ऐसा महसूस होगा, जैसे जवानी लौट आई है।

❑ 1 बड़ा-पका तरबूज लेकर उसे बीच में से दो टुकड़े कर दें। एक टुकड़ा अलग रखें और दूसरे टुकड़े को गूदे से ख़ाली कर दें। फिर सफ़ेद संदल 2 माशा और तबाशीर 2 माशा बारीक पीसकर उस ख़ाली खोल (टुकड़े) में बिछा दें और उसके ऊपर किशमिश भर दें। इसके बाद दूसरा गूदे वाला टुकड़ा उसके ऊपर रख दें और मज़बूती के साथ किसी चीज़ से बांध दें तथा सूरज के सामने रख दें। दस दिन तक उसे तेज़ धूप में रखें ताकि उस पर सूरज की तपिश पड़ती रहे। रात को उसे साये में रख दिया करें। दस दिन के बाद खोलकर जो कुछ निकले, उसे कपड़े में छानकर कांच के बर्तन में संभालकर रख लें। हर दिन नहार मुंह 2 माशा सेवन करें और फिर कुदरत का तमाशा देखें।

❑ शहद असली 1 सेर, मीठा अंगूर 1 सेर, अदरक का अर्क़ 1 पाव और प्याज़ का अर्क़ 2 सेर—इन सबको किसी कलई वाले बर्तन में डालकर धीमी आंच पर गरम करें। यहां तक कि क़व्वाम तैयार हो जाए। इसे आधा छटांक रोज़ गाय के दूध के साथ इस्तेमाल करें। आख़िरी उम्र तक ताक़त बहाल रहेगी। यह ग़िज़ा-की-ग़िज़ा और दवा-की-दवा साबित होगी।

बेहतरीन नुस्ख़े

❑ मूसली सफ़ेद, मूसली सियाह, शक़ाक़ुल सतावर सालब बड़ी—सभी 5-5 तोला और असगंध 40 तोला लें। इन सबको अलग-अलग बारीक करके एक जगह मिलाएं। बाद में इसमें थोड़ी खांड भी मिला लें तथा हिफ़ाज़त से रखें। यह एक प्रकार का चूर्ण तैयार हो जाएगा। इसे रोज़ाना गाय के गरम दूध के साथ 40 दिन तक 1 तोला की मात्रा में खाएं। 40 दिन के इस्तेमाल के बाद शरीर में नई ताक़त आ जाएगी। तब मात्र स्त्री-समागम का समय ही लंबा नहीं होगा, आनंद भी ख़ूब आएगा।

विशेष—यह नुस्ख़ा वीर्य को बहुत अधिक गाढ़ा करता है और मर्दाना जिंसी ताक़त में बढ़ोत्तरी करता है। यह ख़ासतौर पर उन मर्दों के लिए है, जिनकी बीवियां एक से ज़्यादा होती हैं।

❑ आधा सेर मूसली को आधा सेर दूध में पका लें। जब सारा दूध ख़ुश्क हो जाए तो उसे साये में रखकर सुखा लें और कूट-छान लें। फिर उसमें 1 तोला जायफल और 1 तोला जावित्री मिलाकर उसकी गोलियां बना लें। गोलियों का आकार बेर की गुठली के बराबर ठीक रहेगा। रोज़ 1 गोली खाने से शरीर की ताक़त का ख़ज़ाना लबालब भर जाएगा।

❑ जो लोग जवानी से गुज़रकर दरमियानी उम्र को पहुंचते हैं, उनको कुछ अधिक ताक़त की ज़रूरत महसूस होती है, क्योंकि उनके अंदर ताक़त कम होने लगती है। ऐसे लोगों के लिए यह नुस्ख़ा बड़े ही काम का है।

सलीख़ा, बालछड़, इलायची, दारचीनी, लौंग, नागरलूथ, सोंठ, ज़ाफ़रान, पीपलकंठ—प्रत्येक 3 तोला, उरद बलसान, असारवन, हब्बे आलस, कसुबज्जीरा, मोरद के बीज, मस्तग़ी—सभी 3 तोले की मात्रा में लें। इन सबके वज़न के बराबर सफ़ेद खांड लें और दुगुने वज़न के शहद में मिला लें। रोज़ाना सुबह-शाम 6 माशा भोजन के बाद खाएं और ऊपर से दूध पिएं। यह जवारिश बुढ़ापे के कारण शरीर में पैदा होने वाली कमज़ोरी को दूर कर देती है। यह 40 साल से ऊपर के मर्दों और औरतों के लिए समान लाभकारी है। इससे मूत्र का अधिक मात्रा में आना भी बंद हो जाता है।

❑ जो लोग अधिक सहवास करने की वजह से दुर्बल शरीर के, कमर में दर्द, सांस की कमज़ोरी, शीघ्रपतन, फेफड़ों में ठहराव या हल्का बुख़ार हर वक़्त महसूस करें, उन्हें यह नुस्ख़ा अमल में लाना चाहिए। मुल्क रूमी 4 माशा, मस्तग़ी 6 माशा, जदवार 8 माशा, ज़ाफ़रान 2 माशा, जावित्री 1.25 तोला और मर्वारीद 6 माशा—इन सबको अलग-अलग बारीक पीसकर, गुलाब के अर्क़ में मिलाकर गोलियां तैयार करें तथा रोज़ाना तीन गोलियां खाएं।

❑ माजून मुकव्वी, क्लोंजन, सोंठ, कबाबचीनी, दारचीनी—प्रत्येक 1 तोला, जायफल, मस्तग़ी, लौंग, ऊद, ग़रकी तथा अकरकरा—प्रत्येक 6 माशा लें। इनके कुल वज़न के बराबर शहद लें। फिर तीन गुना शक्कर मिलाकर क़व्वाम बना लें और इससे माजून तैयार करें। रोज़ाना 1 तोले की मात्रा में इस माजून का सेवन करें। जब यह महसूस होने लगे कि शरीर में मर्दाना ताक़त की कमी होने लगी है और जिंसी ताक़त को बढ़ाने के लिए कोई क़दम उठाना ज़रूरी है, तो इस नुस्ख़े का प्रयोग करें।

❑ सियाह मिर्च, पीपल, सूंठ (सोंठ), दारचीनी, खरफा, क़बाबचीनी, मस्तग़ी एवं नारियल का बीज—प्रत्येक 1 तोला लें। इन सबको अच्छी तरह कूटकर एक जगह मिला लें। फिर तीन गुना वज़न के शहद में मिलाकर माजून तैयार करें। 9 माशा माजून रोज़ शाम को खाएं। इससे ताक़त का ऐसा ख़ज़ाना मिलेगा जो कभी ज़ाया नहीं होगा।

❑ मोती नासका, कहरया, मोंगा, अब्रेशम, मक़रत्त, ज़रबनाद, दर्दज अक़रबी—प्रत्येक 6 माशा, बहमन सफ़ेद, बहमन सुर्ख़, बालछड़—प्रत्येक 1 तोला, इलायची, लौंग, पतरज, अशबा मग़रिबी—प्रत्येक 4 माशा, जंद बेदस्तर, पीपल, मुश्क ख़ालिस—

प्रत्येक 2 माशा लें। सबको अलग-अलग कूट-छानकर शहद में मिलाकर रखें और रोज़ 4 माशा सेवन करें। यह दवा नहीं, जिंसी ताक़त बढ़ाने का ख़ज़ाना है।

❑ ऊंचे दर्जे का जवां मर्द बना देने वाला यह मुग़लों का बादशाही नुस्ख़ा है। सोने का बुरादा और पारा 1-1 तोला तथा चौलाई का अर्क़ 10 तोला—संग सिमांक़ की खरल में मिलाकर घोटें। फिर गुलेले बनाकर ठालियों में बंद कर दें और आधा पाव उपलों की आंच दें। जितना वज़न कम हो जाए, उतना ही पारा व अर्क़ चौलाई मिलाकर फिर आंच दें। ऐसा तब तक करते रहें, जब तक पारा घटना बंद न हो जाए और 60 आंच पूरी हो जाएं और पारा बराबर वज़न का मिलाकर तिला के कुश्ते हो जाएं। इसको आधा चावल के बराबर मक्खन में इस्तेमाल करें। पांच दिन में यह नामर्द को भी मर्द बना देता है।

पेशाब की जलन

कभी-कभी सफ़ाई आदि ठीक से न किए जाने या सहवास-क्रिया के बाद शिश्न को न धोने अथवा गरम मसालेदार भोजन के अधिक प्रयोग से यह परेशानी हो जाती है। इसमें पेशाब करते समय बहुत ज्यादा जलन और पीड़ा होती है।

नुस्ख़े

❑ सूखा धनिया, सफ़ेद संदल का बुरादा एवं सूखा आमला—प्रत्येक 6 ग्राम लें। इन तीनों को 1 सेर पानी में रात भर भिगोकर रखें। सुबह इसमें आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाकर, छानकर पिएं। कैसी भी जलन होगी, ख़त्म हो जाएगी।

❑ खीरे व ककड़ी के बीज 6-6 ग्राम लें। दोनों को अच्छी तरह कुचलकर आधा सेर पानी में जोश देकर छान लें और रोज़ सवेरे पिएं। पेशाब की जलन शीघ्र ही ठीक हो जाएगी।

बंदकुशाद (मूत्रमार्गविस्तृति)

इस रोग की उत्पत्ति कई कारणों से हो सकती है। इस रोग के शमन के लिए कुछ नुस्ख़े दिए जा रहे हैं जो बहुत लाभकारी हैं।

नुस्ख़े

❑ सालम मिश्री, सिरस के बीज की गिरी और धोई हुई लाख (लुक मग्सूल)—प्रत्येक 2 तोला लें। इन सबको कूट-पीसकर एक पाव बड़ के दूध में खरल करें। जब वह गाढ़ा होकर गोलियां बांधने योग्य लुगदी हो जाए, तो जंगली बेर के समान गोलियां बना लें। रोज़ाना 1 गोली एक हफ़्ते तक खाएं। यह बंदकुशाद (मूत्रमार्गविस्तृति) में गुणकारी है।

❑ कमरकस, बीजबंद, पीपल, समुद्रसोख, उटंगन के बीज, ब्रह्मदंडी, तालमखाना, गोखरू, सतावर, सोंठ, काली मूसली और कौंच के बीज—प्रत्येक 10 ग्राम लें। इन्हें कूट-पीसकर इससे दुगुनी खांड में मिला दें। इसे 6 माशा रोज़ गाय के दूध के साथ सेवन करें।

❑ पिस्ता के फूल, छोटी इलायची के बीज, आलूबुखारे का गोंद, कीकर की कोमल फलियां, कीकर के फूल, आम की बौर एवं सुपारी के फूल—प्रत्येक 7 माशा लें। इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनाएं। 9 माशा चूर्ण रोज़ दूधादि के साथ सेवन करें।

कुरूहखुसया (वृषणगत व्रण)

नुस्ख़े

❑ नागचूर्ण (सीसे का बुरादा), चंदन, गुलाब के फूल, तांबे के पत्थर का बुरादा (बुरादे संगमिस)—प्रत्येक समभाग में लें। सबको महीन पीसकर मकोय के रस में मिलाकर लेप तैयार करें और व्रणों पर लगाएं। यह वृषणगत व्रण में शीघ्र ही लाभ पहुंचाता है।

❑ शियाफ मामीसा, अन्जरूत, माजू, गुलाब के फूल, गुलनार, अकमाउर्रुम्मान (अनार की कली), मुरदासंग, कुंदुर और एलुवा—प्रत्येक समभाग में लें। इनको बारीक पीस-कपड़छन कर चूर्ण बनाएं। व्रण को साफ करके उस पर चूर्ण छिड़क दें। यह शिश्न के दुष्ट व्रणों में भी लाभदायक है।

❑ नाख़ूना (इकलीलुल्मलिक), कैसूम, बाबूना के फूल—प्रत्येक 2 तोला, बनफ़शा के फूल और खतमी के फूल—प्रत्येक 1 तोला 2 माशा तथा गुलाब के फूल 1 तोला लें। इन सबको कूट-छानकर अलसी के लुआब में मिलाकर लेप तैयार करें। यह वृषण-प्रकोप में तो लाभदायक है ही, सूजन आदि को भी समाप्त करता है।

❑❑

16

स्त्रियों के गुप्त रोग

स्त्रियों को बात छिपाने में महारथ हासिल होती है, वो बात चाहे किसी रोग से संबंधित ही क्यों न हो। ऐसे अनेक रोग हैं जिन्हें स्त्रियां अपने पति तक से छिपाए रखती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि वे अपनी अज्ञानतावश उन रोगों को अधिक महत्त्व नहीं देतीं। किन्तु वे रोग धीरे-धीरे उन्हें अन्दर से खोखला कर देते हैं। ऐसे ही कुछ रोगों का यहां उल्लेख किया जा रहा है।

श्वेत प्रदर

प्राय: 80 प्रतिशत स्त्रियां आज श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) से परेशान हैं। यह रोग मुख्यतया स्त्रियों के स्वास्थ्य और शक्ति को घुन की तरह खा जाता है, शरीर को सुखा देता है तथा सुंदरता में कमी लाता है। समझदार स्त्रियां इसे सफ़ेद पानी आना और ग्रामीण भोली-भाली स्त्रियां इसे कपड़े में दाग़ लगना कहती हैं। श्वेत प्रदर के कारण स्त्रियां परेशान तो रहती हैं, किन्तु किसी से कुछ कह नहीं पातीं। इससे शरीर की शक्ति खिंचती रहती है। सर्दी लगना, कृमियों का होना, गंदा रहना, अनियमित ऋतु, जरायु का अपनी जगह से हट जाना, ख़ून की कमी, अधिक विलासिता, आलस्यपन, उत्तेजना पहुंचाने वाली चीज़ों को खाना, समागम की अधिकता, बार-बार का गर्भस्राव, कसे कपड़े पहनना आदि कारणों से यह रोग पैदा हो जाता है। इस रोग के होने पर तबीयत सुस्त रहती है, किसी काम में दिल नहीं लगता तथा ज़रा-ज़रा सी बात पर तबीयत बिगड़ जाती है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है, गुस्सा बढ़ जाता है, दिल की धड़कन और घबराहट भी बढ़ जाती है। किसी काम में कोई उत्साह नहीं रहता। याददाश्त की कमी हो जाती है। भूख नहीं लगती। सिर, कमर, पेट और पीठ में दर्द होता है। चेहरे पर पीलापन छा जाता है।

नुस्ख़े

- इलकुलबुत्म, सोने-चांदी के वर्क़, अम्बर अशहब, रूमी मस्तग़ी—प्रत्येक

सुपारी के फूल, [illegible] बीज, जावित्री, ऊदसलीब, कुलंजन, बंसलोचन, धोया हुआ सफ़ेद कत्था, जुस्त बलूत, बबूल का गोंद, सेमल का गोंद (मोचरस), सुपारी का गोंद, सफ़ेद बहमन, रक्त बहमन, शकाकुल मिश्री, फ़ारसी गुलनार, कीकर जड़ की छाल, सूखा धनिया, सालम मिश्री, गुठली निकाला हुआ आंवला, किर्फा, सफ़ेद चंदन, बलूत का आटा (आर्दबलूत)—प्रत्येक 4.50 माशा, पिस्ता की गिरी, नारियल की गिरी, बादाम की गिरी, कशमीरी बादाम (फिंदक) की गिरी, चिलगोज़ा की गिरी, हब्बतुलखिज़रा की गिरी, पोस्तदाना, तुख्मखुरफा सियाह (कुलफा के बीज), काबुली हरड़ का छिलका, भुनी हुई काली हरड़ और गुलाब की कली—प्रत्येक 9 माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का, शर्बत फवाके शीरी और अर्क़ गुलाब—प्रत्येक 7 तोला 6 माशा, मिश्री 11 तोला 3 माशा, सेब, बिही, मीठे अनार और अमरूद का रस—प्रत्येक 15 तोला लें। सबको घोट-पीस और मिलाकर माजून तैयार करें। 5 माशा से 7 माशा तक सवेरे दूध या पानी के साथ सेवन करें। यह स्त्रियों के श्वेत प्रदर आदि नाना प्रकार के योनिस्राव के लिए लाभदायक है।

❑ सफ़ेद और लाल तोदरी, बायबिडंग, छोटी और बड़ी माई, सफ़ेद और लाल बहमन, काली और सफ़ेद मूसली, मूसली सेमल, पिस्ता का फूल, सुपारी का फूल, गुल धाबा, सालम मिश्री, शकाकुल मिश्री, चुनिया गोंद, मैदा लकड़ी, तज, तालमखाना, मजीठ, छोटी इलायची, सतावर, पाखानभेद, हरा माजू, चिकनी सुपारी, सिरियारी के बीज, गुजराती बीजबंद, समुद्रसोख, पठानी लोध, संग जराहत, इमली के बीज, बहुफली—प्रत्येक 1 तोला, घी में भुना हुआ बबूल का गोंद 1 पाव, मीठे बादाम और पिस्ते की गिरी—प्रत्येक 1 छटांक, नारियल की गिरी आधा पाव, छुआरे, सफ़ेद मखाने, सिंघाड़े का आटा, गेहूं का आटा, मूंग का आटा (चारों घी में भुने हुए)—प्रत्येक 1 पाव और चीनी 2 सेर लें। चीनी को छोड़कर सबको कूट-पीसकर कपड़छन करें। फिर चीनी की चाशनी बनाकर तैयार चूर्ण को चाशनी में मिलाकर एक-एक छटांक के लड्डू बनाएं। दो लड्डू सवेरे नाश्ते में खाएं। यह अंगों को बल प्रदान करता है। स्रावों को रोकने के लिए भी बहुत गुणकारी है। प्रसवोत्तरकालीन निर्बलता को दूर करने के लिए बहुत लाभदायक है।

विशेष—यदि मौसम सर्दियों का हो तो इसमें नागौरी असंगध, जायफल, पीपल और जावित्री को भी शामिल कर लेना चाहिए।

❑ मजीठ 10 तोला, सुपारी 20 तोला और छुआरे आधा सेर—तीनों को 10 सेर गाय के दूध में पकाएं। जब सब गल जाएं तो उन्हें बारीक पीसकर रखें। तदुपरांत मूंग का आटा 10 तोला, गोंद भुना हुआ, गेहूं का सत भुना हुआ—प्रत्येक

1 पाव एवं भुनी हुई बादाम की गिरी आधा सेर अलग रखें। घी 1 सेर और चीनी 3 सेर लें। पहले आटों को घी में भूनें, फिर चीनी की चाशनी करके उसमें मिलाएं। इसके बाद शेष सभी सामग्री को कूट-छानकर मिला दें। अब गोखरू आधा सेर, ढाक का गोंद, नारियल की गिरी—प्रत्येक 1 पाव, सालम मिश्री, दालचीनी, लौंग, छोटी इलायची, सोंठ—प्रत्येक 4 तोला 8 माशा, पिस्ता का फूल और सुपारी का फूल—प्रत्येक 14 माशा, जायफल 2 तोला, कचनार की छाल, कीकर की छाल, संखाहुली की छाल—प्रत्येक 6 माशा लें। इन सबका चूर्ण बनाकर कपड़छन करके उक्त सामग्री में मिलाएं। आख़िर में केसर 4 तोला और कस्तूरी 6 माशा को गुलाब के अर्क़ में खरल करके मिला दें। 1 से 2 तोला तक दूध या ताज़े जल के साथ सुबह-शाम सेवन करें। यह श्वेत प्रदर को दूर करता है तथा स्त्री को गर्भधारण के योग्य बनाता है।

साधारण नुस्ख़े

❑ मोचरस 25 ग्राम, ढाक का गोंद 25 ग्राम, असगंध 12 ग्राम, इंद्रजौ शीरी 12 ग्राम, माज (जला हुआ) 3 ग्राम, शक्कर 75 ग्राम—इन सबको पीसकर शक्कर में मिला लें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार प्रयोग करें।

❑ थोड़ी-सी बबूल की फली सुखाकर बारीक चूर्ण करें और इसे दिन में दो बार पानी से 2 ग्राम की मात्रा में लें।

❑ भुनी हुई इमली के बीज की गिरी 30 ग्राम पीसें और दिन में 3 बार पानी से 1 ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

❑ सूखा सिंघाड़ा 20 ग्राम, मूसल सेमल 20 ग्राम और शक्कर 40 ग्राम—सबको बारीक पीसकर शक्कर में मिलाकर रखें। 6 ग्राम दिन में 2 बार पानी से लें।

❑ संगजराहत 2 तोला एवं माइन छोटी 2 तोला—इनको कूट-छानकर चूर्ण बना लें और सुबह-शाम 6 माशा गाय के दूध के साथ प्रयोग करें।

मासिकस्राव की अधिकता

अधिक मात्रा में या अधिक समय तक स्राव होते रहने से शरीर कमज़ोर हो जाता है। नाड़ी तेज चलती है। प्यास बढ़ जाती है तथा चेहरा पीला पड़ जाता है। कभी-कभी स्राव की अधिकता के कारण स्त्री निढाल होकर बेजान-सी हो जाती है। क़ब्ज़ रहने लगता है। भूख नहीं लगती। पैरों पर सूजन-सी आ जाती है। चक्कर आने लगते हैं। यह रोग संभोग की अधिकता से पैदा होता है। गर्भ के गिर जाने या झुक जाने और बार-बार गर्भ के गिरते रहने से भी यह रोग हो जाता है। इसका एक कारण गर्भ का वरम भी है।

नुस्ख़े

❑ शीरा उनाब 5 दाने, लुआब बेदाना 2 माशा, शीरा तुख्मकाहू 3 माशा, शीरा सुख्म तरबूज़ 2 माशा, शीरा तुख्म खरफा सियाह 3 माशा—इन सबको पानी में पीस-छानकर शर्बत नीलोफर 2 तोला मिलाकर पिएं। इसे सात दिन तक नित्य इस्तेमाल करें।

❑ 22 ग्राम अनार की छाल को एक पाव पानी में इतना पकाएं कि पानी आधा रह जाए। अब इसे निथार और ठंडा करके रोज़ाना सुबह लें। आराम हो जाने पर बंद कर दें।

❑ गेरु और संगजराहत—दोनों को 30–30 ग्राम की मात्रा में मिलाकर बारीक चूर्ण बना लें। इसे 6 ग्राम सुबह-शाम सेवन करें।

❑ खरफा के बीज 3 ग्राम, काहू के बीज 3 ग्राम, बारतंग के बीज 3 ग्राम—इन सबको थोड़े से पानी में उबालकर छान लें और रोज़ाना दो बार प्रयोग करें। यह एक दिन की खुराक है।

❑ 25 ग्राम मुल्तानी मिट्टी को आधा सेर पानी में 2 घंटे भिगोए रखें। फिर उसे छानकर एक बोतल में रख लें। रोज़ाना आधा पाव चार बार प्रयोग करें अथवा मुल्तानी मिट्टी में थोड़ा-सा पानी मिलाकर लेप बना लें। इस लेप को पेड़ू पर लगाएं।

❑ बड़ की दाढ़ी 3 ग्राम, रेशा ख़तमी 3 ग्राम, बीज अंजबार 3 ग्राम एवं हब्बे आलास 3 ग्राम को आधा सेर पानी में उबालें। पानी आधा रह जाने पर उसे छान लें। इसे दिन में दो बार लें।

मासिकस्राव का रुकना

मासिकस्राव अर्थात् माहवारी का समय प्रायः हर महीने आता है। महीने में कुछ विशेष दिन इसके लिए नियत हैं। इन दिनों में स्त्री को रक्त आता है। यदि स्त्री गर्भवती हो जाती है तो महीने का रक्त आना बंद हो जाता है और यदि गर्भवती न हुई हो, तो भी किन्हीं कारणों से रक्त का आना बंद हो सकता है। ख़ून की कमी, सर्दी का लगना, फेफड़ा, हृत्पिंड, जरायु-दोष, शोक, दुःख, प्रबल मानसिक उद्वेग या उत्तेजना आदि कारणों से भी यह रोग पैदा हो जाता है। इसके रुकने से सिरदर्द, मिचली, पेटदर्द, अकड़न, प्रलाप और हिस्टीरिया आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इसका तुरंत इलाज होना ज़रूरी है।

नुस्ख़े

❑ अमलतास का छिलका 12 ग्राम, मजीठ 4 ग्राम, अबहल 4 ग्राम, शक्कर

4 ग्राम लें। शक्कर को छोड़कर तीनों दवाओं को 1 पाव पानी में पकाएं। जब पानी आधा रह जाए तो छानकर उसमें शक्कर मिला दें। इसे दिन में 2 बार पिएं। कुछ दिनों के सेवन से ही मासिकस्राव खुल जाएगा।

❑ बिनौले की गिरी व शक्कर बराबर वज़न में लेकर सफ़ूफ़ बना लें। इसे 6 ग्राम दिन में 2 बार लें।

❑ अमलतास का छिलका और बांस के पत्ते 12–12 ग्राम लें। दोनों को पानी में इतना जोश दें कि पानी आधा रह जाए। फिर उसे छान लें। इसमें 25 ग्राम गुड़ घोलें और सुबह के समय प्रयोग करें।

❑ गोखरू, ककड़ी के बीज, खीरे के बीज, परसियाऊशां, कासनी के बीज एवं अबहल—प्रत्येक 4 ग्राम लें। इन्हें 1 पाव पानी में अच्छी तरह पकाएं। पानी आधा रह जाने पर उतारकर छान लें। इसे दिन में 2 बार प्रयोग करें।

❑ गोकुल, सोया-बीज, सेंधा नमक और मुनक्का—इन सबको बराबर वज़न में लेकर, पहली तीन दवाओं को पीसकर चूर्ण कर लें। फिर मुनक्के खोलकर उनमें इस चूर्ण को भर दें। रात को सोते समय एक मुनक्का शर्मगाह (योनि) में रखें और सुबह उसे निकाल दें। इससे बंद मासिकस्राव खुल जाता है।

मासिकस्राव दर्द के साथ आना

मासिक धर्म से पहले पेड़ू, कमर, कूल्हों और रानों में सख़्त दर्द होता है। कभी-कभी जी घबराता है और उल्टियां भी हो जाती हैं। महीने का रक्त बहुत कम मात्रा में आता है। इसका इलाज वक़्त रहते किया जाना चाहिए।

नुस्ख़े

❑ हींग 5 आना भर और गुड़ 6 आना भर लें। हींग में गुड़ मिलाकर 5 से 7 दिनों तक रोज़ाना सुबह के वक़्त पिएं। रक्त का वेग बढ़ जाएगा और दर्द का होना बंद हो जाएगा।

❑ मरकरी 6 ग्राम एवं अबहल 6 ग्राम लें। दोनों को 1 कप पानी में उबालकर छान लें (पानी पकते-पकते आधा कप रह जाना चाहिए)। मासिक धर्म बंद हो जाने के बाद 7 से 10 दिन तक रोज़ाना सुबह के वक़्त इसे पिएं।

❑ रीवंद चीनी 10 ग्राम बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। माहवारी बंद होने के बाद इसे 1 से 2 हफ़्ते तक पानी के साथ दिन में दो बार सेवन करें।

शर्मगाह की ख़ारिश

योनि (शर्मगाह) में ख़ारिश (खुजली) से स्त्री को बड़ी परेशानी होती है।

इससे उसे पीड़ा व जलन होती है। मूत्र-त्याग करते समय भी जलन महसूस होती है और बड़ी बेचैनी रहती है।

नुस्ख़े

❑ राल, सिंदूर, कपूर, सफ़ेदा काशगरी, सफ़ेद कत्था, कमीला, गिल अरमनी, रसवत और धमासा—प्रत्येक 3 माशा, मुरदासंग, नीलाथोथा (भुना हुआ)—प्रत्येक 2 माशा लें। इन सबको महीन पीसकर गाय के घी में मिलाकर मरहम बनाएं। इसे लगाने से योनि की खुजली दूर हो जाती है।

❑ मुंडी 4 ग्राम, उन्नाब 5 नग, शाहतरा 4 ग्राम, सफ़ेद चंदन का बुरादा 3 ग्राम लें। इन सबको एक कटोरी पानी में रात भर भिगोकर सुबह कपड़े से छानकर, शक्कर (आवश्यकतानुसार) मिलाकर मीठा कर लें और पी जाएं।

❑ 125 ग्राम नीम के पत्ते (ताज़ा) 1 सेर पानी में अच्छी तरह उबालें और छान लें। फिर इस पानी में 3 ग्राम भुना हुआ सुहागा मिलाकर ख़ारिश की जगह सुबह-शाम धोएं। इससे ख़ारिश (खुजली) दूर होगी।

❑ कपूर 3 ग्राम एवं गुलाब का अर्क़ आवश्यतानुसार लें। कपूर को गुलाब अर्क़ में पीसकर, एक साफ़ सूती कपड़े का टुकड़ा उसमें भिगोएं और ख़ारिश की जगह रखते रहें। जितनी बार ज़रूरत हो, इस अमल को दोहराती रहें।

गर्भ की सूजन

इस रोग में स्त्री के पेट और कमर में दर्द रहता है। मासिकस्राव तथा समागम के समय यह दर्द ज़्यादा हो जाता है। इसके अलावा पिंडलियों में भी दर्द रहता है। इस सूजन के कारण श्वेत प्रदर का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। कभी-कभी मल-मूत्र त्याग करते समय भयानक दर्द होता है।

नुस्ख़े

❑ कनौचा, अलसी व ख़तमी के बीज, मेथी और इसबगोल—प्रत्येक 1 तोला लें। इनको रात्रि में गुनगुने पानी में भिगोकर रख दें। सवेरे गाढ़ा लुआब छान लें। फिर 2 तोला मुरदासंग बारीक पीसकर 4 तोला जैतून के तेल में डालकर मंदी आंच पर पकाएं और किसी चीज़ से हिलाते रहें, जिससे मुरदासंग नीचे न बैठने पाए। जब तेल का रंग काला पड़ जाए, तो आंच पर से उतारकर उक्त लुआब इसमें मिलाएं। अब उसे फिर मंदी आंच पर इतना पकाएं कि वह मरहम की तरह गाढ़ा हो जाए। 1 तोला यह मरहम मुर्ग़ी के एक अंडे की सफ़ेदी, हरे मकोय का अर्क़ 1 तोला और गुलरोग़न 1 तोला मिलाकर किसी दाई या नर्स से गर्भाशय के भीतर स्थापन कराएं। यह गर्भाशय की सूजन के साथ अनेक व्याधियों में कारगर होगा।

❑ भैंस और ऊंटनी का दूध एवं एरण्ड का तेल—प्रत्येक 1 सेर लें। सबको मिलाकर आग पर रखें। जब यह गाढ़ा हो जाए, तो आग से उतारकर सोंठ और देशी अजवायन—प्रत्येक 1 तोला कूट-पीस एवं कपड़छन करके उसमें मिलाएं। थोड़ा-सा लेप सुहाता गरम नाभि के नीचे पेड़ू पर मलकर फलालेन का टुकड़ा बांधें। यह गर्भाशय की कठोरता और सूजन को उतारता है।

साधारण नुस्ख़े

❑ सौंफ़, मकोय ख़ुश्क, गोखरू, खरबूज़े के बीज—प्रत्येक 6 ग्राम लें। इन्हें पानी में जोश देकर छान लें और रोज़ाना सुबह पिएं।

❑ मकोय और कासनी के ताज़ा पत्ते जरूरत भर लेकर कुचलें। फिर पानी में थोड़ा-सा नौसादर डालकर, उसमें कुचले हुए पत्ते मिला दें। इसे रोज़ सुबह प्रयोग करें।

रहम का बाहर निकलना

रहम यानी बच्चेदानी कभी नीचे होकर बाहर की ओर निकल आती है। इससे स्त्री के पेड़ू, जांघों व पिंडलियों में भारी तकलीफ़ होती है। कभी-कभी तो मल-मूत्र तक बंद हो जाता है। स्त्री अन्दर से किसी नरम व गोल चीज़ का उतर आना महसूस करती है। इसके शुरू में निम्नलिखित नुस्ख़ों को प्रयोग करके छुटकारा पाया जा सकता है।

नुस्ख़े

❑ आधा चम्मच पिसी हुई हल्दी लेकर रोग़न गुल में अच्छी तरह मिलाएं। फिर उसमें थोड़ी-सी रूई सानकर, सोते समय रहम के अन्दर रख लें तथा सुबह निकालकर फेंक दें। कुछ दिनों के प्रयोग से ही आराम हो जाएगा।

❑ माजू 5 ग्राम, फिटकिरी 5 ग्राम, कत्था 5 ग्राम, गुले फोफिल 5 ग्राम—इन सबको बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। फिर इस चूर्ण को थोड़ी-सी शराब में मिला लें। सोते समय रूई का एक फाहा उसमें अच्छी तरह भिगोकर योनि में रखें और सुबह निकाल दें। कुछ दिनों तक ऐसा करने से लाभ हो जाएगा।

प्रसवकालीन रक्तस्राव

प्रसव के बाद ज़्यादा ख़ून निकलने पर स्त्री के लिए बड़ी चिंता की बात हो जाती है। प्रसव के समय ख़ून कम निकले, इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

नुस्ख़ा

❑ मेहंदी के पत्ते 2 भाग और पाखानभेद (जितियाना) 1 भाग—दोनों को

कूट-छानकर पानी में आटे की तरह गूंधें। पीड़ित स्त्री की हथेली और तलवों पर इसका लेप करके एक प्रहर उसे धूप में बिठाएं। यह प्रसवकालीन रक्तस्राव बंद करने के लिए अत्यंत गुणकारी है।

बन्ध्यत्व

बन्ध्यत्व के मुख्य दो कारण हैं। एक तो जन्मजात बन्ध्यत्व और दूसरा किसी विकार के कारण। अर्थात् शारीरिक दुर्बलता, जरायु में अर्बुद, जरायु का टेढ़ा हो जाना, योनि-संकीर्णता, बार-बार गर्भपात होना, शरीर में चर्बी का बढ़ जाना, ऋतु (माहवारी) में गड़बड़ी, प्रदर रोग, समागम की अधिकता, जननेंद्रिय विकार आदि कारणों से इस रोग की उत्पत्ति हो जाती है।

नुस्खे

❑ गुलाबांस, आतरीलाल एवं हाथीदांत का बुरादा—प्रत्येक 6 माशा लें। इनको बारीक पीसकर मिलाएं और 42 भागों में बांटकर रखें। इसमें से एक भाग दूध में डालकर ऋतुस्नान के बाद स्त्री लगातार 30 दिन तक सेवन करे। यह बन्ध्यत्व निवारक है।

❑ अहिफेन, केसर, जायफल—प्रत्येक 1 माशा, खताई कस्तूरी 2 रत्ती, भंग तेल 2 माशा, सुपारी 3 नग एवं लौंग 4 नग लें। इनको कूट-छानकर आवश्यकतानुसार गुड़ मिलाएं और जंगली बेर के समान गोलियां बना लें। ऋतुस्नान के बाद उसी दिन से आधी या 1 गोली प्रतिदिन 3 दिन तक खिलाएं। इसके सेवन से बन्ध्या स्त्री भी गर्भवती हो जाती है।

विशेष—स्त्री की आयु 20-22 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। बहुत अधेड़ स्त्रियों पर यह औषधि प्रभावी नहीं होगी।

❑ तेजपात, नागरमोथा, सूखा पुदीना, पीपल, ख़ुरासानी अजवायन, तज, छोटी इलायची—प्रत्येक 3.75 माशा, कपूर 2.75 माशा, जरनब (तालीसपत्र), बंसलोचन, जावित्री, सफ़ेद चंदन, काली मिर्च, जायफल—प्रत्येक 5.25 माशा, सफ़ेद जीरा 7 माशा, सूखा सिंघाड़ा, सतावर, नागकेसर—प्रत्येक 3.75 तोला, खिरनी के बीज 4 तोला 1 माशा, बादाम की गिरी, पिस्ता की गिरी, बीज निकाला हुआ मुनक्का—प्रत्येक 5 तोला, सुपारी 1 सेर, शहद 1 सेर, गाय का दूध आधा सेर तथा गाय का घी आधा सेर लें। पहले मुनक्कों को सिल पर पीसें। फिर सुपारी को टुकड़े-टुकड़े कर दूध में डालें और उसे मंदी आग पर रखकर पकाएं। जब दूध उसमें शोषित हो जाए, तो उन्हें सुखाकर पीस लें। अब चीनी तथा शहद के अलावा

लें। इसे 1 से 2 तोला तक गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह बाजीकर है। स्त्री और पुरुष दोनों के बन्ध्यत्व दोष को दूर करके उन्हें संतानोत्पत्ति के योग्य बनाता है। यह यकृत की दुर्बलता में भी लाभदायक है। यह पाचन-शक्ति की वृद्धि करता है, गर्भाशय को शक्ति देता है तथा उसे संकुचित करता है। यह प्रसूत रोग के लिए भी गुणकारी है।

गर्भस्राव और गर्भपात

यदि चौथे महीने तक गर्भ पतली अवस्था में होने से स्राव हो तो उसे 'गर्भस्राव' कहते हैं और पांचवें-छठे महीने पर्यन्त शरीर के बनने के बाद अगर गर्भ निकले तो उसे 'गर्भपात' कहते हैं। गर्भपात या गर्भस्राव के होने से रोगिणी (प्रसूता) की दशा शोचनीय हो जाती है। कभी-कभी मृत्यु भी संभावित होती है। गर्भपात होने के कारण हैं—जरायु के साथ गर्भ का अच्छी तरह संयोग न होना, गर्भावस्था में पति-सहवास, दीर्घकाल तक स्थायी प्रदरस्राव, गर्भस्थिति में कसे कपड़े पहनना, अधिक परिश्रम करना, रेलगाड़ी तथा अन्य सवारियों पर चढ़ना, दौड़-धूप करना, गिर पड़ना, भारी चीज़ उठाना, ज़ोर से रोटी बेलना, उंगली पर ज़ोर (भार) देकर खड़े होना, तेज़ दवाओं का सेवन करना, योनिशूल, अधिक भय तथा बहुत ज़्यादा चिंता करना आदि।

नुस्खे

❑ कल्बुलहज्र असली (असली पत्थर की करेजी) 1 रत्ती और बंसलोचन 1 माशा लें। दोनों को अलग-अलग पीसकर मिलाएं। यह एक मात्रा है। इसे 1 या 2 दाना बीज निकाले हुए मुनक्का में रखकर गर्भिणी स्त्री को खिला दें। इसकी केवल एक ही मात्रा सेवन करने से गर्भपात होने की आशंका दूर हो जाती है। जिन स्त्रियों को गर्भपात हो जाता हो, उन्हें इस दवा का सेवन अवश्य करना चाहिए। इसे महीने में सिर्फ़ एक बार खिला देना ही काफ़ी है।

❑ संगज़राहत 9 माशा, बंसलोचन 6 माशा तथा छोटी इलायची के बीज 3 माशा—इन सबको महीन पीसकर तोलें। जितना यह चूर्ण हो, उतने ही वज़न की इसमें चीनी मिलाकर बराबर की तीन पुड़ियों में बांध लें। 1 माशा हरेक तीन घंटे के बाद गाय के दूध की लस्सी के साथ स्त्री को खिलाएं। यह गर्भपात निवारक है।

❑ नुशारएआज (हाथी दांत का बुरादा), सुपारी, गुलनार, कैंची से कतरा हुआ अब्रेशम, सावरशृंग अंतर्धूम दग्ध—प्रत्येक 1 माशा, अबीध मोती, प्रवाल शाखा, प्रवालमूल, सफ़ेद यशव, सूखा धनिया, अगर, मस्तग़ी, नरकचूर (जुरंबाद), कबाबचीनी, गुलाब के फूल और गिल अरमनी—प्रत्येक 2 माशा लें। इन सबको

कूट-छानकर तिगुने असली शहद में मिलाकर माजून बना लें। बाद में केसरी कपूर 4 रत्ती मिला दें। इसे 4 माशा की मात्रा में ताज़ा पानी के साथ लें। यह गर्भपात निवारक और गर्भसंरक्षक है।

विशेष—इस योग में अगर गिल अरमनी न डालें तो झावुक शर्करा (गजअंगबीन) 2.50 तोला और अमलकी के शीरा की चाशनी बनाकर दवाओं को कूट-छानकर मिला दें। फिर ज़रूरत के मुताबिक कपूर मिलाकर माजून तैयार करें। गर्भधारण का निश्चय हो जाने के दिन से इस माजून का सेवन प्रारंभ करें, जिसे प्रसवकाल पर्यन्त जारी रखें। प्रतिदिन सवेरे 5 माशा यह माजून जल से खाएं। जिन स्त्रियों को गर्भपात हो जाता है, उनके लिए यह माजून बहुत गुणदायक है।

❑❑

17

स्त्रियों एवं पुरुषों के गुप्त रोग

कुछ गुप्त रोग ऐसे भी होते हैं, जो स्त्री-पुरुष दोनों को होते हैं। इन रोगों में आतशक (उपदंश) तथा सूजाक का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये रोग स्त्री-पुरुष के समागम से दूसरे व्यक्ति को हो जाता है। अत: ऐसे रोग होने पर तत्काल उपचार कराना चाहिए, नहीं तो यह आपके जीवन साथी को भी भयंकर रूप से पीड़ित कर देगा।

आतशक

आतशक को फिरंग, गरमी और उपदंश आदि नामों से भी जाना जाता है। अंग्रेज़ी में इसे सिफलिस कहते हैं। यह रोग स्त्री-पुरुष के प्रसंग (मिलन) से पैदा होता है। उपदंश (आतशक) रोग वाले पुरुष के साथ समागम पर स्त्री के योनि-कपाट में तथा इस रोग से पीड़ित स्त्री से सहवास करने पर पुरुष के लिंगेन्द्रिय के पिछले भाग में जहां जोड़ रहता है, ज़ख़्म या घाव हो जाता है। कभी-कभी यह मूत्रनली के भीतर, स्तन, होंठादि में भी हो जाता है।

नुस्ख़े

❑ नीलाथोथा धोया हुआ 6 तोला, शिंगरफ 3 तोला तथा गर्द चोबचीनी 1 तोला 9 माशा—इन सबको कूट लें। फिर मुर्ग़ी के 1 अंडे को अग्नि की राख में भूनकर ज़र्दी निकालें और सभी द्रव्यों को इस ज़र्दी में घोट-पीसकर मरहम तैयार करें। इस मरहम को ज़ख़्म या घाव पर लगाने से आतशक से जल्दी ही छुटकारा मिल जाएगा।

❑ रसकपूर 3 माशा, जमालगोटे की गिरी 10 नग; मुरदासंग, गुलाबी कत्था—प्रत्येक 1.50 माशा लें। जमालगोटे को छोड़कर सबको खरल में बारीक कर लें। फिर जमालगोटे को खरल करके मिलाएं। उसके बाद इन्हें मुर्गी के 1 अंडे में सूराख करके भर दें और अंडे को अच्छी तरह हिलाएं ताकि जर्दी के साथ सब मिल जाए। फिर अंडे के सूराख पर 2 उंगल मोटा आटे का लेप करके उसे भूभल में गाड़ दें। जब आटा लाल हो जाए, तो अंडे को भूभल से निकालें और खरल करके चने के बराबर गोलियां बना लें। एक-एक गोली सुबह-शाम गाय के घी या मलाई में लपेटकर खाएं। यह आतशक की श्रेष्ठ औषधि है।

सूजाक

आतशक की भांति सूजाक भी स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न होता है। पुरुषों की मूत्रनली के एक इंच पीछे एक गड्ढा होता है, जहां इस रोग की शुरुआत होती है। यहां से यह रोग धीरे-धीरे बढ़कर मूत्रनली, मूत्राशय और अंडकोश तक फैल जाता है। स्त्रियों की योनि के पास वाले यंत्र तथा मूत्रनली, मूत्राशय, जरायु आदि पहले रोगाक्रांत हो जाते हैं। इसकी पीब शरीर के किसी भी स्थान की श्लैष्मिक झिल्ली में लगकर उस स्थान को भी रोगग्रस्त कर देती है।

रोग की प्रथमावस्था में पहले मूत्रनली के मुंह पर और उसके अंदर थोड़ी सुरसुरी होती है, खुजली आती है और गरमी मालूम पड़ती है। मूत्रयंत्र लाल-सुर्ख हो जाता है, सूजन आ जाती है एवं मूत्रमार्ग का छिद्र पीब जैसे रक्त में चिपक जाता है। यह अवस्था प्राय: एक सप्ताह से अधिक नहीं रहती। द्वितीयावस्था में मूत्र-त्याग करने में बहुत तकलीफ़ होती है। मूत्र बूंद-बूंद करके कष्ट के साथ निकलता है। यह अवस्था 7 से 11 दिन तक रहती है। तृतीयावस्था में सूजन, जलन, कड़क कुछ भी नहीं रहती। स्राव तरल, स्वच्छ और अल्प होता है। पुराना रोग हो जाने पर मूत्र के पहले धार में पीब निकलती है। इस रोग में पुरुषों को स्त्रियों से अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

नुस्ख़े

❑ 5 तोला सूखा धनिया रात को पानी में भिगो दें। सवेरे उसका काढ़ा बनाकर छान लें। ठंडा होने पर 3 तोला ब्रांडी और 6 माशा चंदन का तेल मिलाकर रखें। इसे दिन में तीन बार एक-एक तोले की मात्रा में लें। इससे सूजाक में तुरन्त

❑ बंसलोचन 2 तोला, चंदन का इत्र 2 तोला एवं शुद्ध कस्तूरी 1.50 माशा लें। इन सबको खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाएं। इसके बाद चौड़े मुंह का एक घड़ा लें। उसे पानी से भरकर बारीक कपड़ा उसके मुंह पर बांध दें और कपड़े पर उक्त गोलियां रखकर रात भर उसे ओस में रखा रहने दें। सवेरे उसमें से एक गोली खाकर घड़े का पानी पिएं। दिन भर निराहार रहकर एक-एक घंटे के अंतर से गोलियां खाकर पानी पीते रहें। गोलियां रात तक ख़त्म हो जानी चाहिए। जब तक पूरा आराम न हो जाए, यह क्रिया करते रहें।

❑ मेहंदी मे ताज़ा पत्ते और बकायन के नव पल्लव आवश्यकतानुसार लेकर, दोनों को पीसकर लुगदी बनाएं। फिर दो भारी उपलों के भीतर उस लुगदी को रख दें। बीच में बंग के 2 तोला जौ के समान छोटे-छोटे टुकड़े कर रखें। फिर उपलों को जलाएं। यथाप्रमाण भस्म प्राप्त होगा। इस भस्म में बंसलोचन व छोटी इलायची—प्रत्येक 1 माशा बारीक पीसकर मिलाएं और जंगली बेर के समान गोलियां बना लें। एक-एक गोली रोज़ सुबह-शाम गाय के दूध की लस्सी के साथ सेवन करें। इससे कष्टकारी और घातक सूजाक जल्दी दूर हो जाता है।

❑ सफ़ेद राल 12 ग्राम, शक्कर 12 ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। 2 ग्राम चूर्ण पानी के साथ दिन में दो बार लें। इससे सूजाक में जल्दी आराम हो जाएगा।

❑ 4 ग्राम कबाब चीनी को बारीक पीसकर चूर्ण बनाएं और 1 प्याले छाछ में छिड़क दें। प्याले को एक कपड़े से ढांककर रात भर ओस में रखा रहने दें और सुबह उसे पी लें। सूजाक में आराम मिलेगा।

❑ कुंदुर, संगज़राहत, सफ़ेद राल और शक्कर—प्रत्येक 30 ग्राम लेकर, सबको बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। 6 ग्राम चूर्ण को दूध के साथ दिन में 2 बार प्रयोग करें। सूजाक ठीक हो जाएगा।

❑ गुडूची सत्व, शुद्ध शिलाजीत, छोटी इलायची, पाखानभेद, छिली हुई मुलेठी, तालमख़ाना, बंसलोचन एवं बंग भस्म—प्रत्येक का समभाग लें। अब उन सबके भार के बराबर मिश्री लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। 9 माशा से 1 तोला यह चूर्ण प्रतिदिन जल या दूध के साथ सेवन करने से सूजाक रोग में आराम हो जाता है।

❑❑

18

प्राचीन नुस्ख़ों की औषधियां

नुस्ख़ों के आधार पर औषधियां तैयार करना अगर मुश्किल नहीं तो आसान भी नहीं है। फिर बहुत से लोगों के पास इतना वक़्त भी नहीं होता कि वे औषधियां तैयार कर सकें। बहुत से लोग ऐसी ज़हमत उठाने को तैयार ही नहीं होते कि कौन अत्तारों आदि से सामान लाए और उसे घोटता-पीसता रहे। इसलिए हम उन औषधियों का विवरण यहां दे रहे हैं जो तैयारशुदा बाज़ार में मिलती हैं, जिन्हें ख़रीदना और इस्तेमाल करना भर होता है।

मस्तिष्क तथा पुट्ठों के रोग

इतरीफ़ल ज़मानी

यह नज़ला-ज़ुकाम, सिर दर्द, सिर चकराना, आधासीसी का दर्द, शूल और उन्माद में लाभप्रद है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम से 10 ग्राम तक, आयु के अनुसार।

सेवन विधि—रात को सोते समय 250 मि.ली. दूध या ताज़े पानी के साथ सेवन करें।

कुर्स सुदा

सिर दर्द चाहे किसी कारणवश हो, कुर्स के इस्तेमाल से दूर हो जाता है।

सेवन मात्रा—1 कुर्स, ज़रूरत के समय।

सेवन विधि—पानी, चाय या दूध से सेवन करें।

ख़मीरा गावज़बान अंबरी

[illegible] शक्ति देता है। हृदय की घबराहट और बुरे विचारों

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—प्रात:काल बिना जलपान किए दूध से खाएं।

रोग़न ख़शख़श

सिर पर लगाने से यह निद्रा लाता है और गरमी से पैदा होने वाले सिर दर्द को दूर करता है।

सेवन विधि—सिर पर लगाएं, नाक और कान में बूंद-बूंद टपकाएं।

हब्बे सरा

यह मिरगी रोग में लाभदायक है। बच्चों या युवकों—दोनों के लिए समान लाभकारी है।

सेवन मात्रा—बड़ों के लिए 3 गोलियां, बच्चों को 1 गोली।

सेवन विधि—बड़ों को पानी या दूध के साथ दें। बच्चों को 1 चम्मच दूध में घोलकर पिलाएं।

अनकुरुयाए कबीर

यह अधरंग, लक़वा, कंपकंपी, मिरगी, भूल, गठिया और दमा तथा कफ़ रोगों में लाभदायक है। इसके अलावा पाचन-शक्ति को बढ़ाती और वायु निकालती है।

सेवन मात्रा—4 ग्राम।

सेवन विधि—रात को सोते समय 250 मि.ली. दूध से खाएं।

माजून सीर अलवी खानी

फ़ालिज, लक़वा, गठिया, वात रक्त, गृध्रसी (सायटिका) आदि पुट्ठों व कफ़ रोगों में लाभदायक है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

के दौरे शीघ्र दूर हो जाते हैं। उन्माद, जो हिस्टीरिया के कारण हो, वह भी अच्छा हो जाता है। यह मस्तिष्क और पुट्ठों को शांति देती है, निद्रा लाती है तथा हाई ब्लड प्रेशर में लाभ पहुंचाती है।

सेवन मात्रा—1 टिकिया।

सेवन विधि—रात को सोते समय खाकर ऊपर से एक पाव दूध पी लें।

छाती के रोग

कुश्ता क़रनुल अय्यिल

यह निमोनिया, पसली का दर्द एवं छाती के दर्द के साथ-साथ कफ़ और खांसी में भी लाभ देता है।

सेवन मात्रा—125 मि.ग्रा. या 2 टिकिया।

सेवन विधि—यह कुश्ता प्रातःकाल लऊक सपिस्तां ख्यार शंबरी 10 ग्राम में मिलाकर खाएं। इतनी ही मात्रा में शाम को भी प्रयोग करें।

इक़सीर सुआल

यह छाती पर जमे हुए कफ को निकालती और खांसी को आराम देती है।

सेवन विधि—1 टिकिया को तोड़कर, चूरा करके 10 ग्राम शहद में मिलाकर चाटें।

वखुरदमा

श्वास (दमा) में जब रोगी सांस के कारण बेचैन हो, इसके प्रयोग से सांस लेना ठीक हो जाता है।

सेवन विधि—दो-तीन दहकते हुए कोयलों पर वखुरदमा 1 चुटकी डालकर रोगी को इस धुएं में सांस लेने को कहें। जैसे ही धुआं सांस के साथ फेफड़ों में पहुंचेगा, सांस की तंगी दूर हो जाएगी।

हृदय रोग

अर्क़ बेद सादा

तो इस ख़मीरे के प्रयोग से वह अति शीघ्र दूर हो जाती है। सामान्य शारीरिक कमज़ोरी दूर करने में भी यह लाभदायक है।

सेवन मात्रा—3 से 5 ग्राम तक।

सेवन विधि—प्रात: तथा सायंकाल आवश्यकतानुसार खाएं।

नेत्र रोग

कोहलुल जवाहर

यह नेत्रों को शक्ति प्रदान करता है और उसे आयु के अंतिम समय तक क़ायम रखता है। नेत्रों को समस्त रोगों से बचाता है।

प्रयोग विधि—प्रात: तथा सायंकाल नेत्रों में सलाई द्वारा लगाएं।

श्याफ़ अबयज़

आंख दुखने में लाभदायक है। इससे आंखों की सुर्ख़ी व दर्द दूर हो जाता है।

प्रयोग विधि—श्याफ़ अबयज़ की दो-तीन बूंद अर्क़ गुलाब या ताज़ा पानी में घोलकर सलाई द्वारा आंखों में लगाएं।

वासलीकून कबीर

यह औषधि आंखों की लाली, धुंध, खुजली, ढलका, जाला, फूला, नाख़ूना और सुलाक़ के लिए लाभदायक है।

प्रयोग विधि—सुबह-शाम कांच की सलाई से आंखों में लगाएं।

श्याफ़ इक़सीर चश्म

यह रोहों (कुकरों) के लिए अति लाभदायक है।

प्रयोग विधि—इसे दो-तीन बूंद लेकर पानी में घोलें और उंगली द्वारा सलाई पर लगाकर आंखों में लगाएं।

कान के रोग

ज़मादे राहत

इससे कान का दर्द तुरंत दूर हो जाता है। शरीर के अन्य भागों के दर्द में भी काम आती है।

प्रयोग विधि—5 ग्राम लेकर कान के चारों ओर गुनगुना करके लगाएं।

मरहम काफ़ूर

यह कान की फुंसियों के लिए अति लाभदायक है।

प्रयोग विधि—नीम के पत्तों के जोशान्दे से कान को धोकर फुंसियों पर लगाएं।

रोग़न बादाम तल्ख़

यह बहरापन और ऊंचा सुनने की शिकायत दूर करता है। कान के दर्द को शांति देता है।

प्रयोग विधि—दो-दो बूंद गुनगुना सुहाता प्रातः तथा सायंकाल कान में टपकाएं।

नासिका रोग

रोग़न अनफ़

यह नाक की झिल्ली की सूजन और नाक की दुर्गन्ध दूर करता है।

प्रयोग विधि—इस तेल की तीन-चार बूंदें सुहाता गरम करके नाक में टपकाएं।

हूलास दाफ़े नज़ला

इसके प्रयोग से बंद नज़ला जारी हो जाता है और उसके कारण होने वाला सिर दर्द भी दूर हो जाता है। प्रयोग विधि औषधि सहित है।

गले के रोग

टॉनज़िल

यह लटके हुए कव्वे को ठीक हालत में लाता है। यदि गले आए हों, गले में दर्द और सूजन हो तो भी इससे लाभ होता है।

प्रयोग विधि—रूई की फुरेरी से गले में चारों ओर विशेषकर कव्वे पर लगाएं।

रुब्बे तूत सियाह

यह गले की सूजन और दर्द में लाभदायक है।

सेवन मात्रा—25 मि.ली.।

सेवन विधि—आवश्यकतानुसार गुनगुने पानी में मिलाकर पिएं।

कुलायी

यह मुख और जिह्वा के दानों-छालों के लिए प्रयोग की जाती है।

प्रयोग विधि—मुख के अंदर और जिह्वा पर रूई की फुरेरी से लगाएं।

आमाशय रोग

कुर्स तख़मीर

इससे आमाशय और अंतड़ियों की कमज़ोरी दूर होती है। पाचन की ख़राबी सुधरती है तथा रुकी हुई वायु ख़ारिज हो जाती है।

सेवन मात्रा/विधि—1 से 2 टिकिया तक, भोजन के पश्चात् दोनों समय लें।

जवारिश जालीनूस

यह आमाशय, यकृत, अंतड़ियों और मूत्राशय को शक्ति देती है। भोजन को पचाती एवं भूख बढ़ाती है। वायु-मार्ग को प्रशस्त करती है, मुंह की दुर्गन्ध दूर करती है और मूत्र की अधिकता को रोकती है। यह कास, खांसी और बवासीर में भी उपयोगी है। वृक्क तथा मूत्राशय में बार-बार पथरी होने की सूरत में इसके सेवन से पथरी का बनना बंद हो जाता है।

सेवन मात्रा—5 से 10 ग्राम तक।

सेवन विधि—भोजन के पश्चात् दोनों समय ताज़ा पानी से लें।

जवारिश कमूनी कबीर

आमाशय का दर्द तथा आंत्रशूल दूर करती है। वायु निकालने और भोजन पचाने में सहायता देती है।

सेवन मात्रा—5 से 10 ग्राम तक।

सेवन विधि—प्रातः या आवश्यकतानुसार भोजनोपरांत पानी से खाएं।

हब्बे तुर्श मुश्तही

ये गोलियां पाचन-क्रिया ठीक करती हैं, भोजन को पचाकर भूख बढ़ाती हैं तथा वायु को निकालती हैं।

सेवन मात्रा/विधि—2-2 गोलियां दोनों समय भोजन के पश्चात् खाएं।

सिकंजबीन नाना

मितली और वमन को रोकती है, पित्त की अधिकता को कम करती है और भोजन को पचाने में सहायता देती है।

सेवन मात्रा—25 मि.ली.।

सेवन विधि—अर्क पुदीना 125 मि.ली. में मिलाकर पिएं।

कुर्स कहरबा

यह रक्त का वमन रोकती है तथा फेफड़ों से रक्त आने में उपयोगी है।

सेवन मात्रा—3 टिकियां।

सेवन विधि—ये टिकियां शर्बत अंजबार 25 मि.ली. में मिलाकर चाटें।

सफूफ़ क़िन्नब

यह दस्तों को रोकता है, आमाशय को शक्ति देता है, भूख बढ़ाता है और वायु को निकालता है।

सेवन मात्रा—3 ग्राम।

सेवन विधि—यह सफूफ़ प्रातः तथा सायंकाल ताज़े पानी के साथ खाएं।

नपुंसकता

जौहर खुसिया

यदि वीर्य की कमी से नपुंसकता हो तो इसके सेवन से दूर हो जाती है। इसके अलावा यह औषधि पुट्ठों को शक्ति देती है तथा जानत्व उष्णता बढ़ाती है।

सेवन मात्रा—1 ग्राम।

सेवन विधि—यह औषधि सुबह 1 पाव दूध के साथ खाएं। यदि लबूब कबीर या माजून सालब 5 ग्राम मिलाकर खाएं और ऊपर से दूध पिएं तो अधिक लाभ होगा।

माजून शबाब आवर

नपुंसकता किसी भी कारणवश हो, इस माजून के सेवन से दूर हो जाती है। मस्तिष्क और पुट्ठों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है। यह रुकावट भी पैदा करता है। सामान्य शारीरिक कमज़ोरी दूर हो जाती है और पुंसत्व शक्ति बढ़ती है।

सेवन विधि—औषधि सहित है।

माजून असपन्द सोखतनी

इससे नपुंसकता दूर होती है। यह पुंसत्व के लिए पौष्टिक है। इंद्रिय में कठोरता उत्पन्न करती है।

सेवन मात्रा—5 से 10 ग्राम तक।

सेवन विधि—यह माजून प्रातः 1 पाव गरम दूध के साथ खाएं।

हब्बे जदवार

ये गोलियां नपुंसकता दूर करती हैं, पुंसत्व शक्ति को बढ़ाती और रुकावट पैदा करती हैं। प्रमेह, वीर्य का पतलापन तथा शीघ्रपतन में भी उपयोगी हैं।

सेवन मात्रा—1 या 2 गोली।

सेवन विधि—सुबह अथवा रात को 1 पाव गरम-मीठे दूध से खाएं।

प्रमेह तथा स्वप्नदोष

कुश्ता क़लई

शीघ्रपतन, प्रमेह तथा स्वप्नदोष की अधिकता दूर करता है। नपुंसकता में भी उपयोगी है।

सेवन मात्रा—यह कुश्ता माजून आरद खुरमा 10 ग्राम में रखकर खाएं और ऊपर से 1 पाव गाय का गरम दूध पिएं।

कुश्ता मुसल्लस

यह प्रमेह, शीघ्रपतन, धातुक्षीणता तथा स्वप्नदोष की अधिकता दूर करता है।

सेवन मात्रा—60 मि.ग्रा. या 2 टिकिया।

सेवन विधि—यह कुश्ता माजून आरद खुरमा 10 ग्राम में रखकर खाएं और ऊपर से 1 पाव दूध पिएं।

माजून शीर बढ़वाली

यह प्रमेह, शीघ्रपतन तथा धातुक्षीणता को दूर करता है। इसके सेवन से वीर्य की उत्पत्ति बढ़ती है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम से 10 ग्राम तक।

सेवन विधि—यह माजून प्रात:काल खाकर 1 पाव दूध पिएं।

सफ़ूफ़ मुअल्लिफ़

यह भी प्रमेह, शीघ्रपतन तथा स्वप्नदोष की अधिकता दूर करता है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—यह सफ़ूफ़ प्रात:काल दूध के साथ खाएं।

शीघ्रपतन

माजून मुक़व्वी वमुमसिक

यह माजून रुकावट पैदा करने तथा पुंसत्व शक्ति बढ़ाने में अति उपयोगी है।

सेवन मात्रा—डेढ़ (1.50) ग्राम।

सेवन विधि—संभोग से 2 घंटा पूर्व (जब भोजन पच चुका हो) दूध के साथ खाएं।

हब्बे निशात

यह गोलियां रुकावट तथा पुंसत्व शक्ति बढ़ाती हैं। इनके लगातार सेवन से वीर्य का पतलापन एवं शीघ्रपतन की शिकायत दूर हो जाती है।

सेवन मात्रा—2 गोलियां।

सेवन विधि—भोजन पचने के पश्चात् और संभोग से 2 घंटे पहले 1 पाव दूध के साथ लें।

हब्बे मुमसिक अंबरी

ये गोलियां उत्तम श्रेणी की रुकावट पैदा करती हैं, शीघ्रपतन दूर करती हैं तथा शरीर को शक्ति प्रदान करती हैं।

सेवन मात्रा—1 गोली।

सेवन विधि—संभोग से 2 घंटा पहले एक पाव दूध के साथ खाएं।

इंद्रिय दुर्बलता

तिलाए अलमास

यदि हस्तमैथुन और अन्य कुकर्मों के कारण इंद्रिय में दुर्बलता (कमज़ोरी), टेढ़ापन एवं ढीलापन आ जाए तो इस तिले के प्रयोग से यह त्रुटियां दूर हो जाती हैं।

प्रयोग विधि—यह तिला गोलियों के रूप में है। 1 गोली थोड़े से पानी में घिसकर, इंद्रिय की पीठ पर और दाएं-बाएं भाग में सीवन तथा सुपारी को छोड़कर लगाएं। ऊपर से पान बांधें। यदि इसके प्रयोग से दाने निकल आएं या खुरेंच उत्पन्न हो जाएं तो तिले को लगाना रोककर रोग़न चंबेली लगाएं। जब दाने अच्छे हो जाएं तो फिर यही तिला प्रयोग करें।

तिला मुक़व्वी ख़ास

संभोगाधिक्य, हस्तमैथुन तथा अन्य कुकर्मों के कारण इंद्रिय में विकार (इंद्रिय का ढीलापन, टेढ़ापन, कमज़ोरी आदि) उत्पन्न हो जाते हैं जिसे यह तिला दूर करने में पूर्णत: सक्षम है। इसके प्रयोग से इंद्रिय की नसों तथा पुट्ठों में नई शक्ति उत्पन्न हो जाती है। रक्त का बहाव तेज़ होने की वजह से इंद्रिय का आकार बढ़कर उसमें कठोरता आ जाती है।

प्रयोग विधि—औषधि सहित है।

गर्भाशय की सूजन

ज़मादे शीर शुतर

यह गर्भाशय की सूजन तथा कठोरता दूर करके नसों का दर्द ठीक करता है।

प्रयोग विधि—इसे नाभि के नीचे गुनगुना करके लगाएं तथा ऊपर से एरंड का पत्ता गरम करके बांधें।

प्रयोग विधि—औषधि सहित है।

श्वेत प्रदर

कुर्स सैलान जदीद

यह श्वेत प्रदर को दूर करने में अति प्रभावकारी है। इससे गर्भाशय को शक्ति भी मिलती है।

सेवन मात्रा—1 टिकिया।

सेवन विधि—यह टिकिया प्रातः तथा सायकाल एक पाव दूध स खाए।

रक्त प्रदर

सफूफ़ हाबिस

यदि रक्त प्रदर को रोकता है और मासिक धर्म की अनियमितता दूर करता है। यह पुरुषों के प्रमेह तथा स्त्रियों के श्वेत प्रदर में भी उपयोगी है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—1 पाव दूध या ताज़े पानी से खाएं।

गर्भ स्थिरता

दवाए अबयज़

यदि गर्भाशय की कमज़ोरी से गर्भ स्थापित न होता हो तो यह औषधि गर्भ स्थापना की शक्ति उत्पन्न करती है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—यह औषधि माजून हमल अंबरी अथवा माजून सुपारी पाक 5 ग्राम में मिलाकर दूध से खाएं।

हब्बे हमल

जिन स्त्रियों को मासिक धर्म का रक्त नियमानुसार आता हो, किन्तु किसी भीतरी विकार के कारण गर्भ-स्थापना न होती हो तो इन गोलियों के सेवन से यह ख़राबी दूर होकर गर्भ स्थापित हो जाता है।

सेवन मात्रा—1 गोली।

सेवन विधि—मासिक धर्म के दिनों से निबटने के पश्चात् प्रातः तथा सायंकाल यह गोली 250 मि.ली. दूध के साथ खाएं। तीन दिन खाने के पश्चात् चौथे दिन संभोग करें। इसी प्रकार दूसरे-तीसरे मास भी सेवन करें।

गर्भपात

माजून निशारा आजवाली

जिन स्त्रियों को तीसरे-चौथे मास गर्भपात हो जाता है, इस माजून के सेवन से उनका गर्भ सुरक्षित रहता है और ठीक समय पर स्वस्थ बच्चा पैदा होता है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—यह माजून प्रातःकाल 1 पाव दूध से खाएं।

मोटापा

सफ़ूफ़ मोहज़्ज़िल

यह मोटापे को दूर करता है। कुछ दिनों तक लगातार सेवन करने से धीरे-धीरे वज़न कम होकर शरीर ठीक अवस्था में आ जाता है।

सेवन मात्रा—5 ग्राम।

सेवन विधि—प्रातः तथा सायंकाल अर्क़ जीरा 60 मि.ली. या पानी के साथ खाएं।

माजून मोहज़्ज़िल

यह मोटापे को दूर करने में बहुत उपयोगी है। कुछ दिनों तक लगातार प्रयोग करने से शरीर ठीक अवस्था में आ जाता है।

सेवन मात्रा—10 ग्राम।

सेवन विधि—यह माजून खाकर ऊपर से अर्क़ जीरा 75 मि.ली. पिएं।

❑ ❑ ❑